पार्टनर

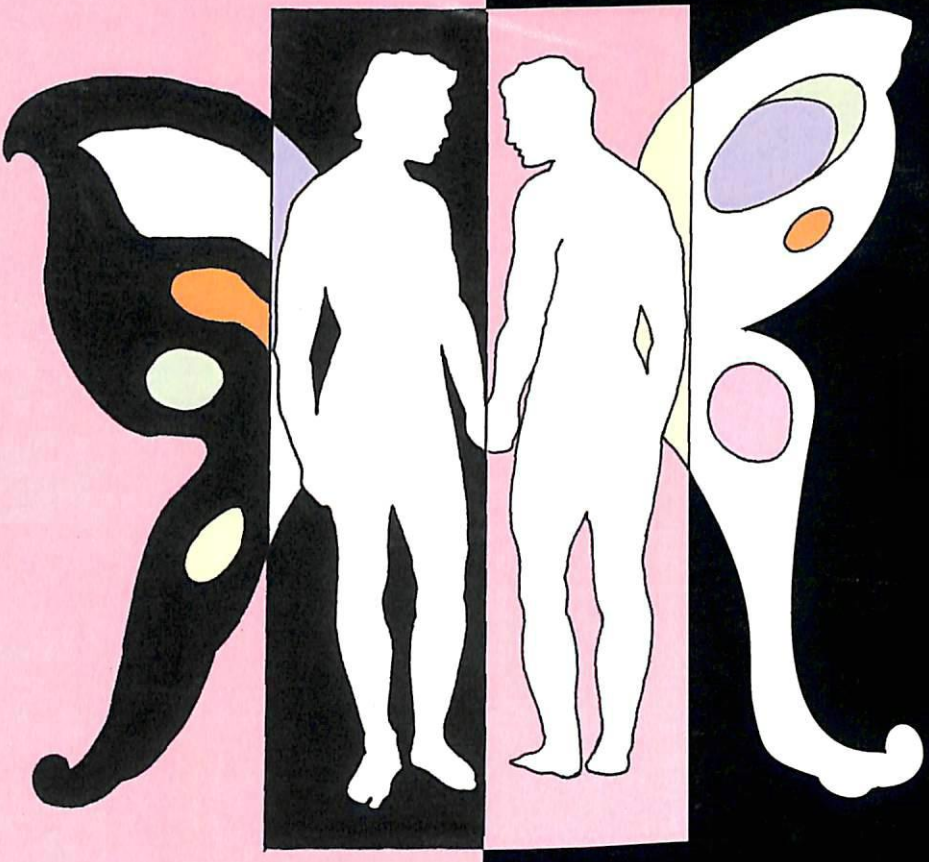

बिंदुमाधव खिरे

पार्टनर

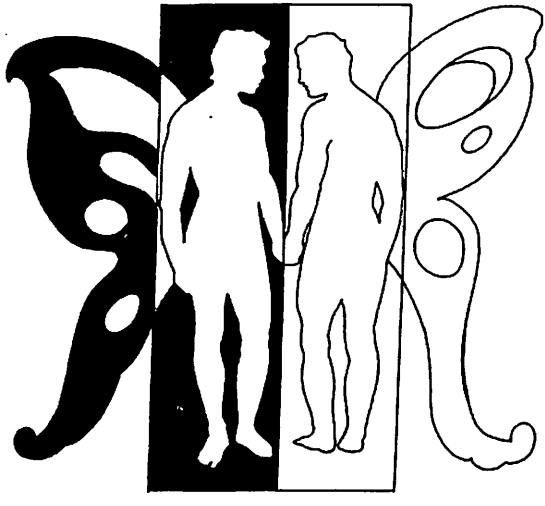

बिंदुमाधव खिरे

UNAIDS
JOINT UNITED NATIONS PROGRAMME ON HIV/AIDS

THE HUMSAFAR TRUST

© पार्टनर - बिंदुमाधव खिरे
Partner - Bindumadhav Khire

C/o. समपथिक ट्रस्ट
१००४, बुधवार पेठ,
ऑफिस नं. ९. रामेश्वर मार्केट,
पुणे ४११००२
फोन : (०२०) ६४१७९१११२
E-mail : khirebindu@hotmail.com

हिंदी अनुवाद - अवंती महाजन
मुद्रित शोधन - रविकिरण गलंगे

प्रकाशक / मुद्रक
यह अनुवाद और उसके प्रथम आवृत्ती के प्रकाशन के लिए हमसफर ट्रस्ट, मुंबई और युएसएड्स (UNAIDS) *से अनुदान प्राप्त हुआ।*

प्रकाशन - अप्रैल २००९

हमसफर ट्रस्ट, मुंबई
(पुरुष आरोग्य केंद्र)
पता : द हमसफर ट्रस्ट,
बीएमसी (BMC) ट्रान्जीट बिल्डींग,
वाकोला मार्केट, सांताक्रुज (ईस्ट), मुंबई - ४०००५५
दूरभाष : (०२२) २६६७ ३८०० / (०२२) २६६५ ०५४७
इ-मेल : humsafar@vsnl.com
वेबसाईट : http://www.humsafar.org

मुखपृष्ठ : राहुल देशपांडे

सूचित देणगीमूल्य : पचास रुपये (५०.००) - भारत
सात डालर ($7 U.S.) - विदेश

मंतव्य

इस पुस्तक का उद्देश्य?

जब से मुझे याद है, मेरे अड़ोस पड़ोस में, समलिंगी लोगों को हमेशा नफरत देखा गया हैं। इस विषय का अज्ञान, गलत फहमियाँ और ऐसे लोगों पर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से बरता जानेवाला अन्याय, लोगों की नजर में, बोलने में, विचारो में, उनके सलूक में हमेशा झाँकते रहता हैं।

मैं 'समपथिक' नाम की पुरूष लैंगिक आरोग्य संस्था चला रहा हूँ। संस्था के कुछ उद्दिष्ट इस प्रकार है - 'गे' सपोर्ट ग्रुप, लैंगिकता के बारे में शिक्षा, लैंगिक शिक्षा, गुप्तरोग, एच.आय.व्ही/एडस् के संबंध में जानकारी देना तथा, लैंगिक आरोग्य के लिए एक हेल्पलाईन चलाना।

मेरे घर के लोग, दोस्त आम तौरपर समलैंगिकता का विषय कभी छेड़ते नहीं। इस विषय पर बोलने की/कुछ सुनने की उनकी इच्छा नहीं होती। मुझे मालूम है, यह विषय सबको बैचेन करता हैं।

इस विषय को लेकर लोगों में अज्ञान हैं। अज्ञान हैं इसलिए गलत फहमियाँ हैं। गलत फहमियाँ हैं, इसलिए डर हैं और समाज में गहराए हुए इस डर के कारण, समलिंगी समाज की झोली में हमेशा नफरत और तुच्छता, उपहास दान पड़ा है।

इस विषय की जानकारी मिलती है, सिनेमा, नाटक, कहे जानेवाले चुटकुले, कुछ किताबें या कुछ लड़के/लड़कियों पर किए गए व्यंग इन माध्यमो सें। इसमें से बहुत सारी

जानकारी बिलकुल गलत होती है। और इस समाज पर अन्याय करनेवाली भी।

अखबारों मे कभी कभी इस विषय के आर्टीकल्स छपते हैं। लेकिन, बहुत बार, पत्रकार भी इस विषय में बहुत कम और आधी अधुरी जानकारी रखते हैं।

मेरा अनुभव है की अनेक डॉक्टर इस विषय में अज्ञानी होते हैं। उनमें से कुछ समलिंगी द्वेष्टे होते हैं। यह डॉक्टर्स पुरानी शिक्षा प्रजाती और रुढ़िवादी विचारधारा से प्रभावित होते हैं।

समलिंगी संभोग को कानून अपराध मानता हैं। कुछ पुलिस तथा गुंडे इस कानून का ब्लॅकमेलिंग के लिए उपयोग करते हैं।

एक इन्सान के नाते इस समाज के लोगों को समझ लेने की कोशिश कोई भी नहीं करता। नतीजन कई लड़के-लड़कियाँ खुदकुशी करते हैं। क्या इस अन्याय के लिए हम सब जिम्मेदार नहीं हैं?

समलैंगिकता के संबंध में उचित जानकारी कौन देगा? कोई भिन्नलिंगी व्यक्ति हमदर्दी के साथ इस विषय पर लिखता हैं, तो उसी की लैंगिकता पर शक किया जाता है। तो इस विषय पर कोई जी चुराना स्वाभाविक बात है। आवाज उठानेवाले लोग परंपरावादी, समलिंगीयों से नफरत करनेवाले होते हैं। उनकी ओरसे होनेवाली परेशानी, मारपीट की संभावना आदि कारणों से समलिंगी लोग अपनी तरफ से कुछ बोलने का साहस नहीं कर पाते।

चूँकी समलैंगिक लोगों की तरफ तिरस्कृत नजरों से देखा जाता है, इसलिए वे अपनी लैंगिकता छिपाते रहते है और इसलिए लोग समझ बैठते हैं की समलैंगिकता अपने देश में है ही नहीं!

इस पृष्ठभूमि पर मैंने विचार किया की मैं समलिंगी हूँ और पिछले कुछ सालों से इस विषय में काम कर रहा हूँ। तो फिर मैं ही क्यूँ न कुछ लिखूँ? इस पुस्तक के बारे में विचार करते समय, ध्यान में आया की समलैंगिता के जो अनेक पहलू है, वे सभी के सभी मैंने अनुभव नहीं किए हैं। ऐसे में सिर्फ मेरे अनुभव बताते रहने से बेहतर है, मेरे दोस्तों के अनुभव, इस विषय पर लिखा गया साहित्य, पाश्चात्य देशों का रवैय्या आदि का भी इसमें समावेश हो जाए। पुस्तक में वर्णीत रोहित का किरदार काल्पनिक है, फिर भी उसके अनुभव वास्तव है।

अब इस पर आरोप लग सकता है की ऐसी किताब 'ऑब्जेक्टीव्ह' नहीं हो सकती। वह 'बायसड्' ही होगी। परंतु कोई यह बताए की वैसे परंपराग्रस्त लोगों के विचार कहाँ तक 'ऑब्जेक्टिव्ह' होते है? मैं तो कहूँगा, मैं खुद यह जिंदगी जीता आया हूँ और आपने यह जानकारी जिस व्यक्ति को अपनी लैंगिकता पर शर्म-घिन है, या अज्ञान है, उससे सुनी है। मैं अपनी ओरसे मेरे विचार पेश करना चाहता हूँ। आशा है, आप उनकी तरफ निष्पक्ष नजर से देखेंगे।

यह पुस्तक किसके लिए?

यह पुस्तक हरेक के लिए है। माँ, पिता, बेटा, बेटी, भाई, बहन, दोस्त, सहेली, बहू, दामाद, रिश्तेदार, पड़ोसी, सहयोगी आदि। इनमें से कोई भी समलैंगिक हो सकता है। इतना ही नहीं, हम सबने कभी ना कभी कम से कम एक समलिंगी व्यक्ति को देखा ही होता है। उसके समलैंगिक होने की जानकारी हमें नहीं होती। प्राय: ऐसा भी देखा जाता है की कुछ समलिंगी लोग खुद सबसे ज्यादा समलिंगीयों से नफरत करनेवाले होते है। मुझमें कुछ न्यून है, मैं बहुत बुरा हूँ, गया - बीता हूँ यह भावना उन्हें मन ही मन खाती रहती हैं और फिर यह घृणा यह लोग उन जैसे लोगों पर व्यक्त करते हैं।

ऐसी कोई व्यक्ति हमारे परिचय की हो (खास करके घनिष्ठ हो) तो हम यह कहके दामन नहीं चुरा सकते की, 'मुझे मालूम नहीं, यही अच्छा हैं।' अगर उस व्यक्ति का सुख हम चाहते है, तो फिर इस विषय को नजरअंदाज नहीं कर सकते। इस पर कहा जा सकता है की, ठीक है, इस बात का पता चलने न चलने से किसका क्या नुकसान होनेवाला है? इसी सवाल का जबाब ढूँढ़ने का प्रयास ही इस पुस्तक का उद्देश्य हैं।

यह पुस्तक समलिंगी लोगों के लिए भी है। समलिंगी लड़के-लड़कियाँ उनके रिश्तों के बारे में बहुत सारी गलतफहमियाँ धराती हैं क्योंकि इस प्रकार के खुले, सुदृढ, स्वस्थ रिश्ते उन्होंने कहीं देखे नहीं होते। उसके बारेमें चर्चा, संवाद करने की, जानकारी हासिल करने की उचित जगहों का उन्हें पता नहीं होता।

सिर्फ समलैंगिकता विषय को लेकर यह किताब लिखी गई है। वैसे लैंगिकता के अनेक पहलू हैं। उनमें से यह एक है। हम सबने मिलकर सोचने की बात यह है की, सिर्फ भिन्नलिंगी पहलू ही योग्य, सही है, यह जिद रखना कहाँ तक उचित है? यह किताब, समलिंगी लोगों का भावविश्व किस प्रकार का होता है, यह दर्शाने का एक प्रयास है। उस भावभंगिमा को शब्दरूप देने का यह एक छोटासा पहला पग। इच्छा है, एक सेन्सिटायझेशन प्रायमर की दृष्टि से इस किताब का उपयोग हो और इसी विचार से टेक्निकॅलिटीज को दूर रखा है। इस विषय की और जानकारी चाहनेवाले संदर्भ में दी गई किताबें जरूर पढ़ें। वहाँ दी गई संस्थाओ सें संपर्क करें।

भाषा संबंधी

हो सकता है, कुछ वाचक इस किताब के कई शब्द

अश्लील समझेंगे। लेकिन दरअसल लड़कें, बुजूर्गों के सामने ऐसे शब्दों का उपयोग भला ही न करें, फिर भी आपस में ऐसे शब्द उनके बोलचाल में होते हैं। यह किताब रोहित की डायरी है। इसलिए इसकी भाषा उसी ढंग की होना स्वाभाविक है। यह पुस्तक पढ़ना क्लेशकारक हो सकता है। लेकिन गौरतलब हैं की समलिंगीयों के लिए नफरत भरे परिवेश में प्रत्यक्ष जीना, पढ़नेवालें से कई गुना ज्यादा क्लेशकारक होता है। कुछ सनसनीखेज लिखकर शौहरत हासिल करने की यह चेष्टा नहीं है। ऐसे लोगों के साथ होनेवाली खिलवाड़, उनकी छटपटाहट को समझ के सामने रखने की यह एक नेक कोशिश है।

आभार

यह किताब पहले मराठी में प्रकाशित हुई। इसका हिंदी अनुवाद श्रीमती अवंती महाजन जी ने किया। अनुवाद करने के लिए रंजन कुमार साह जी ने मदद की। इसका मुद्रित शोधन श्री. रविकिरण गलंगे जी ने किया। यह अनुवाद और उसके प्रकाशन के लिए 'हमसफर ट्रस्ट', मुंबई और 'युएनएड्स' (UNAIDS) से अनुदान प्राप्त हुआ। इन सभी का मैं बहुत आभारी हूँ।

प्राथमिक मराठी ड्राफ्ट पढ़कर मुझे फीडबॅक देनेवाले डॉ. भूषण शुक्ल, डॉ. रमण गंगाखेडकर, मनीषा गुप्ते, जमीर कांबले, वैभव आबनावे, केतकी रानडे इन सबका मैं आभारी हूँ। बार-बार ड्राफ्ट पढ़कर सुझाव देनेवाली नयन कुलकर्णी का मैं ऋणी हूँ।

त्रिकोण (सॅनफ्रॅन्सिस्को, कॅलिफोर्निया), हमसफर ट्रस्ट (मुंबई), 'नारी' (National AIDS Research Organization, Bhosari) इन संस्थाओं का मैं ऋणी हूँ। डॉ. विजय ठाकूर, सुनीता वाही, डॉ. अनंत साठे, डॉ. शांता

साठे, मेघना मराठे, तेजस्वी सेवेकरी, डॉ. अवस्थी, गिरीष कोटमिरे, 'त्रिकोण' संस्था के अरविंद कुमार, अशोक जेठनंदानी, संदीप रॉय और 'हमसफर ट्रस्ट' के अशोक राव कवी, विवेक आनंद, अभिजीत आहेर, नितीन करानी, गिरीष कुमार इन सबका मैं दिलसे आभार व्यक्त करता हूँ।

इन सभी के अलावा और अनेक हैं, जिन्होने मैं जैसा हूँ वैसा मुझे स्वीकार किया, इन्सानियत के नाते मुझे अपनाया, उनके आभार व्यक्त करना शायद उन्हें पसंद नहीं आएगा। मैं उनके ऋण में ही रहना पसंद करूँगा।

इस किताब में पेश किए गए विचार-मत मेरे अपने हैं। जरूरी नहीं की उपरोक्त लिखित व्यक्ति/संस्था इन विचारों से सहमत हो।

- बिंदुमाधव खिरे

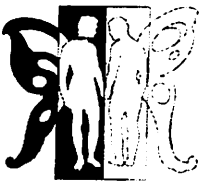

पार्टनर

चार दिन हो गए, दुकान बंद थी। आज खोली। काम में डुबो लिया। परेशानी असल में होती है, घर जाकर। घरवालों से संबंध सिर्फ दो और खाने तक, बाकी बेडरूम का दरवाजा बंद कर लेता हूँ। अंदर एक तो सो जाना, नहीं तो आवाज बंद कर के टीवी देखना और जब कभी मन बेकाबू हो जाए तब रो देना।

दोस्तों से कॉन्टॅक्ट छूट गया है। छुट्टी से तो डर ही लगता है। समझ में नहीं आता, पूरा दिन क्या करूँ? वक्त कैसे कटेगा? मालूम है अब खुद को सँवरना बहुत जरूरी है लेकिन क्या करूँ, कुछ करने को मनही नहीं करता।

कितने दिन हो गए, डायरी की तरफ देखा भी नहीं। फिर से लिखना शुरू करना चाहिए। लगता है, आखिर तक यही एक चीज है, जो साथ निभाएगी।

आज बड़ी हिम्मत के साथ तय किया, घर ठीक-ठाक कर दूँ। परछत्ती समेटन के लिए उपर चढ़ा। कितने महिने या साल बीत गए, यहाँ देखा भी नहीं है।

टूटी हुई इस्त्री, टेपरेकॉर्डर।

इलेक्ट्रॉनिक की-बोर्ड।

स्सी के टुकड़े, थैलियाँ, बॅग्ज।

मकडी के जाल ही जाल।

पुराने कपडे, इरू की एक जॉकी स्टाईल की अंडरवेअर, अभी भी इरु की बू उसमें बाकी है।

पुराने ताले और उनपर न चलनेवाली चाबियाँ।

पुराने अल्बम, मॅगझिन्स, कॉलेज की किताबें, नोटबुक्स, फाईल्स।

बहुत दिनों से रखी हुई डायरियाँ-कम-जर्नल्स।

फटे हुए, छूटे हुए पन्ने, कुछ घूमिल, कुछ सिकुडे हुए, कुछ सडे हुए। और कुछ इतने नए जैसे की पहली बार छू रहा हूँ। मेरे अगल बगल में फैला हुआ सामान और बीचोबीच मैं।

पाठशाला

पाठशाला शुरू हो गई। बहुत सारे टीचर्स बदल गए है। सिर्फ पी.टी. का टीचर और हिंदी की डायन टीचर वही हैं। पी.टी. के टीचर की आँखे जब देखो लाल दिखती है। पिछले दो सालों से देख रहा हूँ। पास जाओ, तो शराब की बू आती है।

माँ आज शहर गई थी। किताबें, कापियाँ सब चिजें जतीन की दुकान से ही खरीदने की ताकीद मैंने दी थी। उसने दूसरी जगह से खरीदी। बोली, जतीन के दुकान में महँगी हैं। मुझे माँ पर कभी-कभी इतना गुस्सा आता हैं!

जतीन क्लास का मॉनिटर बन गया। जैसे हर साल बनता है। सभी को वो अच्छा लगता है। मुझे उससे बात करने का ज्यादा मौका नहीं मिलता। सभी उसके आगे-पीछे जो रहते हैं। मुझे कोई चान्स नहीं। जब जतीन का दरबार न लगा हो, तो क्लास की लड़कियाँ कुछ न कुछ बहाने बनाकर उससे हेलमेल करती रहती हैं। ये लड़कियाँ! इन पर मुझे सबसे ज्यादा गुस्सा आता है। हरदम जतीन के आस पास! शरम नहीं आती?

किताबें जतीन को दिखाई। कह दिया तुम्हारी दुकान से ही खरीदी है। भगवान करे उसके ध्यान में न आया हो। आखिर इज्जत का सवाल है। जतीन मुस्कुराया। कितनी मीठी है उसकी मुस्कान। दाँत भी मोती जैसे।

जतीन ऑलराऊंडर था। तेज दिमागवाला। खेल कूद में भी माहिर। क्लास में सबसे खुबसूरत। खुशमिजाज। उसके रेशीम जैसे बाल हमेशा बिखरे रहते हैं। लंबा, गोरा। होठों पर मींजनी हुई रेख। कसी हुई हाफ पँट। मैं पढाई में ठीक था लेकिन खेल में बहोत खराब। मैं उसके पास जाने की जी जान से कोशिश करता रहता था पर चान्स नहीं मिलता था। लड़कियों पर गुस्सा करनेवाली बात पर मुझे आज भी हँसी आती है। उस वक्त मेरे ध्यान में नहीं आया था की लड़कियां मेरी कॉम्पिटीशन हैं। सेक्श्युअली उन

दिनों कुछ महसूस नहीं हुआ था। सिर्फ इच्छा होती थी की जतीन के पास रहें, उसकी नजर में अच्छा बना रहू। बस।

मेरी हाईट अच्छी बढ़ रही है। कभी-कभी पिताजी के बाजू में खड़े रहकर देखता हूँ कि उनसे कितना लंबा हो गया हूँ। कल शामतक मैं उनसे दो इंच लंबा था। मुँहासे मेरे दुश्मन बन गए है। दिन में पाँच छह बार साबुन से मुँह धोता रहता हूँ।

बहुत बारिश हो रही है। पानी रेनकोट से अंदर जाता है और मैं पूरा भीग जाता हूँ। वैसे रेनकोट भीगने के लिए ही तो पहनते है। पहली युनिट टेस्ट में मैं गणित में फेल, हिंदी में जैसे तैसे पास। उसमें नई बात क्या हैं? उस डायन ने मुझे क्योंकि, कीजिए शब्द पाँच सौ बार लिखने की सजा दी। शब्दों की यह ऱ्हस्वई की, दीर्घई की झंझट मेरे पल्ले पड़ने वाली नहीं है। मैं तो कहता हूँ, जिसे जैसा चाहे लिख लें, अर्थ में फर्क थोड़ा ही पढ़नेवाला है। प्रगती पुस्तक पर पिताजी के हस्ताक्षर कर डाले। उन्हें खालीपीली तकलीफ क्यों दें?

अब मेरी उम्र चालीस साल तक आ पहुँची है। अभी-भी मुझे हिंदी में सिर्फ दो ही शब्द सही ढंग से लिखने आते हैं - क्योंकि, कीजिए।

जतीन को जिम्नॅस्टिक्स का पहला प्राईज मिला। मैंने उसे बधाई दी। वह हँस पड़ा और उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा। मेरे तो रोंगटे खड़े हो गए। कितना खुबसूरत दिखता है जतीन।

दगडूशेट गणपती की शोभयात्रा देखने मौसी आयी थी। हर साल आती है। आखिर आज टली। पुणे की हमेशा बुराई करती रहती है, हमारे बलबुते इतराती है और चली जाती है। टिळक ने यह झमेला क्यो शुरू किया, भगवान जाने। शायद उनके कोई रिश्तेदार नहीं थे।

आज जतीन का बर्थ डे। उसका नाम भी कितना सुंदर है। सभी कापियों में मैंने उसका नाम घोटके रखा है। लड़कियों पर आज मैं नजर रखा हुआ था। क्लास की पाँच लड़कियों ने उसे ग्रीटींग कार्ड दिया। दो ने गुलाब दिए। मैंने सुबह ही उसे बधाई दी। उसने सिर्फ थँक्स कहा। बहुत अकड़ता है साला। गुलाब तो मैं भी देना चाहता था, पर कैसे देता?

क्लास में कुल सात लड़कियाँ। सच बताऊ तो, जतीन के बारे में मेरी भावना क्या थी, इस बात का मुझे उस वक्त पता नहीं था। सिर्फ मैं उसकी तरफ खिंचा हुआ था बस। परंतु इसका स्वरूप मेरे ध्यान में नहीं आया था।

यह आकर्षण कब महसूस होने लगता है, कहा नहीं जा सकता। ब्रायन जब पाँच साल का था, तब उसकी सामनेवाली गली में रहनेवाले एक बीस साल के लड़के के बारे में उसे इस तरह का आकर्षण पहली बार महसूस हुआ। उनकी पहचान नहीं थी। उसका नाम तक ब्रायन को मालूम नहीं था। फिर भी हर रोज वह बाल्कनी में से उस लड़के की तरफ देखता रहता। उसका मन करता, उसकी तरफ हमेशा ऐसे ही देखते रहूँ। ब्रायन को बचपन की बाकी कोई याद नहीं है, सिर्फ यह बात साफ तौरपर याद है। और एक है अमिशा, ब्रायन के एकदम विरुद्ध। उसे एक महिला के बारे में पहली बार ऐसा आकर्षण हो गया, जब उसके दो पोते थे, आयु थी छप्पन साल की!

जतीन को आज मैंने सिगरेट पीते हुए देखा। स्कूल के पास एक टूटा-फूटा मकान है, उसके पिछवाड़े। बेकार लड़कों में रहकर जतीन ऐसी हरकतें करता है। मैं उसे समझाऊँगा। मेरी सुनेगा वो। मैं उसे बदलूँगा।

सिगरेट के बारे में जतीन से बात करने की मेरी हिम्मत नहीं हो रही है। अगर यह बात उसके गले नहीं उतरी तो वह मुझसे नाराज हो जाएगा इस बात का डर लगता है इसीलिए चूप बैठा हूँ।

माँ ने आज खाने के लिए टिफीन में गोभी की सब्जी दी। मैंने टिफीन नहीं खाया। बाहर से आलूवड़ा लेकर खाया। घर आक़र माँ की गालियाँ खाई। जतीन भी गोभी और बैंगन पसंद नहीं करता। मैं बैंगन खाना छोड़ देनेवाला हूँ।

जी करता है, चोरी छिपे सिगरेट पीकर देखूँ। पर सिगरेट मिलेगी कहाँ से? ठेले पर जाने का साहस मुझमें नहीं। पता नहीं, जतीन कैसे जा पाता है। आज पिताजी का प्रमोशन हुआ। घर के हम सब लोग बाहर खाना खाने गए थे।

इंग्लिश का सर हरामी है। लड़कों को जान बूझकर कम मार्क्स देता है। लड़कियों को ज्यादा। शर्ट के बटन्स खुले छोड़ता है, सीने के बाल दिखाता हैं। गणित का मास्टर जो उसके पास प्रायव्हेट ट्युशन के लिए जाता है, उसे परीक्षा से पहले पर्चा बता देता है। सायन्स के सर और मराठी की टीचर वैसे अच्छे हैं। प्रोत्साहित करते हैं और मारपीट कभी नहीं करते।

आज मैंने सिगरेट पी। कितनी गंदी लगती है। बदबू आती है। भगवान जाने जतीन कैसे पीता है। आज उसकी टोली सिगरेट पी रही थी। जतीन ने पूछा - पिएगा क्या? मैंने ना कर दी। पर उसने आग्रह किया। अब उसका आग्रह भला कैसे टाल सकता हूँ? एक कश लगाया। एकदम ठसका लग गया। सब हँसने लगे। बोले, धीरे-धीरे आदत पड़ जाएगी। नामुमकिन! इस जनम में तो कभी भी नहीं। एक बार पीकर देखी, बस! अब और कभी नहीं। समझ में नहीं आता, लोग कैसे पॅकेट के बाद पॅकेट पीते जाते हैं?

.....

कल हम सब घरवाले नाटक देखने गए थे। बालगंधर्व थिएटर में। 'नटसम्राट'। डॉ. लागू। टीकट नहीं मिलें। नाटक हाऊसफुल। सीधे घर वापस आने की बजाए, हम कोई आर्ट फिल्म देखने गए। सिनेमा हॉल में अंधेरा, उधर परदे पर भी अँधेरा। परदे पर कोई एक शब्द भी बोलता नहीं। मुझे तो नींद आ गई। तभी तो इतवार होते हुए भी आसानी से टिकट मिल गए।

क्लास में सबको बताया, यह फिल्म मत देखो। एकदम बकवास है। ऐसी पिक्चर तूने देखी ही क्यों? करके सब दोस्त उल्टे मुझपर ही बरस पड़े। मुझे क्या सपना आया था की फिल्म ऐसी होगी?

आज स्कूल में स्नेहसम्मेलन हुआ। एक नाटक में जतीन ने नेव्ही अफसर की भूमिका की थी। सफेद चुस्त पँट, सफेद हाफ शर्ट और नेव्ही की कॅप। कितना सुंदर दिख रहा था जतीन, नजर नहीं हटती थी।

क्या नेव्ही का गणवेश पहने हुए पुरुषों के बारे में मेरे आकर्षण की वो शुरुवात हो सकती है?

कल रात मुझे बहुत ही अजीब सपना आ गया। जतीन और मैं क्लास में अकेले। वह नेव्ही के गणवेश में। उसने मुझे उठा लिया। उसकी गोद में सुला दिया।

मेरा जाँघिया निकाला। इतने में मैं जग पड़ा। मेरा जाँघिया गिला गिलासा लग रहा था। मैं झुंझल गया। बिस्तर में मैंने पेशाब कैसे कर दिया? लाईट जलाई, जाँघिया बदलते वक्त उसमें कुछ सफेद चिकनाई सी देखी। रूमाल से उसे पोंछ डाला। मैं बहुत डर गया। मुझे कोई रोग वगैरह तो नहीं लगा? क्या करूँ? घरवालों को कैसे बताऊँ?

वैसे मुझे याद है, क्लास में सेक्स एज्युकेशन का पाठ पढ़ाया गया था लेकिन इस तरह कुछ होता है, या होगा यह बात किसी ने नहीं बताई थी। अपने लिंग से सफेद चिकनाई जैसा कुछ बाहर निकल रहा है, यह बात मैं भला घरवालों को कैसे बताऊँ? अब मुझे इस बात पर हँसी आती है लेकिन उस वक्त तो मेरे होश उड़ गए थे।

नौवीं कक्षा में जीवशास्त्र में एक सेक्शन था। उस में लिखा था की अपनी जननेंद्रिय हर रोज धो कर साफ रखनी चाहिए। हम लोग इस ताक में थे की टीचर यह सेक्शन कब पढ़ाती है। लगता था, यह पोर्शन पढ़ाते वक्त, टीचर की जो धाँधली मचेगी उसे देखने में बड़ा मजा आएगा लेकिन टीचर निकली सव्वा सेर। वह सीधे उस सेक्शन से कतरा गई और अगला सेक्शन पढ़ाना शुरू कर दिया। किसकी मजाल थी, उसे याद दिला दें। हम लड़के बहुत निराश हो गए। हमारी बेताबी पर पानी फेर गया। स्कूलों में लैंगिक और लैंगिकता की संपूर्णतः शिक्षा देनी चाहिए। आज लैंगिक शिक्षा के नाम पर जो कुछ सिखाया जाता है, उसमें दरअसल क्या अर्थ है? अपने बच्चों की जीवन का यह सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण पहलू हम नजर अंदाज कर रहे है। अपने ही बच्चों के साथ इससे बड़ा अन्याय और कौन-सा हो सकता है?

बीच-बीच में मेरा 'वो' तन जाता है। उसे छुने को मन करता है। डर इस बात का लगता है, की पता नहीं चलता, वो कब तन जाएगा। परसों जतीन सामने आ गया और....। तना हुआ झाँकने के लिए मैंने शर्ट 'इन' करना छोड़ दिया है। सबके सामने तना हुआ बेकार लगता है। वो पी.टी. का सर मुझे शर्ट 'इन' करने की जबरदस्ती करता है। लेकिन उसके चले जाने के बाद, मैं बाहर निकाल लेता हूँ।

मन अधीर रहता है, कब रात आएगी, कब मैं बिस्तर पर लेट सकूँगा। जतीन को आँखो के सामने लाते ही वो तन जाता है। तकिये पर उसे रगडता हूँ। रगडते रगडते उसमें से सफेद पानी आता है। जतीन को मन में रखकर ऐसे करना मुझे अच्छा लगने लगा है।

छोटा-सा ही सही, लेकिन मेरा अपना अलग कमरा है, यह मेरी खुशकिस्मती थी।

हर रात करना चाहता तो हूँ, मगर दूसरी तरफ शरम भी लगती है। मेरी ऐसी हरकतों का किसी को पता चलेगा तो वे क्या कहेंगे। माँ, जतीन को कितना दुःख होगा। वह कितना शरीफ है। मेरे जैसा गया-गुजरा नहीं।

उस वक्त मुझे पता नहीं था की मेरी यह इच्छा प्राकृतिक, स्वाभाविक है, उसमें अनुचित कुछ भी नहीं है।

अब नहाते वक्त बाथरूम में भी मैं हाथ से करने लगा हूँ। हर रोज नहाने की आदत इसी कारण पड़ गई है। आज पिताजी चिल्लाए। वैसे शोर गुल मचाने के लिए उन्हें किसी खास कारण की जरूरत नहीं होती। 'मुझे ऑफिस जाने की जल्दी है, और ये घंटों बाथरूम में क्या कर रहा है? नहाने में इतना समय?' कल से मैं उन्हें पहले नहाने का चान्स दे दूँगा। मुझे ऐसी जल्दबाजी मंजुर नहीं।

माँ को भी आजकल एक बुरी आदत लगी है। हर सुबह चिल्लाती है, 'रोहित, पैजामा, जाँघिया धोने के लिए रख दो।' उसका इस तरह से बोलना मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। पर उससे शिकायत करना बेकार है, मानेगी नहीं।

हर शनिवार हनुमान जी के मंदिर में जाने लगा हूँ। हार, तेल अर्पन करता हूँ। प्रार्थना करता हूँ, हनुमान जी, इस गंदी आदत से मुझे बचा लो। क्षमा माँगता हूँ। यह मेरे अकेले का पाप है, इसमें जतीन का तनीक भी दोष नहीं। उसे सजा मत देना। दोनों की सजा मैं भुगतूँगा।

स्कूल में छुट्टि पड़ गई है। क्रिकेट खेलते वक्त, सोसायटी के लड़के, मुझे हमेशा लास्ट में चुनते है। क्योंकि मैं हमेशा पहलीही गेंद पर आऊट हो जाता हूँ। मुझे बॉलिंग भी नहीं आती। सिर्फ फिल्डिंग करनी पड़ती है। बोअर हो जाता हूँ। आज मेरे हाथों कॅच छूट गया। वैसे वो गेंद मेरी तरफ आ रही थी, इस बात का मुझे पता ही नहीं चला। मैं खड़े खड़े जतीन का सपना देख रहा था। पूरी टीम मुझपर बरस पड़ी।

अर्थात शैलेश जो बॅटिंग कर रहा था, उसने मुझे हाथ जोड़के थँक्स कहा, मैंने भी 'नो मेन्शन' में जबाब दिया। तब मनिष ने मेरे पीठ में एक घूँसा जमाया। वह कॅप्टन हुआ तो क्या हुआ, हरामी। मेरे ही बल्ले से खेलते हैं और मुझ पर हाथ उठाते हैं। अब मै क्रिकेट खेलूँगा ही नहीं। हात मलते रह जाएँगे सब के सब।

धीरे-धीरे मेरे मन में क्रिकेट के बारे में कमाल की चिढ़ पैदा हो गई। बहुत सालों तक मैं क्रिकेट से नफरत करता रहा। अभी-अभी मैं मॅचेस देखने लगा हूँ। राहुल, सचिन, जहीर जबसे क्रिकेट खेलने लगे हैं, मुझे क्रिकेट अच्छा लगने लगा है।

कल हनुमान जी के मंदिर में गया था। देखा तो मेरे सामने हाथ जोड़े हुए एक लड़का खड़ा था। कितना खुबसूरत था। मेरी तो नजर उस परसे हटती ही नहीं थी। वो थोडा खिसक गया, फिर भी मैं मुड मुड के उसकी तरफ देखता ही रहा। वाह क्या खुब दिख रहा था। वो प्रदक्षिणा के लिए चला गया। इधर मैंने हाथ जोड़ के आँखे बंद कर ली। हनुमान जी का स्तोत्र मन में दोहराना शुरू किया। फिर भी बंद आँखो के सामने वह लड़का दिखाई देने लगा। एक क्षण हनुमान जी की मुरत आती, तुरंत उसकी जगह वही लड़का दिखता। काले रंग की टाईट पँट उसने पहनी थी। उसमें से अंडरवेअर का किनारा दिखाई दे रहा था। मुझे तुरंत ऐंठन हो गई। शरम भी लगी। मंदिर में मेरा यह सब क्या चल रहा है! छी:। मैं किसी दूसरे समय मंदिर जाऊँगा।

मेरा बर्थ-डे क्लासमें किसीने भी मनाया नहीं। जतीन का बर्थ-डे पूरा क्लास मनाता है। शाम को घरवालों के साथ बाहर होटल में खाना खाया। एक फिल्म देखी। माँ और पिताजी नें मुझे टी शर्ट और जीन्स गिफ्ट दिया।

मंदिर जाता हूँ और वहीं पिछडता रहता हूँ। मन ही मन उसकी राह देखता हूँ। पर उस दिन के बाद वो मुझे फिर कभी दिखाई नहीं दिया। भगवान मेरा बरताव देख रहे हैं। एक दिन ऐसे फटकार देंगे, याद रहेगी। मंदिर जाना ही छोड़ देना चाहिए। लेकिन इतने में नहीं। इम्तिहान जो सर पे है!

.....

इम्तिहान खत्म हो गए। नतीजे भी आ गए। मेरा नंबर आठवाँ आया। पिछले साल की अपेक्षा एक स्थान आगे आ चुका हूँ।

कल माँ ओर पिताजी के साथ एक नाटक देखने गया था। उसमें जनाना ढंग के आदमी का रोल था। उसका औरतों जैसा बोलना, चलना। हम तो हँसते हँसते लोटपोट हो गए। फिरसे एक बार यह नाटक देखना चाहिए।

अब मुझे शरम आती है की, वह नाटक मुझे अच्छा लगा था। इस तरह से उडाया गया मजाक हर रोज मेरे आसपास देखने सुनने में आता है।

दूसरों की खिल्ली उड़ाना हमारा टाईम पास है। मराठी, हिंदी के कई नाटक, सिनेमा, टीवी सीरीयल्स के कई व्यंग्य जनाना ढंग के पुरुषों पर कसे हुए होते हैं। तो यह है हमारा विनोद-बुद्धि का स्तर। यह है हमारी संवेदनशीलता।

.....

व्हेकेशन बॅच खत्म हो गई। छुट्टि के दिन कैसे बिते, पता भी नहीं चला। हम लोग तुलजापुर, पंढरपुर होकर आए। अब दसवीं का वर्ष। उससे निपटना है बस। कल से स्कूल शुरू। आज रात मैं सो नहीं सकूँगा। स्कूल खुलने के खयाल सेही मेरा दिल दहल जाता है। आज नहीं, हर साल मेरे यही हाल होते है। आँखे खुली की खुली रखके कितनी देर तक मैं बैठा रहता हूँ, ताकी निंद न लग जाए। इसमें जतीन से मिलने का आनंद भी खट्टा हो जाता है।

आज स्कूल खुला। मेरी बैठने की जगह बदल दी गई है। अब मैं जतीन के अगले बेंच पर बैठूँगा। इतने दिनों बाद उसे जी भर के देखा। कितनी खुशी हुई, बता नहीं सकता।

गणित का सर एकदम निकम्मा है। बडे बॉल्सवाली लड़कियों के गालों को किसी न किसी बहाने छूता है। कापी देखने के बहाने उनके नजदीक जाता है और उनके बालों में हाथ फेरता है। गणित गलत आने पर उन्हें मारता भी है, चुटकियाँ काटिता हैं। मुझे उससे भय लगता है। उसकी आँखों से मैं आखें मिला नहीं पाता। आज मेरा एक गणित गलत आया, तो उसने मुझे मारा। मैं रो पड़ा। आजकल लड़कियाँ भी रोती नहीं लेकिन मुझसे रोका नहीं गया। शरम आती है। अब दोस्त मेरी हँसी उड़ाते है। किरोसीन छिड़ककर उस टिचर को जला देना चाहता हूँ मैं।

मालूम नहीं क्यो, लेकिन स्कूल के दिनों में मुझ में निडरता आई ही नहीं। दोस्त भी बहुत कम मिले। शायद हम खेल में अच्छे न हो तो दोस्ती बनाना मुश्किल है, या तुम्हारा अलगपन, बजाए खुदके, बाकी लोगही पहले सूँघ लेते हैं?

आज जतीन एक अश्लील किताब लाया था। उस टूटे फूटे मकान के पीछे उसका अड्डा जम गया। उस किताब में अधनंगी औरतों के चित्र थे।

वैसे उनके ग्रुप में मैं कभी रहता नहीं। मालूम नहीं उस दिन कैसे उनके साथ था।

सब लड़के लालची नजर सें चित्र देख रहे थे। मुझे बहुत गंदा लगा। समझ में नहीं आता, इन्हें ऐसी अधनंगी औरतें क्यों इतनी अच्छी लगती हैं। मुझे तो उनमें जरा भी इंटरेस्ट नहीं लेकिन यह बात उन लड़कों को बताता, तो वे मुझे कच्चा खा जाते। मैंने भी शौकिन होने का नाटक किया लेकिन क्या मेरे ढ़ोंग पर जतीन को शक हो गया है? उसने सबके सामने तपाक से मुझे पुछा, 'रोहित, क्यों बे, तेरा उठता है क्या?' मैं एकदम झेंप गया। सब खी खी करके हँसने लगे। शरम के मारे मेरा चेहरा गरम हो गया। मुँडी हिलाकर मैंने हाँ भरी। जतीन हमेशा लड़कियों के बॉल्स के बारे में बोलता रहता है। मराठी की टीचर के बारेमें तो वो बहुतही गंदी बाते करता है। उसे उसके साथ सेक्स करना है। दिमाग सटक गया है उसका। नहीं तो कौन इतना अक्ल का पुतला होगा, जिसे अपनी मराठी की टीचर के साथ सेक्स करने की इच्छा होगी? मुझे तो शक होता है की मैं इतना शर्मिंदा हो जाता हूँ, इसलिए मुझे और चिढ़ाने के लिए जानबुझकर वो मेरे सामने ऐसी गंदी बातें करता है।

लड़कियों के बारे में मुझे कोई आकर्षण नहीं है, इस बात का अफसोस शुरु में बिल्कुल महसूस नहीं हुआ। इस स्थिती का अर्थ समज नहीं पाया।

कल टीवी पर एक गाना देखा। मिलिंद उसमें क्या दिख रहा था, वाह! क्या बॉड़ी पायी है उसने। जतीन से भी कई गुना खुबसूरत लग रहा था। पूरा दिन मुझे मिलिंद ही याद आ रहा था। वह महल में आता है, मुझे उठाता है, ले जाता है। असल में मेरे यह विचार एकदम गलत हैं। मुझे जतीन के साथ एकनिष्ठ रहना चाहिए। जतीन

से भी ज्यादा मुझे मिलिंद पसंद है, यह बात अगर जतीन को मालूम हो जाए, तो उसे कितना बुरा लगेगा?

टीवी सीरीयल की एक अभिनेत्री को मनमें लाकर आज मैंने हाथ से करने का प्रयास किया। घिन हुई। कुछ भी कर नहीं पाया। 'उसमें' चुस्ती आती ही नहीं थी। फिर मिलिंद आकर मुझे उठाकर ले जाता है, ऐसी कल्पना की। तुरंत 'वो' तन गया। फिर उस अभिनेत्री को आँखों के सामने लाया, तो एकदम ढ़िला पड़ गया।

ऐसे ही बोलते बोलते आज जतीन ने कहा की हाथ से करने से सेहत पर बुरा असर पड़ता है। किसी अखबार में छपा आर्टिकल काटके वो साथ लाया था। बस अब नहीं। अब हाथ से मैं नहीं करूँगा। मेरे चेहरे के मुहाँसे शायद उसी कारण आए है।

बहुत समय के बाद मुझे पता चला की हस्तमैथुन के कोई दुष्परिणाम नहीं होते। लागों के मनमें इस बारे में इतनी गलतफहमियाँ है कि पुछो मत। इरु को भी बहुत सारी गलतफहमियाँ थी। उसे लगता था की हस्तमैथुन के कारण ही अस्थमा, मुहाँसे, कमजोरी, दुबलापन, वीर्य निर्मिती बंद होना आदी तकलिफें होती है। मैंने उसे बार बार समझाया की ऐसा कुछ नहीं होता, जी भरके कर लो। लेकिन बचपन में एक बार मन में जो बातें बैठ जाती है, उसे बाहर करना आसान नहीं होता। अब भी हाथ से करने में उसे अपराध की भावना चुभती है।

पढ़ाई बढ़ती जा रही है। अब रोज ड़ायरी लिख नहीं पाऊँगा।

आज नहाने गया तो साबुन लगाते वक्त 'वह' टाईट हो गया लेकिन अब कुछ करूँगा नहीं। पक्का निश्चय कर दिया है। एक बाल्टी भर थंडा पानी बदन पर डाला और बाहर आ गया।

दूसरा दिन। मैं जतीन की तरफ देखूँगा भी नहीं।

तीसरा दिन। मैं अखबार नहीं पढूँगा। उसमें पुरूषों के अंडरवेअर के विज्ञापन होते हैं।

चौथा दिन। मैं मॅगझिन्स देखूँगा नहीं। उसमें अभिनेताओं के छायाचित्र होते हैं।

पाँचवा दिन। मुझे चारो ओर मिलिंद ही मिलिंद दिखाई देने लगा है।

कल रात सपना देखा। मिलिंद भयंकर संकट में है। मैंने उसे जान की बाजी लगाकर बचा लिया। उसे बचाते बचाते मैं जख्मी हो गया। मरने लगा। उसने मुझे बाहों में भर लिया। सीने से लगा लिया। उसकी आँखों में पानी भर आया। हर रात जाँघिया बदलना एक झँझट-सी लगने लगी है।

मेरी प्रतिज्ञा उसी वक्त खत्म हो गई। हमेशा के लिए।

इम्तिहान सर पर है। कम से कम ८० पर्सेंट की अपेक्षा पिताजी कर रहे है। परीक्षा खत्म होने का इंतजार कर रहा हूँ। अब कुछ दिनों तक डायरी नहीं लिखूँगा।

दसवीं का साल कैसे गुजर गया, पता भी नहीं चला। सुबह क्लास, दोपहर को पाठशाला, घर आते ही पढ़ाई और रात को मिलिंद।

छुट्टि पड़ गई। पिछले महिने में मैंने हार्मोनियम का क्लास शुरू कर दिया। वहाँ एक लड़की है, बहुत अच्छा बजाती है। दुर्गा राग उससे ही सुने। पता नहीं, मुझे राग बजाना कभी सिखाएँगे। सिर्फ सा-रे-ग-म बजाना अब बोअर होने लगा है।

पिछले हफ्ते हम सब गणपतीपुले गए थे। मुझे अच्छे मार्क्स मिले इसलिए माँ ने मन्नत माँगी। मुझे चिंता हो रही है, अब जतीन नहीं मिल सकेगा।

शायद माँ ने, मेरे अच्छे रिझल्ट के लिए हर एक भगवान से मन्नत माँगी थी। पिताजी ऐसी बातों पर यकीन नहीं करते थे।

मुझे ८२ पर्सेंट मार्क्स मिले। सायन्स में मैंने ॲडमिशन लिया। फर्ग्युसन कॉलेज में। आनंद की बात यह है की जतीन भी मेरे ही क्लास में है। उसे ८४% मिले। अब हम फिरसे साथ है। मैं तो जैसे हवा में उड़ रहा हूँ। मुझे माँ ने सोने की चेन और पिताजी ने इलेक्ट्रॉनिक की-बोर्ड गिफ्ट में दिया।

कल मैंने सपने में देखा की मैं डॉक्टर बन गया हूँ। सुबह देखे हुए सपने सच होते हैं। कल से कॉलेज शुरू होगा।

कॉलेज

कॉलेज शुरू हो गया। मुझे अकेलापन महसूस होने लगा है। वैसे पहचान तो बहुत सारे लड़कों से हो गई है, लेकिन दोस्ती किसी से भी नहीं। इस कॉलेज में मेरे स्कूल से सिर्फ जतीन अकेला आया हैं। लेकिन उससे भी हाय-हॅलो से ज्यादा बात नहीं होती। कभी कभी वैशाली रेस्टॉरंट में मिलता है। तब मैं उसके साथ बात करने की कोशिश करता हूँ लेकिन अब वह स्कूल का जतीन नहीं रहा। बहुत बदल गया है। ज्यादा बात भी नहीं करता। मुझे बड़ा दु:ख होता है। सोचता हूँ, कहीं मैने उसे अनजाने में कुछ बोला तो नहीं। लेकिन ऐसा कुछ याद तो नहीं। जॉन और रवि के साथ वैसे दोस्ती बन रही है।

हमारे क्लास में एक जनाना ढ़ंग का लड़का है। कोई भी उसके साथ नहीं बैठता। उसके बेंच पर वो बेचारा अकेला ही बैठता है। एक दिन अचानक वो मेरे बगल में आ बैठा। मैं इतना बैचेन हो उठा, पुछो मत। वहाँ से उठकर दूसरे बेंच पर जा बैठा। मेरे बारे में नाहक किसी को गलतफहमी न हो जाए।

कोई उस वक्त मुझसे पूछता की, 'यह गलतफहमी क्या होगी? किस प्रकार की?' तो शायद मैं बता नहीं पाता। सिर्फ इतना डर था की उसके साथ मेरा भी मजाक न उड़ाया जाए। साथ ही आम लोगों से कुछ अलग जो रहते है, उनके बारे में जो फोबिया सबके मन में रहता है, अर्थात वो मेरे मन में भी था। बहुत साल के बाद वह फोबिया निकला गया।

विशेष रूप से मुझे लगने लगा है की, मैं 'अलग' हूँ। मुझे सिर्फ लड़के अच्छे लगते है। उनका साथ अच्छा लगता है। मेरी एक भी सहेली नहीं है। लड़कियों से दोस्ती करने को मन करता ही नहीं।

इंग्लिश की मॅडम और फिजिक्स से सर अच्छे हैं। उनका स्वभाव भी अच्छा है। हमेशा मेरी मदद करते है। फिजिक्स के सर कितने खुबसूरत दिखते है। आज मेरे मन में विचार आया, मैं सर के साथ शादी करना चाहता हूँ।

परसो रास्ते में दिखाई दिए थे। एक बार विचार आया आगे हो कर उन से मिलूँ। पर, मालूम नहीं क्यों, आगे हो न पाया। मिलता तो भी क्या बोलता? क्या कहता? वे तो मुझे याद भी नहीं करते होंगे।

उस जनाना ढंग के लड़के का नाम मैं नहीं जानता। उसे सब 'अरी ओ' कहके पुकारते है। उसका औरत जैसा चाल चलना देखकर मुझे तो उससे डरही लगता है। घिन लगती है उससे। लड़के उसका मजाक उड़ाते रहते है। खास करके जतीन। उसका एक ग्रुप है। उसमें चार लड़के और दो लड़कियाँ हैं। दोनों में से एक है नेहा। वो हमेशा जतीन के साथ दिखाई देती है। मुझे उन दोनों से दाह होता है, द्वेष भी लगता है। यह ग्रुप उस 'अरी ओ' को बहुत परेशान करता रहता है। कभी पीछले बेंच पर से उसे काग़ज़ के चीथडे फेक के मारना, कभी सरपर थप्पड मारना। ऐसी हरकतें करते रहते है। उसने पीछे मुड़कर देखा तो सब चूपचाप। वो कुछ नहीं कर पाता। अब वो आखरी बेंच पर बैठता है।

मुझे उसपर दया आने लगी है। किसी का उसने क्या बिगाड़ा है? वो बेचारा न तीन में न तेरह में। आज मैंने जतीन को यह बात बताने की कोशिश की। 'जाने दे ना, जतीन.... क्यों उस बेचारे को परेशान करते हो?' मैंने ऐसा कहते ही जतीन उल्टा मुझपर टूट पड़ा, 'क्यों बे, तुझे क्या पड़ी है उससे? तुम भी उसके जैसे हिजडे हो क्या? कभी कभी तुम पर भी शक होता है मुझे!'

जतीन की झिड़क सुनते ही मैं सहम गया। किस बात पर शक? मेरे हिजडा होने का शक? जॉन कहता है, 'उनका नीचे कुछ नहीं होता है।' मतलब उस 'अरी ओ' का नीचे कुछ भी नहीं होगा? मैं तो बिल्कुल ही वैसा नहीं हूँ। मेरा तो सबकुछ ठिकाने पे है। उधेड बुन में पड़ा हूँ। पूछे तो किससे?

उस लड़के का नाम आखिर तक मुझे मालूम नहीं हुआ। हिजडा शब्द का अर्थ भी उस वक्त मैं समझता नहीं था लेकिन साडी पहने हुए, रास्तों पर भटकने वाले पुरुषों से जतीन मेरा नाम जोड़ रहा है, इस विचार से मैं बेचैन हो उठा था। डर गया था। असुरक्षितता की भावना ने घेर लिया था। अब इतने दिनों बाद जब विचार करता हूँ, तब ध्यान में आता है की हिजडा शब्द का

अर्थ, शायद जतीन भी उस वक्त जानता न होगा। वो सिर्फ नॉनस्टिरीओटिपीकल लड़कों को (मतलब, खास करके जनाना ढंग के लड़कों को) हिजडा कह के चिढ़ाता था। जब मैंने उसे उस वक्त डाँटा, तब उसने जबाब में वही शस्त्र मुझपर उठाया। इस तरह के ब्रह्मास्त्र का सामना करना मेरे बसकी बात न थी। जॉन भी हिजडों के बारे में ज्यादा कुछ जानता नहीं था। इस संबंध अचूक जानकारी मुझे बहुत सालों बाद मिली।

अब दो हिजडे मेरे अच्छे दोस्त है। यह शब्द अब मेरे लिए गाली जैसा नहीं रहा। लेकिन इतनी समझ पाने के लिए सामनेवाले के साथ एक इन्सान के नाते बातचीत होनी जरुरी है। जबतक मेरा मन इसके लिए तैयार नहीं था, तब तक मैं इस फोबिया से छुटकारा नहीं पा सका।

क्लास में बैठने को मन नहीं करता। बाहर घूमने की आदत बढ़ रहीं है। जॉन और रवि के साथ समय कटता है। घर जाता हूँ सिर्फ खाना खाने और रात सोने के लिए।

कभी वैशाली रेस्टॉरंट या रूपाली रेस्टॉरंट या फिर कॅन्टीन में हमारा अड्डा होता है। क्लास बंक करके फिल्म देखना, बाहर खाना पिना तो रोज की बात हो गई है। इधर माँ भुनभुनाती रहती है की, बाहर खाना है तो घर में बताके जाना, रोज रोज घर में बनाया खाना फेंक देना पडता है। लेकिन कोई बताए बाहर खाने का प्रोग्राम कभी पहले से तय होता है क्या? ये तो मूड की बात है । माँ कुछ नहीं समझती।

आज जतीन ने मुझे पूछा, 'क्यो बें तुम्हारा 'होमो' दोस्त कैसा है?' आजकल जतीन के आसपास फटकने से भी मुझे डर लगता है। होमो का मतलब मैं नहीं जानता, लेकिन जरूर कोई गाली ही होगी। घर आया। ऑक्सफर्ड अंग्रेजी मराठी डिक्शनरीं में 'होमो' शब्द का अर्थ देखा। ऐसा शब्द तो वहाँ था नहीं, लेकिन 'होमोजिनाईज्ड' और 'होमोनीम' शब्दों के नीचे एक शब्द दिखाई दिया 'होमोसेक्सश्युअल'। अर्थ दिया था, जिसे समलिंगी लोगों का आकर्षण हो, जो समलिंगी संभोग करना चाहता हो। अरे, यह तो मेरा ही वर्णन है। मैं एकदम सकपका गया। रात ठीक तरह से खाना नहीं खा सका।

उस समय कुछ सुझ नहीं रहा था। बाकी आम लोगों जैसा मैं नहीं हूँ और जतीन गाली जैसा इस शब्द का प्रयोग कर रहा है, इसका मतलब जरूर ही मैं सकदम घटिया हूँ। विकृत हूँ मैं। सोचा, यह कौन से जनम का पाप आज मेरे सर पर नाच रहा है? मैं ही ऐसा क्यों हूँ? सबसे निराला? सोचते सोचते दिमाग खराब हो गया। लगा, क्या मैं इस दुनिया में अकेलाही ऐसा हूँ? अगर और कोई हैं, तो कहाँ हैं वे लोग? किससे बात करूँ? कौन होगा जो मुझे इस बारेमें सही जानकारी दे सकेगा? कौन होगा जो मुझसे नफरत नहीं करेगा?

कल अत्रे सभागृह में एक किताब प्रदर्शनी में गया था। सेक्स एज्युकेशन की एक किताब वहाँ देखी। एक भारतीय डॉक्टर ने लिखी थी। सबकी नजर बचाकर मैंने चुपके से किताब के आखरी पन्ने पर दिया क्रॉस-इंडेक्स देखा। उस में 'होमो' शब्द ढूँढ़ा। वो पूरा पन्ना पढ़ा।

समलैंगिकता को उसमें विकृती बताया था। सलाह दी थी की लड़कों का विचार मन में आते ही, तुरंत उसे रोक देना चाहिए। इस प्रवृत्ति को अगर बदलना है, तो हर रोज आईने के सामने खड़े होकर दोहराते रहने की सलाह दी गई थी की, 'मैं ऐसे घटियाँ खयाल मन में आने नहीं दूँगा।' सीने में एक कसक उठी।

ऐसी गलत सलाह नें मुझे गजब की तकलीफ दी। फायदा रत्तिभर भी नहीं हुआ।

मैं विकृत हूँ। माँ और पिताजी नें कितने प्यार से मेरी परवरिश की। मेरे कारण उन्हें कितना कुछ सहना पड़ा है, और मैं किस तरह उनका किया हुआ वापस चुका रहा हूँ। आज मैं ने भगवान के सामने हाथ जोड़कर कहा, हे भगवान, कुछ भी कर, लेकिन मुझे ठीक कर दे।

अब सहा नहीं जाता। अब भी मैं जतीन और मिलिंद को मनमें लाकर हाथ से करता हूँ। बाद में मुझे मुझसे ही नफरत होती है। जतीन को पता चला तो? उसकी नजर में मैं गिर जाऊँगा। माँ को पता चला तो? कितना दुःख होगा उसे। मैं जिंदा रहनेलायक नहीं हूँ। कोई भी मुझसे प्रेम नहीं करेगा। मैं मर जाना चाहता हूँ। नींद की गोलियाँ खाकर मर जाऊँ तो सभी को छुटकारा मिलेगा।

उस समय पहली बार खुदकुशी का विचार मेरे मन में आया। तब तक पुरुष से प्रेम करने में मुझे कोई परेशानी नहीं थी। लेकिन जतीन ने जो सवाल मेरे मुँह पर मारा, उससे मुझे साफ दिखाई दिया की मेरी यह भावना समाजमान्य नहीं है। गर्हणीय, तिरस्कृत है। एक क्षण में मेरा आत्मसम्मान जलकर खाक हो गया।

जतीन अब भी मुझे 'क्यो रे, कैसा है तेरा 'होमो' दोस्त?' यह व्यंग्यभरा प्रश्न पूछता है क्योंकि तुरंत उसे मेरी आँखो में भय की भावना दिखाई देती है।

दूसरों को असुरक्षित करके, खुदके सुरक्षित होने का आभास निर्माण करने का गुण कुछ लोगों में बडे पैमाने में होता है। आज तक नियमित रुप से यह बात मैं अलग अलग पहलू में देखता आया हूँ। लगता था की बढ़ती उम्र के साथ यह असुरक्षितता का सहसास कम होता होगा। लेकिन ऐसा नहीं होता। कुछ लोगों की पूरी जिंदगी ही दूसरों की असुरक्षितता के भरोसे होती है। Like a parasite, they feed on someone's insecurity.

आजकल दोस्तों के ग्रुप में मन बहलता नहीं। मैं अलग प्रकार का हूँ, सबसे जुदा किस्म का हूँ इस विचार का किडा मन में भुनभुनाता रहता है।

.....

पढ़ाई से मन उड़ गया है। अंग्रेजी, फिजिक्स और मराठी में ठीक मार्क्स है। लेकिन बाकी के विषयों में मैं जैसे तैसे सिर्फ पास हो गया हूँ। घरवाले परेशान है, आखिर मुझे हो क्या गया है। पिताजी ने अच्छी डाँट भरी, माँ भी नाराज है। उन्होंने इस सबकी वजह पूछी- कही बुरी संगती में तो तुम नहीं फँसे हो?, शराब पी रहे हो क्या?, जुअे की लत तो नहीं? या प्रायव्हेट क्लास में अच्छा पढ़ाते नहीं? मैं होंठ सिलाकर चूप। क्या बताऊँ? और कैसे? अब कुछ करने को जी करता ही नहीं। कुछ आकांक्षा रही नहीं। अंदर से मर गया हूँ मैं। शिक्षा लेकर भी क्या करूँगा? क्या मतलब रहा है इस तरह से जिने का?

हर रोज सुबह आईने के सामने खड़े रहकर कहता हूँ, 'मैं बुरे खयाल मन में नहीं आने दूँगा।' लड़कियों के बारे में सोचने की कोशिश करता हूँ। लड़कों को

विचारों में लाना छोड़ दिया है। पुरुषों के अंडरवेअर के विज्ञापन देखता नहीं। फिल्मस देखना बंद कर दिया है। पढ़ाई में मन लगा रहा हूँ। देखते है इससे क्या होता है।

जो होना था, वही हुआ। मसलन कुछ भी नहीं हो पाया। इतनी दृढता से किया हुआ मन का नियंत्रण कोई भी फायदा न दे सका।

इम्तिहान हो गए। कम-से-कम पास हो जाऊँ तो भगवान की मेहेरबानी। एक साल बेकार तो नहीं जाएगा। आज बीसीएल-ब्रिटिश कौन्सिल लायब्रेरी में नाम दाखिल कराया। पूरा दिन वहीं पे गुजारा। मेडिकल, सायकिअॅट्री सेक्शन से किताबें पढ़ी। आसपास कोई न था, तब 'होमोसेक्सश्युॲलीटी' पर लिखे सेक्शन पढ़े। किताबों में इसे 'डिसऑर्डर' कहा है। मेरी भावना 'डिसऑर्डर'? क्यों? इतने सच्चे दिल से मैं प्रेम कर रहा हूँ तो वह प्रेम विकृत कैसे हो सकता है? अर्थात किताबों में लिखा है, तो मेरा प्रेम विकृत ही होगा।

बहुत वर्षो को बाद समझ में आ गया की, पहले समलिंगी होना सायकीअॅट्री में डिसऑर्डर ही माना जाता था लेकिन अब यह दृष्टिकोण बदल गया है। ए.पी.ए. मतलब 'अमेरिकन सायकिअॅट्रिक असोसिएशन' ने मान लिया है की समलिंगी होना कोई बीमारी नहीं है। और डिसऑर्डर्स की उनकी लिस्टमें से इसे निकाल दिया है।

"Homosexuality per se implies no impairment in judgment, stability, reliability' or general social or vocational capabilities, therefore, it be resolved that the American Psychiatric Association deplores all public and private discrimination against homosexuals in such areas as employment, housing, public accommodation and licensing and declares that no burden of proof of such judgement, capacity, or reliability shall be placed on homosexuals greater than that imposed on any other persons...."

परंतु पाश्चात्य देशों से आए हुए इस विचार का प्रचार-प्रसार हमारे देश में आज भी हुआ नहीं है। या फिर ऐसा भी हो सकता है की, विचार पहुँच भी गया हो लेकिन उस पर नॉन जजमेंटल और नॉन डिस्क्रीमिनेटरी दृष्टिकोण से देखने की जरूरत किसी को महसूस नहीं हुई है। क्योंकि अपने यहाँ आज भी लगभग डॉक्टर्स समलैंगिकता को 'बीमारी' मानते हैं। कितनी खेद भरी बात है यह।

मैं पास हो गया। हम लोग तुलजापुर जाकर देवी के दर्शन कर आए।

कल से कॉलेज खुलेगा। मेरा दिल धकधक कर रहा है। हात-पाँव जैसे लुले-लँगडे पड़ गए हैं। ताकत ही नहीं रही। कब कॉलेज जाऊँगा और जतीन से मिलूँगा - बेताबी हो रही है। दुसरी तरफ अपने ही बारे में कितनी घृणा लग रही है।

आज कॉलेज शुरू हो गया। जतीन को देखे दो महिने हो गए है। उसे मिलने बहुत उत्सुक था। लेकिन निराशा ही हुई। जतीन आ गया वो भी नेहा के साथ। मैंने आगे होकर उसे 'हाय' किया, तो उल्टा उसने वही सवाल किया, 'क्यों कैसा है तेरा होमो दोस्त?' नेहा खी खी करके हँसने लगी। ये साली हमेशा जतीन के साथ रहती हैं। मुझे लगा, खुदकुशी कर दूँ।

उन दिनों इंटरनेट नहीं था। मोबाईल फोन भी नहीं थे। एक बार छुट्टि हो जाने के बाद किसीको मिलना हो, तो दूसरे साल में फिरसे कॉलेज शुरू होनेके बाद। वो दिन अब भी मैं भुला नहीं हूँ। उस दिन घर आकर मैं बहुत रोया था। उसके मन में, मेरे लिए कोई भी ऐसी भावना नहीं है, यह एक दुःख था। मैं जिसे प्रेम करता हूँ, वह उसे एक विकृति समझता है, यह दूसरा दुःख। और तिसरा दुःख था, मैं उसे बता भी नहीं सकता, कि मैं उससे प्यार करता हूँ। उस रात फिर एक बार खुदकुशी करने के विचार मन में मँडराने लगे थे।

क्लासेस शुरू हो गए हैं। बारहवीं का यह महत्त्वपूर्ण वर्ष और मेरा ध्यान कहीं ओर! किसी डॉक्टर के पास जाए क्या? लेकिन उन्हें क्या बताऊँगा? कैसे बताऊँगा? किसी पराए व्यक्ति को मैं बता नहीं पाऊँगा की मेरे मन में 'होमो'

भावनाएँ जगती है। क्या करू, समझ में नहीं आ रहा है। दिन के उजाले से भी मन ऊब गया है। आजकल मैं बेडरूम का दरवाजा बंद करे, पर्दे ओढ़ के कमरे में अँधेरा करता हूँ और लेटा रहता हूँ। उधर माँ-पिताजी सोचते हैं की मैं अंदर पढ़ाई में मशगुल हूँ। सेमिस्टर सर पर है और मैं हाथों पे हाथ धरे बैठा हूँ। जाने दो। जो होना है सो हो जाएगा।

ये और आगे के दो-तीन साल मेरे लिए सबसे घटिया वक्त था। उन बुरे दिनों के बारे में आज सोचने पर भी मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

आज एक भयंकर घटना घटी। हम कुछ दोस्त लॉ कॉलेज के पीछले टीले पर घुमने गए थे। जतीन का ग्रुप हमारे आगे ही चल रहा था। 'अरी ओ' एक बड़े से पत्थर पर बैठकर कुछ लिख रहा था। जतीन ने उसे छेड़ा। बेवजह। उसकी कापी छीन ली। पढ़ने लगा। वह कोई कविता थी। जतीन उसे चिढ़ाने लगा। 'क्यो बें, कविता करता है क्या? बोल, लड़का हो या लड़की?' जतीन के ग्रुप के बाकी दोस्त हँसने लगे। हमारा ग्रुप रूक गया। वो लड़का उसकी कापी वापस माँग रहा था। जतीन बोला, 'दे दूँगा, लेकिन पहले यह बता की तू लड़का है या लड़की?' वह लड़का झेंप गया। उसपर श्रीपाल बोला, 'क्यो अरी ओ, बता नहीं सकता?' सबके ठहाके बढ़ गए। इधर मेरे तो पसीने छूँटने लगे। हाथ पाँव काँपने लगे। जतीन बोला, 'ठीक है, तू बोलता नहीं तो हम ही छान बीन कर लेते है-पकड़ो साले को।' नेहा, श्रीपाल, सत्यजीत ने उसे पकड़ा। वह डर गया, रोने लगा। 'छोड़ दो मुझे' कहकर पाँव पकडने लगा। जतीन ने उसे पँट की चेन निकालकर पँट नीचे खींच ली। जतीन को पकड़ से छुटकारा पाने के लिए बेचारा बहुत उठापटक कर रहा था। जतीन ने उसे एक जोरदार तमाचा मारा और उसका जाँघिया नीचे कर दिया। फिर जतीन उसे दुलारने लगा। 'ओ मेले बच्चे क्या हुआ? लोना नहीं हा। छोटा काजू है ना?.... फिर लड़की जैसे क्यों रहते हो? और अगर लड़की बनके रहने का इतना शौक है तो अच्छी लड़की बनकर मेरे नीचे से जाने का, समझे!... होमो साला।' मैं बीच में पड़ना चाहता था लेकिन उस लड़के की हिमायत कर सकूँ, इतनी हिम्मत मुझमें कहाँ? डर था, अगर मेरा भी जाँघिया निकाला गया तो? मैं, जॉन और रवी तुरंत वहाँ से दफा हो गए। बेवजह हमारा नाम इस छीना-झपटी से जुड़ न जाए। मुझे, मुझपर, जतीन, नेहा, श्रीपाल, सत्यजीत, जॉन, रवी-सभीपर शर्म आ रही है।

वह घटना आज भी मेरे आखों के सामने ज्यों की त्यों खड़ी है। कुछ करने की थोड़ी भी कोशिश मैंने उस वक्त नहीं की। गुमसुम देखता रह गया। और भगवान जाने, जतीन और उसके दोस्तो नें इसमें क्या पुरुषार्थ दिखाया? क्या वह लड़का 'गे' था? मालूम नहीं।

इस तरह के जनानी लड़कों को खूब परेशानी भुगतनी पड़ती है। मर्दाना बर्ताव रखने के लिए घरवालों की, दोस्तों की तरफ से दबाव रहता है। कोई भी उनका पक्षधर नहीं होता। उनके इस स्वभाव के कारण उन्हें मार खानी पड़ती है, उड़ाया गया मजाक सहना पता है। हम सब चाहते है की बच्चे हो तो सिर्फ 'कस्टम मेड'। नॉनस्टिरिओटिपीकल बच्चे कोई नहीं चाहता। दोष उन बच्चों का नहीं, हमारा है।

हमारा एकाध इंटरसेक्स बच्चा हो गया, तो हम उसे अनाथाश्रम में पटक देंगे। गर्भ रहते ही अगर सेक्शुअल ओरिएंटेशन की कोई टेस्ट होती, तो हम समलिंगी बच्चों का गर्भपात ही करासँगे। लैंगिकता के वर्कशॉप में इस तरह की प्रतिक्रियाएँ मुझे हजारो बार सुनने को मिलती है। कभी-कभी मन में सवाल उठता है, क्या पालक बनने की हमारी हैसियत है?

मुझे मुझसे ही घिन हो रही है और अब तो मुझे जतीन और बाकी लड़कों से भी नफरत हो रही है। मेरे लिए और बाकी सबके लिए मन में सिर्फ द्वेष की भावना उभरती है। मैं और बाकी लड़के सिर्फ देखते रहें। उस लड़के की मद्द के लिए हम में से एक भी आगे नहीं हुआ। कैसे मर्द हैं ये? फिर मेरे जैसे 'होमो' क्या बुरे है? कम-से-कम हम किसी को परेशान तो नहीं करते? अब जतीन की तरफ देखा नहीं जाता। लगता है एक बेनाम पत्र लिखकर प्रिन्सिपॉल को सब बता दूँ लेकिन वो एकदम निकम्मा है। कुछ फायदा नहीं होगा।

वह लड़का फिर से कॉलेज में दिखाई नहीं दिया। मुझे भय था, अगर उसने कम्प्लेंट की तो? लेकिन वो क्या कम्प्लेंट करे बेचारा। हो सकता है, जतीन ही उसपर उल्टा इल्जाम रख दे की

उसीने मेरे साथ छेड़-खानी की। बाकी के लड़कें जतीन का ही पक्ष लेंगे और उसके बाद? पता नहीं जतीन उसे अकेला पकड़कर उससे क्या सलूक करेगा। हे भगवान। इस घटना के बाद मेरी निराशा और बढ़ गई। कितना सुंदर और मासूम लगता था जतीन लेकिन असल में इतना नीच, इतना गिरा हुआ है, इस बात पर यकिन करना भी मुश्किल हो रहा था। यह वस्तुस्थिती स्वीकारना मुझे भारी पड़ रहा था। वैसे उसके रंग इस घटना से पहले ही दिखाई देने लगे थे। लेकिन मेरा ही प्रेम अंधा था।

अगर मैं लड़की होता तो? अगर जतीन के मन में मैं भर गया होता तो? तो क्या मैं उससे लैंगिक संबंध रखने के लिए राजी होता? अगर वो कहता कि 'चलो, हम भाग जाते है और चुपचाप शादी कर लेते हैं', तो क्या मैं यह शादी करता? हाँ, जरूर कर लेता। और फिर बाद में? बाद में होश आ जाते, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती। सुंदर शरीर हमें कितना लुभाता है, आशिक बनाता है और हमें कितना बहकाता है।

जिंदगी से उब गया हूँ मैं। एक तरफ जतीन से द्वेष हो रहा है लेकिन दूसरी तरफ उसको लेकर मेरी लैंगिक भावनाएँ और ही बढ़ती जा रही है। जतीन ने जिस जबरदस्ती से उस लड़के का जाँघिया उतारा था, वही जबरदस्ती जतीन मुझसे बरतें, मुझपर थूँके, अधिकार जताकर मुझे नंगा करे, मार धाड़ करे, मुझसे बलात्कार करे, इस तरह की भावनाएँ मनमें उठती रहती है। और 'वो' तन जाता है।

आजकल सेहत बारबार खराब होती है। हर तीन-चार हफ्तों बाद मैं बीमार पडता हूँ। वजन कम होता जा रहा है। इन दिनों डायरी लिखने की भी इच्छा नहीं होती।

आज फिरसे लिखने बैठा। डायरी-को छोड़कर और है कौन मेरे लिए, जिससे मन की बातें कह सकूँ। परीक्षा खत्म हो गई। गणित का पर्चा मैं कुछ भी लिखे बगैर कोरा छोड़ के आया हूँ। बाहर कहीं टहलता रहा और वक्तपर घर आ गया। घरवाले चाहते हैं, मैं मेडीकल में प्रवेश ले लूँ।

आज एक लड़का मिला। ग्यारहवीं कक्षा का। नाम है अनिकेत। यह उसका असली नाम है या नहीं मुझे पता नहीं। रूपाली रेस्टॉरंट में मेरी तरफ टुकटुकी लगाकर देख रहा था। शुरू में मैंने अनदेखी कर दी। लड़कों की आँखों मे आँख डालकर उनकी तरफ देखने की हिम्मत मुझ में नहीं है। डर लगता है। फिर थोड़ा साहस बटोरकर मैंने चोरी-चोरी उसकी तरफ देखा। वो हल्का-सा हँस दिया और उसने गर्दन हिलाई।

दोस्तों के साथ मैं बाहर आ गया और थोडा पीछे रहा। वह मेरे पीछे आया। बी.सी.एल. के सामने जो बेंच है उसपर मैं बैठ गया। वह बगल में आ बैठा। 'तुम्हारी शर्ट अच्छी है', वह बोला । मैंने संकोच से थँक्यू कह दिया। आँख उठाकर पहली बार उसकी तरफ देखा। दिखने में वो साधारण था। उसने कहा, 'एफ. सी. में हो ना? बारहवीं में?.... मैं ग्यारहवीं में हूँ।'

आजकल हम दोनों साथ घुमते हैं। खाना खाने, फिल्म देखने साथ जाते हैं। मैं भावनिक दृष्टि से उससे दोस्ती करना चाहता हूँ लेकिन उसे मेरी भावनाओं से कुछ लेना देना नहीं। जैसे उसकी कोई भावनाएँ हैं ही नहीं। ज्यादा बात भी नहीं करता। वह मेरे साथ सिर्फ सेक्स करना चाहता है।

एक आधी अधुरी बिल्डिंग की साईटपर वह आज मुझे ले गया। सातवें माले पर टेरेस पे हम पहुँचे। पानी की टंकी के नीचे बैठ गए। मैं घबराया-सा था कि कोई आया तो?.....

बाद में हमने एक दूसरे को अपने फोन नंबर दिए। मेरा नंबर देते वक्त थोड़ी घबराहट हुई, लेकिन न दूँ तो वह हाथ से निकल जाएगा, इस डर से दे दिया।

अनिकेत और मैं आजकल लगातार मिलते रहते है। लेकिन मेरी भावनिक भूख पूरी नहीं होती। मन खाली-खाली सा रहता है। लगता है उसकी बाहों में सुकून की साँस लू, उसके बाल सहलता रहूँ। पर वो मेरे साथ होता है तब एक पत्थर बनकर रह जाता है। उसकी कोई भावानाएँ है कि नहीं? या फिर उन्हें व्यक्त करने से घबराता है? क्या इस रिश्ते से डरता है? कुछ बोलने पर मैं उसे मजबूर करने की बहुत कोशिश करता हूँ, मगर वह टस से मस नहीं होता। उसे सिर्फ उसके काम से मतलब। वैसे मैं जान गया हूँ कि उसे अपनी लैंगिकता पर शरम है। अपराध की भावना है। खुद के बारे में बहुत द्वेष भरा हुआ है। उसके मन में उसकी जब मर्जी हो जाए, मुझे फोन करता है, कही ले जाता है....

मैंने फोन किया, तो कभी ठीक तरह से जबाब भी नहीं देता। कुछ न कुछ बहाना बना के आने की बात टाल देता है। मतलब, जब वह चाहता है तभी हम मिलते हैं। लगने लगा है कि वो मेरा इस्तेमाल कर रहा है। आज मैंने मेरी यह भावना उससे कह दी। उसपर उसका तपाक से जबाब आया, मैंने कोई जबरदस्ती नहीं की है और झटसे निकल गया। मैं रोने लगा। समझ में नहीं आ रहा है मेरी क्या गलती हो रही है।

जितना था उससे और डिप्रेशन में मैं डूब गया।

मैं उसे बार बार फोन करता रहता हूँ। वह उधर से फोन पटक देता है। आज उससे वैशाली में मिलने का प्रयत्न किया, 'मुझे तुमसे कुछ बात करनी है' मैंने कहा। 'तो फिर बोल न यही पे' उसने उत्तर दिया। क्या बोलूँ? और यहाँ, इस जगह? मुझे वो चाहिए और उसे यह बात पक्की मालूम है। इसीलिए इस तरह मुझे क्लेश दे रहा है। बेरहम है साला। भड़वा।

.....

परसो मेरे मौसेरे भाई की शादी है। रिश्तेदार के शादी-ब्याह समारोह में मुझे तनिक भी इंटरेस्ट नहीं। शादी के लिए बाहरगाँव से मेहमान आने वाले हैं। उधर शादी के हॉल में जगह तंग है, इसलिए कुछ लोग हमारे घर ठहरने वाले हैं। मेहमान आनेवाले है, तो माँ पिछला पूरा हफ्ता घर ठीक-ठाक, साफ-सुथरा करने में लगी है। मेरा कमरा जब उसने समेटा, तब मैं घर नहीं था। मैंने खूब शोरगुल मचाया, लेकिन कोई फायदा नहीं। ये घरवाले प्रायव्हसी नाम की चीज जैसे समझते ही नहीं।

आज मेहमान निकल गए। छुटकारा-सा लगा। उनमें से एक थी जो हर वक्त मेरी तरफ ही देखती रहती। उसका पूरा ध्यान मेरी तरफ ही लगा हुआ था। चार दिन से देख रहा था, हमेशा मुझसे हेलमेल करने की कोशिश में थी। कभी पेड़ा लाके देगी, कभी मेहंदी मुझे दिखाने के बहाने पास आएगी, कभी मेरे कपडों में इस्त्री करने का बहाना, लगातार कुछ न कुछ बहाने मेरे आसपास आती थी। मेरे साथ एक फोटो भी खिंचवाई। लग रहा था, कब यह डायन टलेगी।

कितना इन्सेन्सिटीव था मैं।

रिश्तेदार एक पूरा हफ्ता हमारे साथ रहे लेकिन इधर-उधर के दो-चार शब्द से ज्यादा उनसे बात नहीं की। माँ हल्की-हल्की सी आवाज में कहती रहती, 'अरे,

कुछ बातें करो उनसे। इस तरह की लापरवाही से पेश आना ठीक नहीं', वगैरा। मैंने झट से बोल दिया, 'तो उन्हें होटल में ठहरना था। क्यों आए हमारे घर?' मेहमान निकल गए और हमारे घर में खुब झगड़ा हुआ। मैंने माँ-पिताजी को गाली-गलौज सुनवाई। पिताजी गुस्सा हो गए और मुझे मारा। मेरा बाप मुझपर हाथ उठाता है-साला। अच्छा हुआ उनको मेरे जैसा बेटा हुआ। यही उनकी हैसियत है।'

रिजल्ट आ गया। घरवालों को बड़ा धक्का लगा। पिताजी ने फिरसे मुझे पीटा। मुझपर हाथ उठाना आजकल उनके लिए रोज का काम हो गया है और मैं हूँ एक निगोड़ा चुपचाप मार खा लेता हूँ। अब मुझे रोना भी नहीं आता। इसमें माँ को बड़ी पीड़ा होती है। उसकी समझ में नहीं आ रहा है, मेरा चालचलन ऐसा क्यों हो गया है? मैं क्यों इस तरह बदल गया हूँ। मैं बता भी तो नहीं सकता। आज शाम को उपर टेरेस पर गया। चौथा माला। टंकी पर चढ़कर खड़ा था। झुककर नीचे देखा। बस चार-पाँच सेकंड की ही तो बात है-सबकुछ खतम हो जाएगा। दो-चार सेकंड गिरकर नीचेतक जाने के लिए, एक दो सेकंड की असह्य वेदना और फिर घना अंध:कार। उधर लोग कहेंगे बारहवीं में फेल हो गया, इसी कारण जान दे दी बेचारे ने। एक पाँव आगे बढ़ाया। नीचे देखकर कुछ चक्कर-सा आने लगा। पाँव में कंपकंपी होने लगी। कुदने की हिम्मत जुट न रही थी। फिर पीछे हटा और झट से नीचे बैठ गया। खुदकुशी करने की भी हिम्मत मुझमें नहीं। यह कैसी जिंदगी है, लानत है मुझपर।

आज बड़ी कृतार्थता लग रही है, कि उस दिन मैंने खुदकुशी नहीं की लेकिन उस दिन मैं इस बात के कितने करीब पहुँचा था। मेरे पास उस वक्त जीने के लिए कोई कारण ही नहीं था। किसी व्यक्ति पर उसकी लैंगिकता के कारण जान देने की नौबत आए, यह बात समाज कैसे सहन कर सकता है? मेरे जैसे कितने लड़के-लड़कियोंने इसी कारण खुदकुशी की होगी? ('आखीर उसे किस बात की कमी थी? न चिट्ठी, न खत। क्या कारण था, समझ में ही नहीं आ रहा है।') एक इन्सान के नाते, हमारे बच्चों को वह जैसे है, वैसे ही उनका स्वीकार अगर हम नहीं कर सकते तो फिर बाकी परवरिश व्यर्थ है।

.....

क्यों न सन्यास ले लूँ? आज कल यही एक विचार मन में आता रहता है। यहाँ पास में ही एक मठ है। वहाँ जाने लगा हूँ। सोचा, जीने के लिए कोई अच्छा कारण मिल जाएगा। पिछले जनम के सारे पाप धुल जाएँगे। हर रोज तीन घंटे वहाँ जाकर सेवा करता हूँ। झाड़ू-पोछा लगाना, सबको तीर्थ देना और बाकी ऐसा-वैसा जो कुछ काम बताया जाएगा, कर लेता हूँ। संन्यास के बारें में घरवालों से अभी कुछ कहा नहीं है, लेकिन कम-से-कम मैं पूजा-पाठ, आश्रम मे लगा हूँ, तो मुझे सद्‌बुद्‌धि मिल जाएगी, इस विचार से घरवाले भी कुछ कहते नहीं है।

बचपन में मनपर हुए पाप-पुण्य के संस्कार इतनी आसानी से थोड़े ही निकल जाते हैं? तीर्थ-प्रसाद से किसी को मुक्ति नहीं मिलती, यह बात जल्द ही मेरी समझ में आ गई।

यहाँ आश्रम में सब काम मुझसे करवा लेते है और खुद हमेशा आगे- लोगों से पाँव छुआ लेने के लिए। यहाँ के शिष्यगणों में एक दूसरे के लिए दाह की भावना देखता हूँ।

जितना क्रोध, दाह, अहंकार यहाँ महसूस हुआ, उतना बाहर दुनियाभर में भी देखने को नहीं मिलेगा।

आश्रम में एक आदमी है, परमानंद। होगा करीब साठ साल का। उसने पच्चीस की उमर में संन्यास ले लिया है। है बहुत हट्‌टाकट्‌टा। उसकी नजर लगातार मेरी तरफ लगी रहती है। कभी-कभी अनायास उसका हाथ मेरे चूतडपर आ जाता है। पहले मुझे लगता था, यह बात अनजानें मे हो रही है। लेकिन अब मैं जान गया हूँ कि उसे मुझमें 'इंटरेस्ट' है। उसका मुझे छुना तक मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है। मैं उससे दूर दूर ही रहता हूँ।

आश्रम में काम बढ़ गया है। सारे काम ढोने के लिए मैं अकेला हूँ क्या? मन कर रहा है आश्रम में जाना छोड़ दूँ।

कल से आश्रम नहीं जाऊँगा। संन्यास का विचार भी कॅन्सल। वैसे पैंतीस साल तक संन्यासी बनकर रहने कें बाद भी परमानंद को क्या मिला? पैंतीस साल लगातार शरीर भुखा रखकर भी उसका पुरुषों का आकर्षण कम नहीं हो सका, तो मेरा और क्या होगा? एक तरफ शरीर की भूख और दूसरी तरफ संन्यास का ढोंग इस प्रकार का दोहरा मापदंड रखने से बेहतर है, आश्रमसे दूर रहके कुछ न कुछ करू। कम-

से-कम यहाँ आश्रम में रहकर सत्कर्म करने के नाम पर औरों से धोखाधडी तो नहीं होगी।

माँ-पिताजी लगातार पूछ रहे हैं, आगे क्या करने जा रहे हो? मेरे पास कोई ठोस उत्तर नहीं।

पिछले हफ्ते अनिकेत का फोन आया। फिरसे हमारा मिलने का सिलसिला शुरू हो गया है। कोई भी साथी न होने से, अनिकेत भी अच्छा लगता है। क्योंकि अकेले रहना नामुमकीन लग रहा है। आज उसने मुझसे पचास रूपये उधार लिए। बोला, किताब के लिए चाहिए। मैंने भी खुशी से दे दिए। अनिकेत कैसा भी हो, मुझे अच्छा लगता है। वो ही अकेला है, जो इस दुनिया में मुझे करीब आने देता है।

पुरानी किताबों की दूकान से कल हम एक मॅगेझिन लाए। 'होमो लव्ह'। कहाँ क्या मिलता है यह अनिकेत सब जानता है। हम जैसे पुरुष कहाँ मिलते है, पुरुष समलिंगी वेश्याव्यवसाय कहाँ पर चलता है, उसे सब बातें मालूम रहती हैं। उसने मुझे यह सब जगह दिखाई हैं।

मॅगेझिन के सौ रूपये मैनें ही दिए। उस में बीस पच्चीस की उमर के गोरे मर्दो के सुंदर नग्न फोटो है। होमो ब्ल्यू फिल्म कहाँ मिलती हैं इसका भी अनिकेत को पता है। मैं भी ऐसी फिल्म देखना चाहता हूँ, पर सवाल है, कहाँ देखू? अभी वह मॅगेझिन उसके पास है। बाद में ले लूँगा।

एक हफ्ता हो गया। अनिकेत बाहर गाँव गया है। उसकी बहुत याद आ रही है।

कल मैंने अनिकेत को एक दूसरे लड़के के साथ कार में देखा। उसका ध्यान नहीं था। मुझे बहुत गुस्सा आया है। मुझे कह गया था कि 'बाहर गाँव जा रहा हूँ'। अब आने दो उसे देखता हूँ। कार में वही था। सिग्नल के लिए चौराहे पर मेरे बगल में ही रूका था। एक बार सोचा कि, कार की काँच पर टकटक करके उसे पुकारूँ । पर, वो इतना अचानक दिखाई दिया था, की मैं खुद को संभल नहीं पा रहा था, कुछ समझ में न आ रहा था, क्या करूँ, क्या करना चाहिए। रातभर सो न सका।

आज हम मिले, तो मैंने उसे पूछा, 'कैसा रहा तुम्हारा सफर?' तो बोला 'अच्छा रहा।' उसने सफर के बारे में एकदम डीटेल में बताया। मैंने अगर उसे देखा

न होता, तो मैं भी उस पर यकीन कर लेता। लेकिन मैंने उसे देखने के बारे में कुछ न कहा। उससे झगडा मोल लेने की हिम्मत नहीं होती। लगता है अगर उससे लडू तो वह मुझे छोड़ देगा। मेरा बॉयफ्रेंड किसी और के साथ है यह मैं देख नहीं सकता। इस बात से मुझे बहुत जलन हो रही है। आज मैने वो पोर्नोग्राफिक मॅगेझिन उससे ले लिया। घर लाकर, बेडरूम में अलमारी है उसके पीछे छुपा दिया है।

कल उसने मुझसे सौ रूपये लिए। पीछले पैसे अभीतक वापस नहीं किए है।

अलमारी में से चुराकर मैं अनिकेत को पैसे देता रहता था। मैं उस वक्त इतना भोला-भाला, अधपगला था, समझता था उसे पैसे देते रहने से वो मेरे साथ रहेगा। नही छोड़ेगा मुझे। लेकिन जल्द ही इस मामले में अक्ल ठिकाने आ गई।

.....

माँ ने फटकार दिया है। दो टूक बात कह दी है की यहाँ मुझे फोकट में खाना पिना नहीं मिलेगा। बढ़ती उमर के साथ मेरी जिम्मेदारी मैंने समझ लेनी चाहिए। पिताजी मेरे साथ एक शब्द भी नहीं बोलते।

माँ की एक सहेली है जिसके पति का गराज है। आज माँ मुझे उस गराज में ले गई थी। वहा काम की बात हुई। उन्होनें बताया पहले तीन महिनों तक तनख्वाह नहीं मिलेगी। लेकिन अनुभव तो मिलेगा। गाडियाँ धोने का काम है।

आज से मैं काम पर जाने लगा। गाडी धोनें में वैसे शर्म आती है। पिताजी भी नहीं चाहते की मैं यह काम करूँ। लेकिन माँ है, कुछ सुनने को तैयार ही नहीं।

गराज में मुझे परेशानी होती है। वहाँ के लड़के मुझे सताते रहते हैं। छोटे-छोटे काम भी मैं नहीं कर सकता, कहकर मेरा मजाक उड़ाने रहते हैं। उनमें से दो हैं जिनके बारे में मुझे आकर्षण लगता है। एक है एकदम निकम्मा। उसकी तरफ देखते ही मुझे, न जाने क्यों जतीन याद आता है। दूसरा है राजू, वो एकदम भलामानस है। मेरी मदद करता है। कोई मुझे तंग करने लगा, तो उसे फटकारता है। गराज में काम करते करते मैं थक जाता हूँ। पूरा बदन दर्द करता है।

अनंत चतुर्दशी के लिए मौसी, चाचा और चाची आए हैं। मैं तो पक गया हूँ इन लोगों से। चाचा के घर दो दिन भी जाओ तो चाची तबीयत खराब होने का नाटक

करती है और माँ को ही चूल्हा सँभालना पड़ता है। चाची कुछ काम नहीं करती। भगवान जाने, ऐसे रिश्तेदार हमारे ही भाग में क्यों लिखे हैं। पिताजी ने सबको बताया की मैं 'मैकेनिक' हूँ।

आज मेहमानों की टोली टल गई। अच्छा होता उनका गाडी का ॲक्सिडेंट हो जाता। काश, ऐसा हो ही जाता तो यह बला हमेशा के लिए समाप्त होती।

चाची का फोन आया की वो लोग सुरक्षित घर पहुँच गए। मेरे नसीब में सुख लिखा ही नहीं है।

अनिकेत सिर्फ पैसे माँगने के लिए ही बुलाता है। आज थोड़ी हिम्मत बाँधकर मैंने पैसे देने से इन्कार कर दिया। मालूम नहीं इतना साहस मैं कैसे जुटा पाया। उसने मुझे धमकाया, 'अगर नहीं दोगे तो घर में सब बता दूँगा!' ब्लॅकमेल! मैं सकपका गया। कुछ बोल नहीं पाया। वह बोला, 'चुपचाप दो सौ रूपये निकाल, नहीं तो....' मैं एकटक उसकी तरफ देखता रहा। वह पत्थर की तरह खड़ा था। यकायक मुझे गुस्सा आया। मैंने तपाक से जबाब दिया 'नहीं देता जा, क्या करेगा? कर ले तुझे जो कुछ करना है!'

ब्लॅकमेल का शिकार होना महँगा पड़ता है। ब्लॅकमेलर को पैसे की लत लगती है और उससे छुटकारा पाना मुश्किल होता है।

वह चिढ़ गया। गालियाँ देने लगा। मैंने कल्पना भी न की थी की उसके मन में मेरे बारे में इतना द्वेष भरा हुआ होगा। कहने लगा, 'गांडू, साला दूसरों से पिटवाए जाने की ही औकात है तेरी! मुझे तरस आ रही थी तुझ पर, इसलिए तेरे साथ रहा।' बोलते बोलते उसने मुझे एक तमाचा मारा और वहाँ से निकल गया। मेरा बदन गरमा गया। दम घुटने लगा। गला रूँध गया। लगा किसी के पास दिल खोलकर बात करूँ।

बार बार मुझे समलिंगी लोगों के लिए कोई सुरक्षित जगह की (सेफ गे स्पेस) जरूरत महसूस हो रही थी। उस समय आज जैसे 'सपोर्ट ग्रुप्स' नही थें।

आज जरा ठीक लग रहा है। पिछला पूरा हप्ता बहुत जोरों का बुखार आया था। चार डिग्री तक बुखार चढ़ा था। अब बुखार निकल गया है, पर थकान है।

गराज में काम की अब आदत पड़ गई है। अब वहाँ के लडके भी मुझे परेशान नहीं करते। मैं भी मन लगाकर काम करता हूँ। मालिक ने आज मुझे गाडी धोने के काम के बजाए, एक मैकेनिक के साथ काम करने को कहा। गाडी दुरूस्त करना मुझे अच्छा लगता है। यह काम मेरी पसंद का है।

वजन कम हुआ है। बदन गठील होता जा रहा है। नसें गदरा गई है। कभी-कभी बेडरूम में खुदको बंद करके, आईने के सामने सब कपडे उतारकर मेरा बदन देखता हूँ। शरीर पर हाथ फेरता हूँ तो बड़ा अच्छा लगता है। मेरे शरीर से प्रेम हो गया है। अगर मैं कोई और होता, तो मुझे मेरे साथ सेक्स करना पसंद होता।

इस महिनें में मुझे तीन सौ रूपये मिले। माँ और पिताजी को बाहर होटल में खाना खिलाया। अब घरवालों का गुस्सा कम हो रहा है। इधर मेरा आत्मविश्वास बढ़ता जा रहा है।

मुझे जरूरत है एक साथीदार की । ऐसा जो मेरे साथ एकनिष्ठ रहेगा। वफादारी निभाएगा। हमारा एक दूसरे से प्रेम होगा। सिर्फ शारिरीक नहीं, भावनिक रिश्ता भी होना चाहिए। अपनापन होना चाहिए। ऐसा लड़का कहाँ मिलेगा? जिंदगी भर अकेले रहना मेरे लिए मुश्किल है। मुझसे अकेलापन नहीं सहा जाएगा।

कल हम सब एक शादी में गए थे। वहाँ एक मौसी बीच में पिनपिनाई, 'अब इसकी बारी, कर दो इसकी शादी'। यह चुगलखोर वधु-वरों की जानकारी देनेवाली संस्था चलाती है। माँ बोली 'लड़कीयों की तरफ से रिश्ते आ रहे हैं। एक बार इसका सब ठीक ठाक हो जाए, तो उसकी शादी करेंगे। अभी शादी में थोड़ी देर है। एक दो साल के बाद देखेंगे।' मौसी ने जबाब दिया 'अभीसे शुरू हो जाओ। सब कुछ तय होते होते यूँ साल भर गुजर जाता ही है।' मादरचोद साली। जब तक ये ऐसे रिश्तेदार मर नहीं जाते तब तक मुझे शांती नहीं मिलेगी। मुझे टेन्शन हो गया है।

राजू एक लड़की के साथ घूमता है। उसे गराज पर भी ले आता है। औरों के सामने इतराता है। उसके साथ क्या क्या किया, इसका बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करता है। औरों को जलाता है। मुझे भी उससे जलन होने लगी है।

कल अनर्थ हो गया। मैं काम से वापस घर लौटा, तो माँ गुस्से से नीली-पीली हो रही थी। घर में कदम रखते ही उसने मुझे कहा, 'तुम्हारे साथ बात करनी है।' पिताजी भी थे।

'क्या हुआ?' - मैं।

'यह क्या है?' - माँ ने मेरे सामने वह 'होमो लव्ह' मॅगेझिन फेंका। क्या बोलू, मेरे समझ में नहीं आ रहा था।

'मेरे कमरे में तुमने कदम क्यों रखा?' - मैं चिल्लाया।

पिताजी ने उठकर एक तमाचा चढाया। 'यह मॅगेझिन हमारे घरमें क्यों है?'

मेरा चेहरा गरम हो गया था। गला रूँध गया था। समझ में नहीं आ रहा था, क्या करूँ? क्या बोलू? और उसी वक्त बहुत कुछ बोल देने को भी मन कर रहा था।

'मैं क्या पूछ रही हूँ?' - माँ।

'जबान झड़ गई क्या तेरी?' - पिताजी ।

'किसीने तुम्हें बहकाया तो नहीं है? देखो, घबराओ मत, सब कुछ कह डालो। हम उसे देख लेंगे।' - माँ।

मैंने ना कहने के लिए सिर्फ गर्दन हिलाई।

'अरे, फिर क्या कारण है? ऐसा मॅगेझिन तुम्हारे पास क्यों आया? कैसे आया?' - पिताजी।

मेरी आँखे भरी हुई, गर्दन झुकी हुई। कह दिया, 'मुझे लड़के अच्छे लगते है।'

सुनकर माँ का मुँह खुला का खुला। पिताजी के चेहरे पर घिन।

घर में पूरा सन्नाटा है।

'तुम्हें देखकर ऐसा लगा तो नहीं कभी .....' - माँ बीच-बीच में खुदसे ही बड़बड़ाती है।

'यह सब तुम्हारे लाड प्यार का नतीजा है।' - पिताजी माँ पर बरसते हैं। 'लोगों को पता चला, तो मूँह पर थूकेंगे। मुँह दिखाने लायक नहीं छोड़ा इस निगोड़े ने।'

'इसकी परवरिश में क्या गलती हो गई हमारी?' - माँ।

'यह सब अस्वाभाविक है। हमारे नसीब ही गांडू- पिछले जनम का पाप इस जनम में घर आया है- अब तुम ही सँभालो इसे- मेरा कुछ संबंध नहीं। तुम्हारे लाड-प्यार के कारण बिगड़ गया है, अब तुम ही जाने और तुम्हारे किए के फल जाने।' - पिताजी।

कुछ लड़के/लड़कियाँ समलिंगी क्यों होते है, इसका कारण किसी को भी मालूम नहीं। जैसे बाकी के लड़के/लड़कियाँ भिन्नलिंगी क्यों होते है, यह भी कोई नहीं जानता। इसमें किसी का भी दोष नहीं - न माँ-बाप का, न उन बच्चों का। पालक और बच्चे दोनों निष्कारण खुद को गलत, दोषी मानते रहते हैं।

समलैंगिकता प्राकृतिक प्रवृत्ति है, अप्राकृतिक नहीं। कितने ही प्राणि, पक्षी और मछलियाँ इस दुनियाँ में है, जिन में समलैंगिकता दिखाई देती है। उदा. डॉल्फिन, शार्क, तोते, बगुले, हाथी, लंगुर आदि।

पिताजी उदास नजर से बैठे रहते है। माँ अब तक यकीन नहीं कर पाई है। मुझे एकदम हलकापन आ गया है। सिर का एक बोझ तो उतर गया। अब जो होना है, होने दो।

अब लगता है, मैंने खुद पहले ही बता दिया होता तो ठीक रहता। लेकिन अब ऐसा सोचना आसान लगता है। उस वक्त किस मुँह से बताता? जो लड़के/लड़कियाँ खुद बता देते हैं, उनके लिए मेरे मन में बहुत आदर है। Courage that was absent in me.

रमेश ने घर में बताया नहीं। घर में उसे किसीने नहीं पूछा की उसने शादी क्यों नहीं की। रमेशा कहता है की शायद घरवालों को इस बात का शक था इसलिए वे चूप रहे। यह जो पॉलिसी है 'डोंट आस्क, डोंट टेल' वाली, वो उसके घर में चल सकी लेकिन हर घर में ऐसा नहीं होता।

प्रतीक, लुकस, शर्मिला सबने खुद घरवालों को बता दिया। प्रतीक और लुकस की घर की परिस्थिति अलग है। उनके घरवाले बहुत ही उदारमतवादी हैं। उनका स्वभाव ध्यान में रखकर वो दोनों घर में बोल पाए। जादातर लोग रूढ़िवादी होते हैं। शर्मिला के घर के लोग तो कमाल के रूढ़िवादी है। लेकिन शर्मिला खुद बहुत निडर है।

हर एक लड़का/लड़की के माँ-बाप समझदार नहीं होते। हर लड़के-लड़की ने हिम्मत दिखाना जरूरी है लेकिन हर लड़का-लड़की ऐसी निडरता कहाँ से लाएँगे?

मेरे घरवालों के हाथों अगर वह मॅगेझिन नहीं आता तो?

मैं शादी के लिए तैयार होता? अगर शादी कर भी लेता तो पत्नी के साथ शारिरीक संबंध कर पाता? और नहीं रख पाता तो? उसकी जिंदगी का क्या होता? मेरी जिंदगी पर क्या असर होता? महेश को तलाक लेना पड़ा क्योंकि वह पत्नी के साथ शारिरीक संबंध कर नहीं सका। मान लो अगर यह बात भी हो सकी, तो भी सवाल बाकी रहता है, भावनिक जरूरतों का क्या होगा? उन्हें कैसे पूरा करें? और जिस व्यक्ति के साथ शारिरीक और मानसिक दृष्टि से प्रेम न हो, अपनापन न हो, उसके साथ

गृहस्थी कोई कैसे निभा सकता है। ऐसा रिश्ता सिर्फ दिखावे का बनके रहता है।

लुकस ने उसकी मम्मी के साथ बात की। तो मम्मी ने कहा, शादी के बाद सब ठीक हो जाएगा। उसने मम्मी से सवाल किया, 'क्या (उसकी बहन) मिताली की शादी किसी 'गे' लड़के से कर दोगी?'

उसकी मम्मी लुकस का यह अर्ग्युमेंट मान गई। लुकस की खुशकिस्मती है की उसकी माँ समझदार है।

मेरे कई 'गे' दोस्त हैं जिन्होनें शादी कर ली है। उनमें से किसी के बच्चे भी है। कुछ दोस्त ईमानदारी से कबूल कर देते हैं कि, उनकी पत्नी लैंगिक दृष्टि से सुखी नहीं है। क्योंकि उनके बीच के लैंगिक संबंध सिर्फ फर्ज निभाने के लिए होते हैं। उसमें अपनापन, आनंद, प्रेम, भावना आदि को स्थान नहीं होता। इनमें से कुछ पुरुष बाहर पुरुष के साथ लैंगिक संबंध बनाएँ हुए हैं।

पिताजी घर में अब गुमसुमसे रहते हैं। कुछ बात नहीं करते। माँ के साथ भी नहीं। जब देखो टीवी के सामने बैठे रहते हैं। माँ भी जरूरत से ज्यादा बोलती नहीं। एक बार उसने मुझे कहा, 'बेटा, यह बात कब महसूस होने लगी तुझे? पहले ही क्यों नहीं बताया तुने? हम पर यकीन नहीं तुझे? हम तुम्हारी परवरिश में कम पडे। माँ समझ नहीं सकती की इसमें किसी का दोष नहीं, गलती नहीं। यह भी उसे कभी भी मालूम नहीं होगा कि मैंने इस बात का सामना कैसा किया। क्या बीती थी मुझपर। क्या-क्या न झेलना पड़ा मुझे। माँ से संवाद मुश्किल हो रहा है।

आज वह मुझे एक 'बाबा' के पास ले गई। उसके शिष्य उसके साथ बैठे थे। माँ को बोलने में शर्मिंदगी हो रही थी। मुझे भी संकोच हो रहा था। मैं गर्दन झुकाकर खड़ा था। 'इसे कुछ समझाइए...शादी से इन्कार कर रहा है। लड़कियाँ अच्छी नहीं लगती। इसे लड़के पसंद है।' साहस जुटाकर माँ ने साधुबाबा को सब उगल दिया और उसके पाँव पकड लिए। मुझे भी इशारा किया। मैं उसके चरण छुना नहीं चाहता था, फिर भी छू लिए। साधु ने हर अमावस को नैवेद बनाकर छत पर कौओं के लिए

रखने को कहा। मुझे और माँ को गुरुवार का उपवास करने को भी कहा। माँ ने आशाभरे स्वर में पूछा 'कब तक फल मिलेगा?' तो उसने उत्तर दिया 'कह नहीं सकता'

माँ और मेरे गुरुवार के अनशन शुरू हो गए हैं। मैंने माँ को साफ साफ बता दिया है, कि ऐसी बातों से कोई फर्क आनेवाला नहीं है। तो वह तिलमिलाकर बोली, 'तेरे लिए नहीं, मेरा मन रखने के लिए ही सही, उपवास कर ले। कम-से-कम मैं जब तक जिंदा हूँ तबतक, बाद में छोड़ दे' कहकर रोने लगी। मुझे अपराधी लग रहा है। समझ में नहीं आता मैंने क्या किया है। अब तो लग रहा है घरसे भाग जाऊँ।

काम में मन लगाता हूँ। वही समय बिताता हूँ। सिर्फ खाना खाने और रात सोने के लिए घर आता हूँ। घर में एक प्रकार का दबावसा लगता है।

अभीतक चार जोतिषों को माँ मेरी कुंडली दिखा चुकी है। एकने निश्चयपूर्वक कहा, 'इस साल शादी हो जाएगी।' माँ ने मेरे बारे में बताया। तो ज्योतिष महाशय ने सलाह दी कि 'शादी के बाद सब ठीक हो जाएगा।' माँ फिर से लड़कियाँ ढूँढ़ने लगी है। इस बात को लेकर माँ से जमके झगडा हो गया। आखिर मैंने धमकाया, 'शादी के लिए मजबूर करोगी, तो मैं सबको बता दूँगा कि मैं कौन हूँ।'

माँ मेरी शादी दो कारणों के लिए चाहती है। मुझे हमेशा कहती रहती है, 'अभी तुम्हारा खयाल करनेवाले हम है। हमारे बाद तुम्हें कौन सँभालेगा? और दूसरा कारण है, मैं उनकी अकेली औलाद हूँ। मेरे ना भाई, ना बहन। फिर हमारा वंश कौन बढ़ाएगा। वंश चलाते रखने की जिम्मेदारी मेरे ही सरपर है।

समलिंगी जोड़ों को अगर साथ रहने की इजाजत मिल जाए, तो वे एक दूसरे की परवरिश करेंगे, सँभालेंगे, सहारा दे सकेंगें। यह बात सही है कि इसका स्वीकार करने में समाज को देर लगेगी लेकिन loving, understanding, caring, sharing, concern आदि बातें सिर्फ भिन्नलिंगी जोड़ों में ही होती है, वे ही इन्हे निभा सकते हैं, यह गलतफहमी समाज के मन से निकल जानी चाहिए। परंतु लोगों को यह बात जजती नहीं हैं। रहा वंश बढ़ाने का सवाल तो समलिंगी जोड़ों को बच्चा गोद लेने की इजाजत दे दीजिए।

माँ की तबियत ठीक नहीं है। कुछ खाती नहीं। बहुत दुबली हो गई है। तीन दिन से मैं छुट्टि पर हूँ। रसोईघर सँभाल रहा हूँ। पिताजी कुछ नहीं करते। काम से आने के बाद टीवी के सामने बैठते है। खाना भी बाहर के कमरे में ही अकेले खाते हैं। माँ को एक शब्द से भी नहीं पूछतें।

अब माँ की तबियत थोडी ठीक है। फिरभी दुबलाहट अभी भी बाकी है। पिछले तीन दिन से मैं सोया नहीं हूँ। माँ की बीमारी का कारण मैं ही हूँ। मेरे कारण ही माँ की तबियत बिगड़ गई। भगवान जाने, हम किस जनम के पाप भुगत रहे हैं।

काम पर जाने लगा हूँ। वहाँ से वापस घर आने की इच्छा नहीं होती।

.....

मालिक को मेरा काम पसंद आया है। अब और जिम्मेदारीयाँ मुझ पर सौंपी जा रही है। तनख्वाह भी बढ़ गई है।

आज अखबार में एक सायकिॲट्रिस्ट का आर्टिकल पढ़ा। मेंटल डिस्ऑर्डर पर लिखा है। उसने कहा है कि समलैंगिक होना एक डिस्ऑर्डर है। ऐसे भी कहा है कि ये लड़के ठीक हो सकते है। उस सायकिॲट्रिस्ट का फोन नंबर माँ ने डिरेक्टरी से ढूँढ़ निकाला। फोन करके अपॉईंटमेंट ले ली। मुझे जाने में शरम आ रही थी। मालूम था कि यह केवल समय और पैसे की बरबादी है। लेकिन क्या करूँ, माँ के लिए मन छटपटाता है।

मजे की बात यह है, कि बाबा, साधु, ज्योतिषी सब नाकामयाब रहने के बाद माँ को मुझे सायकिॲट्रिस्ट के पास ले जाने की सूझी।

सायकिॲट्रिस्ट ने सब कुछ सुन लिया और इसे विकृति बताया। 'शॉक थेरपी से ठीक हो जाएगा' करके तसल्ली भी दी। इसके लिए कम-से-कम डेढ़-दो साल तक इलाज करना पड़ेगा। हर १५ दिन में एक सेशन। एक सेशन की फीस दो सौ रुपये। और उपर से कहा 'पेशंट ने मन लगाकर इलाज करवाना चाहिए। अगर पेशंट मन लगाकर कोशिश नही करेगा तो ट्रिटमेंट का कोई फायदा नहीं। माँ बेचारी असहाय कह दी, 'वो करेगा। पूरी कोशिश करेगा। बस उसे ठीक कर दो। जिंदगी भर आपके एहसान भूल न पाऊँगी।' धीरे धीरे अब मुझे माँ पर भी गुस्सा आने लगा है।

डॉक्टर मुझे नंगे-अधनंगे लड़कों के चित्र दिखाता है। मेरा लिंग इससे ऐंठ जाता है। तब शॉक देता है। बहुत दुखता है। तकलीफ होती है। नौकरी जबसे लगी है, तबसे समेटा हुआ मेरा आत्मविश्वास इस ट्रिटमेंट से ढ़लने लगा है। खुद को मिटाके, एक नया पुरुष मुझमें भरना केवल नामुनकिन है। मुझे इस डॉक्टर से नफरत होने लगी है। मुझे तो शक हो रहा है कि शॉक देकर मेरी पीड़ा देखना वह एन्जॉय करता है। क्या वह सोचता होगा कि मेरी यही औकात है?

हमारे देश के कितपत डॉक्टर्स हटके रुढ़ीवादी हैं, परंपरानिष्ठ विचार रखते हैं। ऐसे अनेक डॉक्टरों ने मेरे जैसे अनेक लोगों पर 'ठीक' करने के बहाने, इस प्रकार के क्रुर इलाज बड़ी बेरहमी से किए हैं। इन उपचारों से पहले डॉक्टर बताते है कि, WHO (World Health Organization) और APA (American Psychiatrist Association) इसे डिस्ऑर्डर नहीं मानते और आगे कहते हैं, फिरभी पेशंट की इच्छा हो तो हम कोशिश जरुर करेंगे। टिपिकल दोहरा मापदंड। मूलतः यह बीमारी है ही नहीं, तो इसे दवा की क्या जरुरत?

ऐसे कई लड़के-लड़कियाँ इस ट्रिटमेंट से ऊब जाते है, और ठीक हो जाने का दिखावा करते हैं। माँ-बाप समझ बैठते हैं, हमारा बेटा-बेटी ठीक हो गये हैं और डॉक्टर मानते हैं की इलाज कामयाब हो गया। इस इलाजसे कोई बदलाव नहीं आता यह सत्य स्वीकारने की किसीमें हिम्मत नहीं है। कोई यह बात मानने को ही तैयार नहीं कि यह कोई बीमारी नहीं है, ना कि कोई विकृति। समाज बदलने को तैयार नहीं, इसलिए अपने बच्चो को बदलने की नीति सरासर गलत है। समाज का दृष्टिकोन बदलना ही निहायत जरुरी है।

मैं पुरुषों का विचार जितना दूर रखना चाहता हूँ, उतना ही वो मुझे सताता है। डॉक्टर कहता है, मैंने ठीक होने की ठान लेना जरुरी है। लेकिन कैसे? व्यक्ती को पानी की प्यास लगती है, वैसी मुझे पुरुषों की आसक्ति है। चुतियाँ आखिर किसको धोखा दे रहा है? मुझे? माँ को? या खुद अपने आपको?

.....

मुझे साथी मिलनेवाला नहीं। तो फिर भावनिक और शारिरीक सुख का क्या होगा? वे इच्छाएँ किस तरह पुरी होगी? या जिंदगी भर ऐसे ही भूखा छटपटाता रहूँगा? बेवा या अविवाहित स्त्री/पुरुष किस तरह रहते होंगे? कितनी तड़प होती होगी उन्हें! बाहर कहीं उन्होंने रिश्ता जोड़ने की कोशिश की, तो लोग बेशक उनके मूँहपर थूँकते है। लेकिन उनकी लैंगिक जरूरतोंका कौन विचार करता हैं?

कल एक फिल्म देखी। टॉम क्रुज की 'टॉप गन'। आज तक जितने पुरुष मैंने देखे, उनमें से सबसे हँडसम सबसे चिकना पुरुष है टॉम क्रुज।

कल फिर 'टॉप गन' फिल्म देखी। रात देर का शो था। बहुत उत्तेजित हो गया था। फिल्म खत्म होते मैं अनिकेत ने बताई हुई एक जगह पर गया। वहाँ एक आदमी था। मैं उसके आसपास पिछड़ा, तो वह मेरे पास आया। मुझे इशारा करके चल पड़ा। मैं उसके पीछे पीछे एक सुनसान जगह पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही उसने मुझे सीधा एक चाँटा मारा। बोला 'चल पुलिस थाने।' मैं डर गया। पसीने छूँटने लगे। किसी भी क्षण पेशाब कर देता। उसके पाँव पकड़ने लगा।

वह बोला, 'चल थाने में।'

मैं रोने लगा। वो मुझे घसीटकर ले जाने लगा।

'प्लीज ऐसा मत करो' मैं गिड़गिड़ाने लगा। तो बोला 'चल, फिर पैसे निकाल।' मैंने मेरा बटुआ निकाला। उसने सब पैसे हथियाँ लिए। उपर से माँ ने गिफ्ट दी हुई सोने की चेन भी हडप कर ली और चला गया।

क्या वो पुलिस था? या फिर एक मँजा हुआ गुंडा? दोनो में फर्क कैसे पता चलेगा? क्या वो भी समलिंगी था? आज भी इस तरह की घटनाएँ 'गे सपोर्ट ग्रुप' में बार बार सुनने को मिलती हैं। शिकायत किससे करे? क्या शिकायत करें?

पुलिस में क्या शिकायत करे? समलिंगी संभोग को कानून अपराध मानता है (आय.पी.सी. ३७७)। जब तक इस कानून में परिवर्तन नही आता तबतक हम जैसे लोगों पर होनेवाले अत्याचार हमें बिना चीं-चपड किए सहन करने होगे। इस उत्पीड़न की शिकायत किसके पास करें?

डॉक्टर के पास जाना छोड़ दिया है। मैंने पहले ही कहा था, ठीक उसी तरह उस मादरचोत की ट्रिटमेंट कुछ न कर सकी। सारा पैसा, वक्त बरबाद हुआ और उपर से मनस्ताप। माँ को दो टुक बता दिया कि अब डॉक्टर के पास नही जाऊँगा। उसने फिर से रोनाधोना शुरु कर दिया। कहा, 'सर पटककर जान दे दूँगी।' 'शौक से दे दो।' मैंने भी उलटा जवाब दे दिया। जी उकता गया है इस रोज के तमाशे से। फिल्म देखने निकल पड़ा। अब धीरे धीरे घरवालों से मेरा मन उड़ जाने लगा है। कुछ समझ ही नहीं पाते।

गराज के लड़कों के साथ अब मैं शराब पीने लगा हूँ। शुरु में थोड़ी झुझलाहट होती थी लेकिन अब आदत हो गई है। सिर्फ इतना खयाल रखता हूँ कि कहीं हदसे बाहर न पिऊँ। डर लगता है कि अगर नशे में धुत हो गया तो शायद मैं राजू के पास जाऊँगा, उसका चुंबन ले लूँगा और तब बड़ी गडबडी मचेगी। दोस्तों के साथ पीना शुरु कर देने से मेरा भाव बढ़ गया है।

अकेलापन खाया जा रहा है। किसी के साथ बात नहीं कर सकता। किसी के साथ मेरे प्रॉब्लेम शेअर नहीं कर सकता। घरवालों से कोई परेशानी नहीं-क्योंकि उनके साथ बोलचाल ही बंद है। परंतु मेरा क्या होगा? मेरी भावनिक, शारिरीक जरुरतों का क्या होगा? क्या मुझे इस तरह अकेले ही जिंदगी बितानी पड़ेगी? मन में इच्छा उभरती है, किसी के बाहो में समा जाऊँ। मन और शरीर से उसका हो जाऊँ। खुद को उसकी बाहोंमें समर्पित कर दूँ। यह बात मेरे नसीब में है या नहीं?

कल मैंने अकेले ने शराब पी। घरमें बताया था, गराज में बहुत काम है देरी से लौटूँगा। दूर के एक बार में गया। नशा सरपर चढ़ी तो पहचान की एक जगह गया। नशे के कारण संकोच दूर हो गया था। किसी के हाथ में पचास रुपसे रखे। अंधेरे में उसका चेहरा दिखाई नहीं दिया, या फिर, अब मुझे याद नहीं कह नहीं सकता। सारी रात कहाँ, कैसे बिताई, कुछ भी याद नहीं।

एक बार डरावना अनुभव आने के बाद भी मैं क्यों फिर उसी जगह गया, पता नहीं। भूख से बेकाबू आदमी कुछ भी करने को तैयार होता है। यह बात रोज खाना खानेवाले की समझ में नहीं आयेगी।

उस समय मेरे पास निरोध नहीं था। अगर होता तो भी क्या

नशे की स्थिति में उसकी याद रहती? याद भी रहती, तो क्या उसे लिंगपर चढाने की सुध होती? पूरा होश खो बैठा था मैं।

.....

आज फिरसे उस जगह गया। बाहर एक लड़का खड़ा था। मेरे पास आया।

'कितने बजे?' उसने पुछा।

'९.३०.... तुम्हारे पास तो घड़ी है.....' मैं।

वह सिर्फ हँस दिया।

'आएगा क्या?'.... मैं।

'चल, चाय पिऐंगे'- लड़का।

सामने की टपरी से हमने दो कटिंग चाय मँगवाए। उसका नाम नरेन। उसने कहा, 'मैं एक एन.जी.ओ. के लिए काम करता हूँ। यह संस्था समलिंगी लोगों के लिए काम करती है। उस संस्थाका एक 'गे सपोर्ट ग्रुप' है। (गे का मतलब समलिंगी। आज पहली बार मैंने यह शब्द सुना। उसका अर्थ मालूम हुआ।) एच.आय.व्ही और गुप्तरोग की जाँच हम 'नारी'- NARI (National AIDS Research Institute, Bhosari, Pune) से करते है। उसने उसके संस्था का हेल्पलाईन फोन नंबर दिया। नरेन भी 'गे' है। मैंने मेरा नाम 'राहूल' बताया। उसने कहाँ, 'अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें ट्रस्ट ले जाऊँगा।' मैं बैचेन हुआ। मुझे किसी संस्था या ग्रुप में जाना नहीं है।

मेरे अनेक दोस्तों ने इस बेचैनी का अनुभव किया है। 'गे सपोर्ट ग्रुप' के पास सहारे के लिए जाना आसान नहीं। मेरे खयाल से, 'आऊट होना' (अपनी समलैंगिकता का स्वीकार करना और औरों को गर्व से कह देना) जितना मुश्किल है, सपोर्ट ग्रुप के पास जाना उतना ही कठिन है।

मन में डर रहता है, किसीने देख लिया तो? अब यह भी बात है, कि समझ लीजिए, ऐसी जगह अगर कोई पहचानवाला मिल गया, तो तुरंत उसे पूछा जा सकता है कि तू यहाँ क्या कर रहा है? लेकिन समलिंगी व्यक्ति इतना निडर नहीं होता।

ऐसी संस्था में जाते किसी ने देखा तो? वहाँ जाकर कुछ अटपटा

हो गया तो? वहाँ जाना, मतलब समलिंगी होने की बात दुनिया पर जाहिर करना। किसी को अपना नाम समझ गया और उसने ब्लॅकमेल किया तो? किस को बताए? एक ना दो हजार बाते मन में आती रहती हैं।

दिल में शायद और एक एहसास रहता है कि अब यह 'डिनायल' की स्थिति खत्म हो गई है। इस स्थिति से बाहर निकलने को मन करता नहीं। क्योंकि उसके आगे 'कंफ्रंटेशन' की स्थिति खड़ी रहती है। इस डिनायल की स्थिति से निकलकर, खुद इसका स्वीकार करना पड़ेगा, तुम कौन हो यह सबको बता देना पड़ेगा।

कुछ समलिंगी लड़के-लड़कियों को ऐसी संस्थाओं से द्वेष रहता है। ऐसे होमोफोबिक परिवेश में कोई अपने लिए कुछ कर रहा है, यह भावना जलन पैदा करती है और इस कारण ये लोग ऐसी संस्थाओं की तरफ भटकते नहीं।

नरेन ने कहाँ, 'निरोध चाहिए?' मुझे चाहिए तो थे लेकिन रखूँगा कहाँ? बटुअे में निरोध का पॅकेट घरवालों ने देख लिया तो? पहले ही परेशानी की क्या कमी है, तो और मोल लेना?

निरोध पास रखने का सवाल बहुत लोगों को सताता है। प्रायव्हसी नाम की संकल्पना हमारे संस्कृति में है नहीं। कोई भी कहीं भी हमारे बटुअे, जेब, बॅग, खत बिनापूछे खोल देते हैं। इसी डर से लोग निरोध साथ रखते नहीं। (वो सेक्शुअली ऑक्टिव्ह हो, तो भी) और जब सेन मौके पे उसकी जरुरत पड़ती है, तब निरोध हाथ आने की संभावना कम होती है। ऐसी स्थिति में असुरक्षित संभोग होने की संभावना बढ़ती है।

नरेन दिखने में अच्छा है। मैंने उससे सेक्स की माँग की। उसने ना कह दिया। ट्रस्ट के नियमों के बारे में उसने कुछ कहा। नहीं करना है, तो गया भाड़ में। मुझे क्या पड़ी है? बहुत गुस्सा आ गया। इसके जैसे पचासो मिलेंगे। घर आकर उसने दिया हुआ फोन नंबर फाड़के फेंक दिया।

कुछ दिनों के बाद नरेन मुझे फिर वही स्थान पर मिला। हररोज रात ९.३० बजे वह उसी जगह चक्कर लगाता है।

'ऑफिस गया था क्या?' उसने मुझे पुछा।

'समय नहीं मिला।' मैं।

'अकेले जाने में डर लग रहा हो, या ऑफिस जाने की हिम्मत न होती हो, तो मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। या फिर ट्रस्ट के लोगों से तुम कहीं बाहर मिलना चाहते हो, तो वह भी हो सकता है। तुम घबराओ नहीं, तुम्हारा असली नाम मत बताना। ट्रस्ट आने के लिए एक पैसा भी देना नहीं पड़ेगा। कोई तुझ से बुरा सलूक करेगा, इस बात का अगर डर हो, तो बाहर खुले रेस्टॉरंट में मिलते हैं। तू किसी भी बात की चिंता मत कर।'- नरेन बोला।

'सोचना पड़ेगा, लेकिन सच कहूँ तो मुझे तुझ में इंटरेस्ट है।' मैंने साफ कह दिया। पर उसे मुझ में जरा भी इंटरेस्ट नहीं है। उसने कहा कि उसका एक बॉयफ्रेंड है और उसके साथ वह एकनिष्ठ है।

'अगर तू मेरे साथ संबंध रखेगा तो, किस को क्या पता चलेगा?' - मैं।

'मैं उससे प्यार करता हूँ और दूसरा कोई अच्छा लगे तो भी मैं उसके साथ कभी नहीं जाऊँगा। देखो, रिश्ते में विश्वास महत्त्वपूर्ण होता है' नरेन बोला।

मेरे अहंकार को ठेस पहुँची। कुछ बहाना बनाकर चलता हो गया।

अहंकार को ठेस लगना, इतना ही कारण नहीं था, मेरे गुस्से का। उसके पास एक लड़का है, उनमें बेहद प्यार है, विश्वास है। किसी और ने सेक्स के लिए पूछा तो वो साफ इन्कार कर देता है, यह सब मेरे लिए बहुत क्लेशकारक था। मुझे पहली बार महसूस हो गया कि इस तरह का परिपूर्ण समलिंगी रिश्ता भी हो सकता है। आज तक जो मिले, वो सब अंधेरे में सिर्फ शरीरसुख छीनने वाले थे। ऐसा गाढ़ा रिश्ता मेरे नसीब में नहीं यह बात मेरे मन को चुभ गई। मेरे मन में, उससे और उसके बॉयफ्रेंड से कमाल की जलन पैदा हो गई। और मैं झट से वहाँ से निकल पड़ा।

इरु जब मुझे मिला, तब हमारे बीच के रिश्ते से सब जलते थे। ईर्ष्या, दाह सबके मन में था। इसमें मेरे कई नजदिकी दोस्त भी थे। अब मैं उन्हें दोष नहीं देता लेकिन उस वक्त देता था। उन दिनो बहुत चिड़चिड़ाहट होती थी। मैं हमेशा इरु को कहा करता था। 'हम दोनों पर सबकी बुरी नजर है' उस पर इरु मुझे जबाब देता, 'जब यह तुम्हारे नसीब नहीं था, तब तुम भी ऐसे ही थे। हम जैसे लोगों में इस घुटन के कारण, ऐसी ईर्ष्या स्वाभाविक रुपसे पैदा होती है और उसे बाहर निकलना आसान नहीं होता। दम घुटनेवाली हमारी विवशता हमें डिस्ट्रक्टिव्ह बना देती है। इतनी जल्दी उससे उबरने की अपेक्षा मत कर, उससे और परेशानी होगी।

कुछ दिनों से संडास की जगह तकलीफ हो रही हैं। उस जगह एक जख्म हुआ है। बहुत दुखता है। क्या यह गुप्तरोग तो नहीं? एच.आय.व्ही. की छूत तो नहीं लगी? पूरे दिनभर बेचैन रहा। खाना नहीं खा सका। टिफिन ज्यों का त्यों भरा हुआ घर वापस ले गया।

क्या करू, समझ में नहीं आ रहा है। डॉक्टर के पास जाऊँ? फॅमिली डॉक्टर के पास जाने का तो सवाल ही नहीं, उन्हें क्या मुँह दिखाऊँगा? तो फिर किस डॉक्टर के पास जाऊँ? डॉक्टर ने कुछ उलटे सीधे सवाल किए तो? उसने गालियाँ दी तो? ना बाबा! डॉक्टर के पास जाना बेकार है। देखते है, थोड़ा समय और जाने दे, थोड़ा सहन करुँगा फिर देखूँगा क्या करना है।

नरेन से मिलकर हफ्ता गुजर गया। आज उसे मिला। चाय के साथ उससे बातचीत हुई। उससे बात करने पर मन हल्का हो जाता है। वैसे और है कौन जिससे दिल से बात कर सकूँ। आखिर मनका संकोच दूर करके उसे मैंने कहा, 'देखो नरेन मेरे एक दोस्त को प्रॉब्लेम हो गया है। संडास की जगह उसे एक जख्म हुआ है। उसने बाहर बिना निरोध का पॅसिव्ह संभोग किया था। तुम कुछ दवा जानते हो?'

नरेन बोला, 'गुप्तरोग हो सकता है। तुम्हारे दोस्त से कहो, जाँच करा लो। अगर वो चाहे तो उसे 'नारी' के क्लिनीक, जो सब्जी मंडी के पास है- मैं ले जाऊँगा।' 'ठिक है, बताता हूँ उसे। लेकिन अगर वह अकेला डायरेक्ट उधर जाना चाहेगा तो कहाँ जाए?'

नरेन ने मुझे क्लिनीक का पता, फोन नंबर और कमरा नंबर दिया।

'नरेन, प्लीज तुम्हारे ऑफिस का नंबर भी फिरसे देना। मालूम नहीं, कहीं गुम हो गया है।' मैंने कहा।

'जाँच और दवा के पैसे नहीं देने पड़ते' नरेन बोला।

'लेकिन उन्हें अगर पता चल जाए कि वह 'गे' है, तो? मैं

'घबराओ नहीं। कुछ नहीं होगा। वहाँ के लोग बहुत समझदार हैं। वो बुरा सलूक नहीं करेंगे। उन्हें जाली नाम बताना। फोन नंबर, पता वगैरह बातें वो लोग पूछते ही नहीं। अकेला जाने के लिए अगर उसे डर, संकोच लगा रहा हो, तो मुझे बता देना। मैं साथ जाऊँगा। लेकिन उसे पक्का जाने के लिए बोलना। उपरी लक्षण ठीक होने पर गुप्तरोग ठीक हो गया, ऐसा नहीं होता। समय पर ॲलोपॅथिक दवाईयाँ लेना जरुरी है- नहीं तो महँगा पड़ेगा।' नरेन बोला।

दिल इतना धड़कने लगा, पूरा हडबड़ा गया मैं।

अगर नरेन मेरे साथ चलता तो अच्छा होता। लेकिन मैं इतना मूरख, मेरी आफत मैंने एक काल्पनिक दोस्त के माथे मढ दी थी। अब मुझे अकेले ही जाना पड़ेगा। हिम्मत नहीं होती। आज सहमा हुआ-सा गाडीखाना क्लिनीक में पहुँचा। लेकिन बाहर जो गुरखा बैठा था, उसे देखकर ही लौट आया।

मेरे कुछ दोस्त एकदम निडर है। उन्हें ऐसा डर छूता तक नहीं। बड़े बिन्दास है वो। लेकिन मैं एक नंबर का डरपोक हूँ।

आज कुछ शांति लग रही है। आखिर सोचा कि इस तरह बेचैनी में मन मसोसकर रहने से बेहतर है- जो कुछ होना है- हो जाने दो। हिम्मत बटोरकर गाडीखाना के 'नारी' क्लिनीक में पहुँचा। भीड़ नहीं थी। पाँच रुपये देकर केस पेपर निकालने के लिए बताया गया। जाली नाम कहते वक्त जबान लड़खड़ाई। हाथ पाँव काँप रहे थें। डॉक्टर और काउन्सेलर्स अच्छी तरह से पेश आए। मेरे बारे में उन्होंने पूछा। बड़ी शरम लग रही थी लेकिन उन्होंने सब सँभाल लिया। कुछ भी उल्टा-सीधा पूछा नहीं, सुनाया नहीं। मैंने बता दिया कि एक पुरुष के साथ, दो हप्ते पहले मैंने पीछे से सेक्स किया था। शराब पीकर किया था, यह बात भी कह दी। डॉक्टर ने मेरा जख्म देखा और आधा घंटा रुकने के लिए कहा। जाँच के बाद डॉक्टर ने कहा, मुझे 'शँक्रॉईड' गुप्तरोग हुआ है। दवाई से वह ठीक हो जाता है। एरिथोमायसिन का

सात दिन का कोर्स दिया। साथ में गुप्तरोग, एच.आय.व्ही., विंडो पीरिएड सब समझाया। निरोध इस्तेमाल करने का सही तरिका बताया। मैंने कहा मुझे एच.आय.व्ही. की टेस्ट करनी है। उन्होंने विंडो पीरिएड के बाद आने के लिए कहा।

.....

पीछले ढ़ाई महिने मेरी हवा तंग है। अगर एच.आय.व्ही. हो गया तो? आज 'नारी' में खूनकी जाँच के लिए गया। आज उतना डर नहीं लगा, जितना पहली बार लगा था। प्री-टेस्ट काउन्सेलिंग के बाद मुझे खून की जाँच के लिए बुलाया गया। एक टोकन दिया गया, उसपर एक नंबर लिखा हुआ है। उसे लेकर एक हप्ते के बाद फिरसे जाना है।

कुछ सुझ नहीं रहा है। एड्स के जो लक्षण उन्होंने बताए थे, वो सभी मुझे मेरे शरीर पर दिखने लगे है। पसीना छूटना बढ़ गया है। वजन कम हो गया है। दस्त होने लगे है। मैंने निरोध का उपयोग करना चाहिए था। गलती मेरी है। काश, मैं निरोध साथ रखता।

निरोध का इस्तेमाल किए बगैर अगर दो पुरुषों ने गुदमैथुन किया और उसमें से एक को गुप्तरोग या एच.आय.व्ही. है, तो दूसरे को इसकी छूत लगने की संभावना होती है। इसलिए समलिंगी पुरुषों ने गुदमैथुन करते वक्त निरोध का उपयोग अनिवार्यता से करना जरुरी हैं। बदनसिबी यह है, कि बहुत से लोग इस बात को नजर अंदाज करते है। बहुत थोडे लोग निरोध का उपयोग करने की सावधानी बरतते हैं। नतीजन् इस के परिणाम भुगतने पड़ते हैं।

यह सप्ताह बीतने का नाम नहीं ले रहा हैं। समय कटता ही नहीं। खुद को काम में डूबो लेता हूँ। दिमाग को सोच विचार का मौका ही नहीं देता। इस टेन्शन के कारण रोज शराब पीता हूँ। इन लोगों ने तुरंत रिजल्ट देना चाहिए। इस तरह अंधेरे मे लटकते रहना अब सहा नहीं जाता।

हफ्ता कैसे गुजारा एक मैं ही जानता हूँ। आज सहमा सहमा-सा क्लिनिक गया-रिजल्ट लाने। दगडूशेठ गणपती के दर्शन करके गया। सीढ़ीतक पहुँचा तब लगने लगा, रिजल्ट न ले लूँ। जो होना हैं वो तो होकर ही रहेगा। उल्टे पाँव वापस निकला।

रास्ते में ढेर सारे विचारों ने घेर लिया। मालूम था, ऐसे चैन नहीं आएगा। रिजल्ट का भँवरा मन में बार-बार भुनभुनाता रहेगा। उससे अच्छा है कर लूँ एकही बार आर या पार। कम-से-कम इस तरह अंधेरे में तो न रहुँगा। और अगर मुझे छुत लग ही गई होगी, तो मेरी तरफ से और किसी को इस त्रासदी का शिकार न बनना पड़े। क्लिनीक की दिशा में फिरसे चल पड़ा। सीढ़ी चढना मुश्किल हो रहा था। पाँव में कंपकंपी। आज भीड़ भी बहुत थी। लोगों को देखते देर तक बेंच पर बैठा रहा। इनमें से कितने लोगों को छुत लगी होगी? उन्हें क्या लग रहा होगा? क्या उनकी भावनाएँ मेरी जैसी ही होगी? अनजाने में नाखून चबाते बैठा था। आजकल यह एक आदत पड़ गई है-खून निकलने तक, दर्द होनेतक नाखून चबाने की।

मुझे अंदर बुलाया गया। मैंने टोकन दिखाया। कांउन्सेलर महिलाने मुझे बताया कि मुझे छूत नहीं लगी है। मुझे एच.आय.व्ही. नहीं हुआ है। क्षण में जैसे मेरी दुनिया बदल गई। मन हल्का हो गया। वो महिला आगे क्या कह रही थी, उसपर ध्यान ही नहीं रहा। शायद मेरी स्थिति वो जान गई। दो मिनटतक वह चूप रही। मेरे होश थोड़े ठिकाने आते बोलने लगी। फिर से कंडोम की रट लगाई। मुझे चार-पाँच कँडोम दिए। नरेन को अब मिलना चाहिए। उसकी बहुत मदद हुई है मुझे।

आज शाम नरेन से मिला। बताया कि मेरे उस दोस्त ने गाड़ीखाना क्लिनीक से दवाई ली। अब सब ठीक है। उसने तुझे धन्यवाद कहने के लिए कहा है। मैं एक बार तुम्हारे साथ तुम्हारे ऑफिस में आना चाहता हूँ। और एक बात, मेरा नाम असल में रोहित है। पर ऑफिस में नहीं बताऊँगा। वहाँ तुम मुझे राहुल करके ही पुकारना।

अब मुझे नरेन पर यकीन हो गया है। वो मेरा सहारा बन गया है। उसने मेरी मदद की। मैंने माँग करने पर भी मुझसे सेक्स नहीं किया। यह बातें मेरे मन को छू गई है। अब उसके लिए मेरे मनमें सिर्फ आदर की भावना है। ईर्ष्या, जलन सब धुल गई है।

हम कितने मतलबी होते है ना?

आज नरेन के साथ ऑफिस गया। कोई पहचान लेगा, यह डर मन में था। वहाँ के एक 'बीफ्रेंडर' के साथ नरेन ने मेरी पहचान कराई। उसका नाम है राजेश। दोनों को मिलाने के बाद नरेन वहाँ से कहीं निकल गया। मैं राजेश के साथ क्या बोलूँ, समझ नहीं आ रहा था। उसकी नजर टालता रहा। वह भी 'गे' है। मैंने बताया कि मैं 'बायसेक्शुअल' हूँ।

मैं समलिंगी हूँ यह बात बता देने में शुरुमें बहुत शरम लगती थी। तब मैं बताया करता था कि मैं बायसेक्शुअल हूँ। इसमें दो बाते थी-एक तो यह दशनि का अट्टाहास कि मैं 'इतना' गया बीता नहीं हूँ और दूसरी बात यह कि समझ लो, आगे चलकर अगर शादी कर ली, तो पत्नी को धोखा देने का धब्बा नहीं लगेगा।

मैंने मेरे बारे में राजेश को कुछ नहीं बताया। उसके बारे में पूछता रहा। उसने भी अपने विचार, अनुभव दिल खोलकर बता दिए। मैं उसे खदेडता रहा, भॉपता रहा। उसके अनुभव, विचार मेरे अनुभवों के साथ ताड़ता रहा। राजेश की मैं तो सराहना करुँगा। कितना हिम्मतवर है वो। मैं इस तरह खुलकर बोलने का ढ़ाडस कभी न कर सकूँगा।

यह साहस मुझमें अगले पाँच साल में ही मिलनेवाला है, यह बात मुझे उस वक्त मालूम नहीं थी। अब मैं मुक्त मनसे सबको बता सकता हूँ कि मैं समलिंगी हूँ। कह देने के लिए किसीने मुझपर जोर जबरदस्ती की नहीं, न किसी का दबाव पड़ा। लेकिन अब मैं खुद ही क्लोजेट में रहना (अपनी लैंगिकता छिपाना) नहीं चाहता। उससे मुझे घुटन होती है। जीने के लिए जिस प्रकार साँस लेने की जरुरत होती है, ठीक उसी प्रकार अब मुझे आऊट रहने की आवश्यकता होती है।

कल रात चैन की नींद सोया। कितने साल बीत गए, ऐसी शांत नींद मैं सोया नहीं था। फोन करके राजेश की अपॉईंटमेंट ली है। शनिचर को हम मिलेंगे। मैंने प्रश्नों की एक लिस्ट बनाना शुरु किया है। उसे भी मेरे लिए काफी समय निकाल ने के लिए कहा है।

आज राजेश से मिला। दो घंटोतक बातचीत हुई। आज बहुत अच्छा लग रहा है। मन शांत हो गया है।

राजेश को मेरा असली नाम बता दिया। उसने मुझे ऑफिस की लायब्ररी की कुछ किताबें दिखाई। समय रहते मैं उन्हें पढ़ने लगा हूँ। ऑफिस में पढ़ने के लिए जाता हूँ। बहुत सारी जानकारी मिल रही है। कुछ लिख लेता हूँ, कुछ झेरॉक्स करवाता हूँ।

आज राजेश ने मुझे एक सायकिॲट्रिस्ट से मिलाया। उनसे मेरी बात हुई। वह डॉक्टर बहुत भलामानस है, उदारमतवादी है। मुझ में कुछ भी दोष नहीं, यह बात उन्होंने मुझे बताई। काश ऐसे डॉक्टर पहले ही मिल जाते तो इतनी बड़ी लंबी त्रासदी से बच जाता।

.....

आजकल बड़ी जोरों की चर्चा होरही है 'फायर' फिल्म की। नरेन और आमिषा के साथ मैंने यह फिल्म आते ही देखी थी। रुढ़िवादियों ने इतना बवंडर खड़ा कर दिया, थिएटर में तोड़फोड़ की। आखिर फिल्म थिएटर से निकाल दी गई।

कल चाचाजी आए थे। फायर की बात छेड़ी गई। उनका कॉमेंट था, 'ऐसी बीभत्स फिल्में सेन्सॉर पास कैसे करता है।' मैं इस पर बहस करना चाहता था लेकिन अब भी हिम्मत जुटा नहीं सकता। पिताजी उनसे सहमत थे। लेकिन मेरे कारण बहुत बेचैन हो गए थे। माँ ने विषय ही बदल दिया।

कभी भी, का हाँ भी, किसी भी मुद्दे पर एक न होनेवाले हिंदू, मुस्लिम, ईसाई रुढ़िवादीं इस विषय पर सहमत हो जाते है। मराठी, उर्दू अखबारों ने फायर के बारे में जो जी चाहा लिख डाला है। सबका मत एक जैसा। समलैंगिकता हमारे देश में थी ही नहीं; पाश्चात्यों की यह देन हैं; इन संबंधों से संतति नहीं पैदा होती इसलिए यह संबंध गैर है; वैसे हमारे सामने इससे भी बहुत ज्यादा महत्त्वपूर्ण प्रश्न खड़े है, इसलिए बेवक्त इस समस्या को लेकर लोगों को उकसाने की जरुरत नहीं थी, वगैरा। कुछ अंग्रेजी अखबार हैं-जिन्होंने उदारवादी रवैया अपनाया है।

ट्रस्ट में मैंने जो कुछ पढ़ा है, उससे मुझे इतना तो मालूम हो गया है कि, यह जो बवंडर खड़ा करनेवाले लोग है, उन्हें इस विषय की बिलकुल मालूमात नहीं हैं। सिर्फ इस विषय का फायदा लेकर, उसकी आड़ में प्रसिद्धि की लालच रखते है।

उस फिल्म में दो महिलाओं के बीच का सेक्स दिखाया है। फिरभी यह फिल्म लेस्बियानिझम विषय पर नहीं है। उनको पुरुषों से शरीरसुख नहीं मिलने के कारण, वो दोनों औरतें आपस में संभोग करती है। लेस्बियन स्त्रियाँ भावनिक और शारीरिक दृष्टी से एक दूसरी से प्यार करती है। उन्हे पुरुषों की जरुरतही नहीं होती। बाद में नरेन ने एक चार्ट बना के मुझे सब समझाया।

समलिंगी संबंध

१) होमोसेक्शुअल्स - मानसिक दृष्टि से समलिंगी। जिन्हे अपने ही लिंग के व्यक्ति के बारे में भावनिक और शारीरिक आकर्षण होता है।

२) बिहेक्यिरली हेटरोसेक्शुअल्स - यह समलिंगी व्यक्ति भिन्नलिंगी व्यक्ति से संबंध रखते है। खुद समलिंगी होने के बारे में किसी को बताते नहीं उदा. कुछ समलिंगी लोग घरवालों, समाज के दबाव में आकर शादी कर लेते है। इनमें से कुछ, बाहर समान लिंग के व्यक्ति से संबंध बनाते है।

३) बायसेक्शुअल्स - मानसिक दृष्टी से उभयलिंगी। जिन्हें कुछ महिलाएँ और कुछ पुरुषोंसे भावनिक तथा शारीरिक अकर्षण होता है।

४) बिहेवियरली होमोसेक्शुअल - भिन्नलिंगी व्यक्ति न मिलने के कारण अपने ही लिंग के व्यक्ति के साथ लैंगिक संबंध स्थापित करनेवाले। उदा. कुछ ट्रक ड्रायव्हर्स और क्लीनर्स की जोड़ियाँ, कुछ कैदी वगैरा। इसका मतलब यह नहीं कि ये व्यक्ति समलिंगी होते है। यह एक अस्थायी रुपका, कुछ समयके लिए किया हुआ समझौता हो सकता है।

५) एक्सपेरिमेंटल सेक्स - बालिग होते होते कुछ लड़के-लड़कियाँ अपने ही लिंग के दोस्त/सहेली के साथ सेक्स करते है। हस्तमैथुन, मुखमैथुन आदि। यह सिर्फ एक्सपेरिमेंटल स्टेज होती है। इसका मतलब यह नहीं कि वो लड़के-लड़कियाँ समलिंगी है। यह केवल ट्रान्झिशनल फेज हो सकती है।

समाज में एक गलतफहमी अक्सर देखने को मिलती है कि समलिंगी संभोग का चस्का लग सकता है। यह केवल गलत बात है। ऐसे अनेक लड़के/लड़कियाँ है (कुछ मेरे दोस्त भी है) कि जिन्होंने कॉलेज के दिनों में समलिंगी संबंध बनाए। उसका आनंद उठाया। लेकिन वे भिन्नलिंगी है और बड़े होकर उन्होने सिर्फ भिन्नलिंगी संबंध ही रखे है। उन्हें अगर समलिंगी संबंधों का चस्का होता, तो आज भी उन्होंने वो संबंध जारी रखे होते।

समलैंगिकता निश्चित रुप से पाश्चात्य देशों से आयी हुई नहीं है। मैं कौन हूँ इस का मुझे ज्ञान नहीं था, इस आकर्षण को क्या कहते है, यह बात भी मालूम न थी, तब से मैं यह भावना महसूस कर रहा हूँ। समलैंगिकता अगर अपने देश में नहीं थी, तो कामसूत्र में, मनुस्मृति में इसका उल्लेख कैसे मिलता है।?

लोग मुझे पूछते रहते हैं कि, सेक्स का प्रमुख कारण होता है, संतान की प्राप्ति। फिर समलिंगी सेक्स गलत होता है क्या? क्या सिर्फ बच्चों को जन्म देने के लिए ही हम सेक्स करते है? सेक्स होता है, आनंद लेने के लिए, बाँटने के लिए। सेक्स अपना प्रेम, अपनापन इन भावनाओं की अभिव्यक्ति का एक रास्ता है। सेक्स अगर सिर्फ औलाद के लिए ही किया गया होता, तो भिन्नलिंगी जोड़ों को मुखमैथुन, हस्तमैथुन, गुदमैथुन करने की जरुरत ही नहीं रहती। परिवार नियोजन के विभिन्न साधनों की जरुरत नहीं रहती।

जो लोग कहते हैं कि समलैंगिकता से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण समस्याएँ हमारे सामने हैं, इसपर मेरा मत है कि, कुछ लड़के-लड़कियाँ, मैं समलिंगी हूँ और इसी कारण समाज मेरा स्वीकार नहीं करेगा इस विचार से मायूस होकर खुदकुशी करते हैं। कुछ लोगों पर उनकी लैंगिकता के कारण अत्याचारों का कहर बटपा जाता है। कुछ लोगों को नौकरी से हाथ धोना पड़ता है, तो कुछ लोगों को घरसे बाहर निकाला जाता है। कईयों को रहने के लिए कोई घर नहीं मिलता। यह लोग बच्चा गोद नहीं ले सकते। क्या यह सब समस्याएँ गंभीर समस्याएँ नहीं हैं? शायद आपके लिए नहीं है- क्योंकि आपके घर का कोई सदस्य समलिंगी नहीं है, ऐसी आपकी धारणा है लेकिन मेरे जैसा जो यही जिंदगी जी रहा है- उसके लिए यह सारी समस्याएँ गंभीरही हैं।

.....

आज ट्रस्ट की ओर से एक फिल्म दिखाई गई। 'गेट रीयल' नाम था। अमरिकन फिल्म है। उसमें से कुछ डायलॉग्ज समझ में नहीं आए। फिरभी फिल्म समझने में आसान थी। बहुत ही बढ़िया फिल्म है। दो लड़कों की लव्ह स्टोरी है। मेरी तो आँखे भर आई। फिरसे देखना चाहिए। हमारे यहाँ ऐसी फिल्म क्यों नहीं बनती? मेरे जैसों को कितना सहारा होगा।

मैंने पहली बार अनुभव किया कि किताबें पढ़ने से जितना असर नहीं होता उतना इस तरह की एक फिल्म देखने से होता है। इसके बराबर विपरीत, होमोफोबिक (समलिंगी द्वेष्टे) सिनेमा और साहित्य समलैंगिक लोगों के बारेमें नफरत, अज्ञान, गलत विचार पहुँचाते हैं।

पहली बार मैंने एक नई दुनिया देखी, जो अंधकारमय नहीं थी। अभी तक यही बार-बार पढ़ने में आया था, कि समलैंगिक लोग संख्या में कम होते है और भारत में तो करीब न के बराबर है। और यहाँ, फिल्म देखने पूरे अस्सी लड़के इकट्ठा देखकर मेरा मन उभर आया। मैं अकेला नहीं जो ऐसा हूँ, यहाँ बहुत सारे मेरे जैसे है। उन्हें इकट्ठा देखकर सबको गले लगाने को मन कर रहा था।

समाज में चारों और हमारे जैसे होते हैं। यह दुनिया आसानीसे लोगोंके नजर नहीं आती। दुनिया में औसतन तीन प्रतिशत पुरुष और एक प्रतिशत औरते समलिंगी होते हैं। मतलब समझ लीजिए हमारी आबादी सौ करोड़ है, तो उसमें चार करोड़ लोग समलिंगी हैं। उभयलिंगी लोगों की गिनती इसमें नहीं है।

अब काम करने का हौसला बढ़ गया है। घर में रोज के झगडे बंद हो गए हैं। क्योंकि अब वो जो कुछ बोलते है उसे मैं इस कान से सुनता हूँ, उस कान से छोड़ देता हूँ। उनकी तरफ ध्यान ही नहीं देता। अब मेरा खाली वक्त ट्रस्ट में जाकर पढ़ने में बीतता है। वहाँ के लड़कों से बातें करता हूँ। मुझ में कुछ फर्क आएगा, इसकी आशा अब घरवालों ने छोड़ दी है और मैं आशा करता हूँ कि, अब मुझे वो मेरी जिंदगी जीने देंगे। अगर उन्होंने मुझे स्वीकार लिया तो सोने पे सुहागा। लेकिन इतनी जल्दी यह मुमकिन नहीं लगता।

मुझे कई नए दोस्त मिले हैं। उनकी पहचान ट्रस्ट में हुई। साहिल शादीशुदा है, ब्रायन मेरी ही उमर का है। शेखर पचास का, शर्मिला तीस साल की है और आमिषा जो है, वह अठावन साल की है। प्रतीक उन्नीस का, हरभजन पच्चीस साल का है। आज हम सब मिलकर खाना खाने बाहर गए थे। लड़कियाँ साथ में नहीं थी, हम लड़के ही गए थे। बहुत मजा आया। होटल में हमें सर्व्ह करनेवाला वेटर दिखने में सुंदर था। खाने से हमारा ध्यान उड़ गया-सबकी नजर उसीपर टिकी थी। हमने उसे बीस पर्सेंट टिप दे दी। यह भी तय कर चुके हैं, हम अगली बार यहीं खाना खाने आएँगे।

शेखर ने आज बताया कि उसे एच.आय.व्ही. की बाधा हो गई है। मैं बेचैन हो उठा।

शेखर के बारे में मालूम होने पर शुरु में उसके पास बैठने के लिए भी झिझक होती थी। शेखर ने एचआयव्ही/एड्स के संबंध मे मेरा सेन्सीटायझेशन किया। तब मेरे ध्यान में आ गया कि हम सिर्फ अपने बारे में ही संवेदनशील रहते है। दूसरों का विचार नहीं करते, पूरे रुप से इनसेन्सिटिव्ह होते है। इसके बाद शेखर मेरा अच्छा दोस्त हो गया।

आज पहली बार गे सपोर्ट मिटिंग में गया था। थोडा टेन्शन था। मैं थोड़ा-सा सहमा हुआ था। वही डर, कोई पहचानेगा तो नहीं? लेकिन भगवान की कृपा, ऐसा कुछ नहीं हुआ। समलिंगी लोगों को (जो आऊट है उन्हें) नौकरी में क्या दिक्कते आती है, इस विषय को लेकर चर्चा थी। राजेश ने मिटींग कंड़क्ट की। नौ लोग थे।

ऐसी सेफ स्पेसेस और मिटींग्ज को उतना रिस्पॉन्स नहीं मिलता जितना मिलना चाहिए। फिल्म देखने अस्सी लोग और यहाँ सिर्फ नौ। दरअसल ऐसी स्पेस में ही हम पहली बार कंफर्टेबल बनते है। खुले मनसे बात कर सकते हैं। भावना व्यक्त कर सकते हैं। यहाँ परेशान करनेवाला कोई नहीं होता।

विभिन्न प्रकार के अनुभव सुनने को मिले। सौरभ के बॉस को किसी और से पता चला कि वह 'गे' है। उसकी नौकरी चली गई। सुजाता ने कंपनी में खुद बता दिया कि वह 'गे' है। एक सॉफ्टवेअर कंपनी में वह प्रोग्रामर है। चुँकि उसकी कंपनी उदारवादी है, इसलिए उसकी नौकरी पर आँच नही आई। लेकिन उसके कलिग्ज उसे हमेशा झिड़कते रहते हैं, उपहास की नजर से देखते है। मजाक उड़ाते है। कहते वक्त सुजाता की आँखे भर आई थी।

एक पुरुष वेश्या है। युवराज नाम है उसका। उसने उसके अनुभव बताएँ। मुझे उससे बहुत डर लगता है। वह बहुत ही जनाना ढंग का है। साडी पहन के आया था। मेकअप भी किया था। मुझे तो वह औरत ही लगा। बाद में समझा कि वो लड़का है। मैं बेचैन हो गया। जितना हो सके उससे दूर जा बैठा।

अब ट्रस्ट में मैं व्हॉलेंटियर बन गया हूँ। राजेश की मदद करता हूँ। कुर्सियाँ जुटाना, चाय पानी की व्यवस्था, मिटींग का अजेंडा छापना - जो कुछ छोटा-बड़ा

काम मुझसे हो सके, करता हूँ। मेरा आत्मविश्वास बढ़ने लगा है। हमारे लिए जो काम चल रहा है, उसमें मैं भी हाथ बँटा सकता हूँ यह बात मनको बड़ा सुकून देती है।

मेरे समाज के लोगों की तरफ जब देखता हूँ (उनमें से कुछ मेरे दोस्त भी है) तब ब़डी मायूसी होती है। यह लोग सिर्फ 'गे राईटस्' की भाषा जानते है। पर उसके लिए कुछ काम करने की, कुछ कीमत चुकाने की इनकी तैयारी नहीं। बड़े निकम्मे होते हैं। इन्हें सब कुछ चाहिए, और वो भी मुफ्त में। राजेश हमेशा कहता है, बिना दाम चुकाए सबकुछ मिला तो अपनी पर्सनल ग्रोथ कैसे होगी?

युवराज को ट्रस्ट में लगातार मिलते रहता हूँ, तो अब उसकी आदत-सी हो गई है। मेरा डर कम हो गया है। अब मैं उससे हाय बाय तक बात भी कर सकता हूँ। साडी में उसे देखकर अब मैं हिठकता नहीं। एक उसका नौटंकीवाला बर्ताव छोड़ दे, तो बाकी वह आम लड़कों जैसा है। कल वह शर्टपँट में आया, तो मैंने पहचाना ही नहीं। उसे बताना पड़ा।

साहिल कुछ चंट है। उससे जरा बच के रहनाही ठीक होगा। हरभजन आज कहता था कि साहिल उसे एक लड़की के साथ शादी करने का आग्रह कर रहा है।

मेरी समझ में नहीं आता, साहिल क्या अधिकार धराता था, ऐसा सुझाव देने के लिए? क्या उसे सिर्फ समाज की मान्यता महत्त्वपूर्ण थी? या फॅमिली की सिक्युरिटी महत्त्वपूर्ण लग रही थी? या तुभी मेरे जैसे फँस जा ऐसी सोच थी? क्या उसे गिल्ट कॉम्प्लेक्स था? जिसकी वजह वह दूसरों को भी वही गलती करने के लिए अग्रह कर रहा था।

आज सब मिलकर फिल्म देखने गए। 'फिलाडेल्फिया'। सबको मुव्ही पसंद आई। ब्रायन एक लड़के को साथ लेकर आया था। नाम याद नहीं। मुस्लिम है। एकदम शांत स्वभाव का।

उस समय मुझे उसका नाम भी याद नहीं रहा। इरफान।

विवाह

मैंने सेल फोन खरीदा है। घरवालों की झंझट नहीं- किसका फोन आया? वो कौन है? आज नरेन का बर्थ डे था। शाम को ट्रस्ट में मिलकर केक काटा। उसे बर्थ डे बम्पस् दी। मैंने उसे एक पार्कर का पेनसेट गिफ्ट दिया।

पिछला हफ्ताभर शेखर बीमार है। काम पर नहीं जा सकता। बहुत दुबला हो गया है। नरेन के साथ मैं उसके घर गया था। दस्त से हैरान है। उसकी दवा के लिए हम सबने चंदा इकट्ठा किया। उसे दे दिया। उसके घर जाने का मन नहीं करता। मैं किसी को ऐसे बीमार देख नहीं सकता। उसे बिस्तर पर लेटा देखकर मन को पीड़ा होती है।

आज इरफान से फिर मुलाकात हुई। वह सॉफ्टवेअर इंजिनियर है। बेंगलोर से आया है। रुममेटस् के साथ रहता है। उसने मेरा सेल नंबर ब्रायन से ले लिया और मुझे कॉफी पर बुलाया। बालगंधर्व कॅन्टीन में हम मिले। देरतक बातें करते रहे। मिसल-पाव खाया। हमारी यही एक ही पसंद मिली जुली है। बाकी हम दोनों का स्वभाव (अर्थात एकही बार मिलने से यह बताया नहीं जा सकता) एक दूसरे से एकदम अलग है। उसकी सिगरेट पीने से मैं परेशान हुआ। मैंने उसे साफ बता दिया। उसने भी मान लिया और आगेसे दूर जाके स्मोक करेगा ऐसे बोला है।

आज एक मूव्ही देखने गए। 'ॲज गुड ॲज इट गेटस्।' इरफान का चॉईस। मैं बाकी दोस्तों को भी साथ ले जाना चाहता था। परंतु उसकी इच्छा नहीं थी। मूव्ही दोनों को पसंद आई। बाद में भेल, पानी-पुरी खाने का प्रोग्राम हो गया और फिर रात देरतक ओंकारेश्वर मंदिर के बाहर गप्पे हाँकने बैठे रहे।

दो घंटोंतक बातें करते रहें। लेकिन याद नहीं इतना क्या बोल रहे थें।

कल एक किताब प्रदर्शनी में गए थे। उसने कम्प्युटर की एक किताब खरीदी। शाम गुडलक कॅफे में कटी। उसने इनडायरेक्टली पूछा कि क्या मेरा कोई बॉयफ्रेंड है। मैंने ना कह दिया।

इरफान दिखने में कुछ खास नही। साँवला, लाल नाजुक होंठ। बाल उल्टे सँवारे हुए, बीच में मांग। बड़ी-बड़ी आँखे। दाँत मोती जैसे। ठुड्ढ़ी के बीच एक छोटा-सा तिल। मध्यम गठन का इरफान। बॉडी भी ऐसी खास तगड़ी नहीं, जो किसी को देखते ही आकर्षित करे।

आजकल रोज हमारी फोन पर बातें होती हैं। फोनपर इरफान बहुत बड़बड़ाता रहता है। बक बक थमती ही नहीं। हर एक दिन के बाद मिलते हैं। कभी वाडेश्वर हॉटल में, कभी बरिस्ता में। बरिस्ता बहुत महँगा रेस्टॉरंट है। बार-बार वहाँ जाना मुझसे नहीं होगा। पर उसे कैसे बताऊँ? आज आखिर उसे कह दिया कि हम थोड़ी कम महँगी जगह मिलेंगे तो ठीक रहेगा। मुझे लगा, उसे गुस्सा हो जाएगा, बुरा मानेगा। पर ऐसा हुआ नहीं। उसने मान लिया। हम अपने अपने पैसे दे देते है।

इरफान को सिगरेट पीने की बुरी लत है, उसे हर घंटे सिगरेट याद आती है। जब मैं उसके साथ होता हूँ, तो दूरीपर जाकर पीकर आता है। लेकिन उसकी बदबू मुझे सहन नहीं होती।

मैंने मेरे बारे में उसे सबकुछ बता दिया है। आहिस्ता आहिस्ता वह मेरे नजदीक आने लगा है। अपनापन बढ़ रहा है। उसके घरके लोग रुढ़ीवादी है। उसकी लैंगिकता के बारे में वे कुछ नहीं जानते। घरवालों के बारे में वो कुछ बोलता नहीं। मैं भी पूछता नहीं। जब वह चाहेगा, तब बोलेगा। उसकी सेक्सुॲलिटी के बारे में खुलकर बात करता है। शुरु में अपनी सेक्सुॲलिटी से इरफान को बहुत तकलीफ हुई थी। अब ऑलमोस्ट ओके है।

कुरान में समलैंगिकता के बारे में बुराई की गई है। बहुत से इसाई लड़कों को भी यह त्रासदी भुगतनी पड़ती है। बायबल में समलैंगिकता को गंदा बताया गया है। इरफान को, उसकी लैंगिकता और उसके धर्म का दृष्टिकोन यह विरोधाभास कष्ट पहुँचाता था। अब भी कष्ट होते हैं लेकिन बहुत कम। मैंने उसे हजार बार समझाया कि पुरुष का सहवास उसकी मानसिक तथा शारिरीक जरुरत है। इसका धर्म, भगवान से कोई संबंध नहीं। वह श्रद्धालू भी रह सकता है, भगवान पर श्रद्धा रख सकता और समलैंगिक भी हो सकता है। उपरी तौर से लगता है, इरफान यह सब समझ

गया है, मान भी गया है लेकिन बरसों से हुए संस्कार, किया गया ब्रेनवॉशिंग इतनी आसानी से मिटनेवाला नहीं।

हमारे स्वभाव भिन्न है, लेकिन एक दूसरे के लिए आकर्षण जरुर है। उसके साथ सेक्स करने की इच्छा मनमें उठती है लेकिन मैं जल्दबाजी करना नहीं चाहता। मेरी नाखून चबाने की आदत उसे बिलकूल पसंद नहीं। यह आदत छोड़ देने की कोशिश करनी पड़ेगी। लेकिन मुश्किल है।

ऐसे कुछ फालतू, बेमतलं और कभी गंभीर मुद्दों को लेकर हमारे झगड़े हुए। लेकिन मेरी किस्मत कि, कभी इतने घमासान नहीं हुए कि हमारे संबंध ही टूटे। हर बार एक हद के बाद हम दोनों एक कदम पीछे हटते थे। शायद यह चिंता दोनों के मन में थी कि अगर यह रिश्ता फट गया, तो ऐसा साथी फिरसे मिलना कठिन होगा।

कल हम सब शेखर को मिलने गए थे। अब उसकी तबियत ठीक है। बाद में बगीचे में बैठे थे। प्रतिक ॲक्टिव्ह हैं ऐसे कहता है। पॅसिव्ह लड़के उसे कम अहमियत वाले लगते हैं। उसका यह होमोफोबिया जितनी जल्दी मिट जाए उतना अच्छा है। प्रतीक को कौन्सेलिंग की जरुरत है। कब अकल आएगी उसे?

आज इरफान के साथ एक जीन्स की विज्ञापन देखने गए थे। नरेन ने रेकमेंड किया था। सिंबायोसिस कॉलेज के चढाव पर गए। उधर से बी.एम.सी.सी. कॉलेज की तरफ नीचे आते वक्त दाहिनी बाजू में यह होर्डिंग लगा है। बहुत बड़ा है। चार लड़के जीन्स पहने हुए। उपर नंगे बदन के। खुबसुरत है। देर तक हम दोनों उनकी नग्फ टकटकी लगाकर देखते रहे। बाद में मैंने उसे घरतक छोड़ा। वहाँ सबकी नजर बचाकर उसने मुझे धीरे से किस किया। मैं उससे दूर होना नहीं चाहता था। लेकिन वह झटके से घर में घुस गया।

कल मेरा प्रमोशन हुआ। शाम को मैंने इरफान को पिकअप किया और उसे लेकर चाँदनी चौक में खाना खाने गए। शराब पी। (ज्यादा नहीं, सिर्फ दो पेग) आज हठ करके उसने ही सारे पैसे दिए। फिर रात दूर दूर घूमने गए। ठंडी हवा बह रही थी। इरफान पर गाडी चलाने की सनक सँवार थी। मैं पीछे बैठ गया। उसकी कमर में हाथ डालकर उसे एकदम चिपककर बैठ गया। नाक से उसके बाल उकसाए।

कितनी खुशबू थी उसकी बालों में। उसे पूछना चाहिए कौन सा शांपू लगाता है? वापस आतेवक्त बालेवाडी के नजदिक एक खाली पठार दिखाई दिया। वहाँ रुक गए। सभी ओर अंधेरा ही अंधेरा था। दिल धक धक कर रहा था। मैंने उसे मेरी बाहों में भिच लिया और किस किया। हम दोनों के पास निरोध था। मैंने मुझे उसके हवाले कर दिया। घर पहुँचा तो रात के तीन बजे थे। आज काम पर नहीं गया। कल की रात बार-बार याद या रहीं है। अर्थात उसका परिणाम भी भुगत रहा हूँ- कहाँ कहाँ चींटियों ने काटा है।

.....

बीच-बीच में इरु का नाम माँ के सामने आने लगा है। उसे मैंने कुछ बताया नहीं है, फिर भी वो भाँप गई है। कभी तिरछी नजर से मुझे घूरती रहती है। मैं इरुको मराठी सिखा रहा हूँ। हिंदी में मैं एकदम गोबर गणेश। अंग्रेजी इतनी बुरी नहीं है, लेकिन बोलते वक्त ऐन मौके पर शब्द धोखा देते हैं। मेरी अंग्रेजी सुनकर इरु कभी कभी खी खी करके हँसता रहता है। भड़वा।

इरु ने कल कमाल कर दिया। उसके एक कलिग को बता दिया कि वह गे है। उसका नाम अर्जुन है। मैं बेचैन हुआ।

'अबे मुरख उसने तेरे मॅनेजर को बताया तो समझो तुम्हारी नौकरी गई...' मैं।

'अर्जुन बहुत समझदार है- लिबरल है।' इरु

'शादीशुदा है?' मैं

'नहीं' इरु

'अरे उसकी शादी भी नहीं हुई है। अगर उसने सोचा कि यह मुझे क्यूँ बता रहा है? क्या उसे मैं उसके जैसा लगता हूँ? तो? डर जाएगा ना वो - मैं बोला।

'वह हेटेरोसेक्शुअल होने पर भी बहुत सेक्युअर है' - इरु

'हेटेरोसेक्शुअल ओर सेक्युअर? मैं तो यह बात पहली बार सुन रहा हूँ। मुझे इरुपर गुस्सा आ गया। क्यों बताने गया? चुपचाप रहो न! खाम-खा अपनी पैरों पर खुद कुल्हाडी मारने का यह कौन-सा शौक है? ऐसी बातें खुद जाके लोगों को बताना मतलब उनको उक्साना है।

एक तो मुझे चिंता थी इरुके नौकरी की। उसके फील्ड में नौकरी

आसानी से मिल जाती है - सही है - तो भी। मेरी पढ़ाई इतनी मामुली थी की, नौकरी के बारे में मैं हमेशा इनसेक्युअर होता था। और दूसरी बात यह थी की, इरु से मुझे थोडी ईर्ष्या भी थी। मैं कोन हूँ, यह बात दूसरों को बताना (खास करके बिना किसी कारण से ही) मेरे लिए नामुमकिन था। यह साहस इरु ने कर दिखाया यही ईर्ष्या का कारण था।

कितने ही लोग मुझे पुछते रहते है कि, तुम खुद अपनी लैंगिकता क्यों जाहीर करते फिरते हो? उसपर मेरा उत्तर है कि, तुम लोग कितने डायरेक्ट इनडायरेक्ट मार्गों से अपनी भिन्नलैंगिकता जताते हो? तुम्हारी संस्कृति, शादी के रश्मोरिवाज आदि पर तुम्हे गर्व है। तो फिर हम लोग क्यों अंधेरे में सड़ते रहें? क्यों अपनी लैंगिकता हरदम छिपाते फिरे? क्या तुम लोग चाहते हो कि जिंदगीभर हमें अपनी लैंगिकता पर शर्मिंदा रहना चाहिए। आखिर हमारा प्रयास किसलिए है? इसलिए नहीं कि तुम हमारा मुखौटा स्वीकार लो, बल्कि इसलिए है कि हम जैसे है वैसे ही हमे अपना लो। हम हमारी पहचान चाहते हैं। कौन होगा जिसकी यह इच्छा नहीं होगी? हमने किसी का क्या बिगाड़ा है? और हम नहीं बतायेंगे तो दूसरा हमारे साथ संवाद कैसे करेगा? हमारी समस्यायें कैसे जानेगा?

यह बात भी सच है कि हर बार हर जगह आऊट हो ना भी एक रिस्क है। मारपीट भी हो सकती है। इसलिए शुरु में सामनेवाले व्यक्ति को देख परख कर ही आऊट होना ठीक होता है। अगर समाज में अपना स्थान बनाना है, अपने हक अधिकार हासिल करने हैं तो इस दिशा से आगे बढ़ना जरुरी है। इसका दूसरा कोई विकल्प नहीं।

इरुकी हिम्मत की मैं दाद देता हूँ। मैंने अगर गराज में ऐसा बता दिया, मानो आसमान टूट पड़ेगा। काश, मैं किसी के साथ इतने विश्वास से बात कर सकता। अगर उस व्यक्ति ने मुझे स्वीकार लिया तो कितना अच्छा लगेगा। अब तक मैं एक

भी भिन्नलिंगी व्यक्ति को आऊट नहीं हुआ हूँ। घरवाले, बाबा, ज्योतिषि को छोड़कर। इनमें से किसीने मुझे अपनाया नहीं। मुझे सिर्फ समलिंगी समाज स्वीकारे यह काफी नहीं है। मैं बाकी समाज का बेझिझक स्वीकार चाहता हूँ लेकिन मुझे किसी की रहम, दया नहीं चाहिऐ।

दिवाली में मैंने इरु को टी शर्ट दिया। उसने मुझे जीन्स की पँट दी। हमारे रिश्ते के बारे में मैंने शिर्फ शेखर, नरेन और हरभजन को बताया है और किसी को न बताने की उन्हें ताकीद दी है। प्रतीक को शक है। मुझे कुरेदता रहता है। लेकिन मैं टस से मस होनेवाला नहीं। किसी की नजर न लग जाए। जलन होती है साले को। मैंने गराज में बताया है कि मेरी एक गर्लफ्रेंड है। इरुका वर्णन किया। वे उसे मिलना चाहते है। यह बात जरा मुश्किल है।

डायरी लिखना अब बंद करने जा रहा हूँ। जब से इरु मिला है, उससे मन की सारी बातें कह देता हूँ। महिनों डायरी में कुछ लिखने की इच्छा नहीं होती। सच कहूँ तो, इन दिनों ट्रस्ट में जाना भी बंद हो गया था। लेकिन अब खुद को डिसिप्लिन लगाई है। अपना मायका इस तरह भूल जाना ठीक नहीं। व्हॉलेंटिअरींग करना ही है। तनख्वाह में से दो फीसदी रकम ट्रस्ट को देनी है। यह मेरा फर्ज बनता है।

इरु के प्रोजेक्ट का काम बढ़ गया है। रोज मिल नहीं सकता। देरसे घर लौटता है। फोन से काम चला लेना पड़ता है। मुझे बेचैनी होती है।

आज दो हफ्तों के बाद मिला। एक हफ्ता उसने सेल फोन बंद करके रखा था। उसकी महत्त्वपूर्ण डेडलाईन थी। लेकिन न जाने क्यो, मुझे उसपर बहुत गुस्सा आ गया। उसकी काम की प्रायोरेटी मैं जानता था, फिर भी उसपर नाराज हो गया। बीस मिनट देरी से आया, इस कारण मैंने उससे झगड़ा किया और गुस्से में घर चला आया।

उसने बार-बार फोन करने की कोशिश की। मैंने सेल बंद करके रखा। होने दो उसे भी तकलीफ। मैं बिल्कुल फोन नहीं करुँगा।

मेरे ऐसे बेहुदा बर्ताव का कारण था, मेरे मन में होनेवाली असुरक्षा की भावना। दो हफ्तोंतक वह मिल नहीं पाया। इतने से मुझे डर होने लगा, यह मुझ से दूर तो नहीं हो गया? कहीं हाथ से खिसक न जाए। इस भय से मैं पझेसिव्ह हो गया था।

कल रातभर सो न सका। आज सेल ऑन किया। पर उसका फोन नहीं आया। अब डरता हूँ, मेरे ऐसे बर्ताव से उसने रिश्ता तोड़ दिया तो? सब किए पर पानी फिर जाहगा। फोन बजता है तो हर बार आशा होती है- उसी का फोन होगा। सुबह तीन फोन आएँ लेकिन उसका फोन नहीं आया। आखिर दोपहर तीन बजे उसका फोन आ गया। खुशी से मानो इतना पागल हो गया कि कुछ बोल ही न सका। उसकी टीम के साथ आज वो पिकनीक पर गया है। प्रोजेक्ट पूरा होने का सेलिब्रेशन है। कंपनी ने पिकनीक स्पॉन्सर की है। मेरे नसीब में यह सब होना लिखाही नहीं है। कल वाडेश्वर रेस्टॉरंट में मिलने का वादा है।

काम से थोड़ा जल्दी घर वापस आ गया। दो दिन से दाढी नहीं की थी। आज दाढी बनायी। नए कपड़े पहने। माँ को बताया, रात को खाना बाहर खाऊँगा और चल पड़ा। इरु काली पँट और काला टी शर्ट पहन के आया था। (मेरी पसंद उसे मालूम है) सेक्सी। उसे देखते ही मन इतना मचल गया, लगा उसे बाहो में भरकर घंटोतक उसके चुंबन लेता रहूँ। असल में ऐसे करता, तो रेस्टॉरंट ही नहीं पूरे डेक्कन एरिया में हड़बड़ी मच जाती। टेबल के नीचे हाथ में हाथ लिए चुपचाप बैठे रहे। न जाने कितनी देरतक। उसने याद दिलाई, आज हमारे मिलने की दूसरी ॲनिव्हर्सरी है। ॲनिव्हर्सरी दिन मुझे कभी याद नहीं रहता। उसकी डायरी में सब बातें मौजूद! वह मेरे लिए एक बड़ी कॅडबरी लाया था।

कात्रज घाट की ओर चल निकले। गाडी पार्क करके पहाड़ी पर चल गए। मैंने देख लिया की आसपास जमीन पर कहीं चींटियाँ तो नहीं। हम दोनों बहुत बेताब थे ...

बाद में खाना खाते वक्त उसने मुझपर एक बम गिरा दिया! उसे तीन साल के लिए अमरिका जाने का चान्स मिल रहा है! उसे बधाई दे दूँ? या रो पडू? समझ में नहीं आया।

मेरी इजाजत लेकर इरु ने अर्जुन को मेरे बारे में बताया। एक तरफ थोड़ी बेचैनी थी, तो दूसरी तरफ, समाज के सामने हमारा रिश्ता बता देने के लिए इरु तैयार है, यह देखकर बड़ा अच्छा भी लग रहा था। मुझे इरु पर, हमारे रिश्ते पर बड़ा गर्व महसूस हुआ। इरु हमारे बारे में सीरियस है।

तीन दिन सवाई गंधर्व संगीत जलसे में गये थे। दिनभर गराज में काम और रातभर जलसे में जागते रहे। मुझे हिंदुस्तानी क्लासिकल म्युझिक बड़ा अच्छा लगता

है। इरु को बिल्कुल नहीं। फिर भी मेरे साथ रहने का मौका मिलता है, इस कारण इरु मेरे साथ आता है। रात ग्यारह बजे इरु मेरी गोद में सर रखकर सो जाता है। सुबह भैरवी होते होते मैं उसे जगा देता हूँ। कल रात हमारे बगल में बैठे एक आदमी को इरु का मेरी गोद में सोना शायद पसंद नही आया। बार बार तिरछी नजर से हमारी ओर घूरता था। देखने दो। भड़वा।

आज इरु ने मेरे दिमाग में एक अनोखा आयडिया भर दिया। बोला, 'तू अपना खुद का गराज क्यों नहीं शुरु करता?' मैंने तो सपने में भी ऐसी बात सोची नहीं थी लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता मुझे यह आयडिया अच्छा लगने लगा है। घर में बताया। 'तुम कुछ नहीं कर पाओगे।' पिताजी ने फटकार दिया। 'दिवालियाँ हो जाओगे। मिली हुई नौकरी सँभाल और चूप बैठ।' माँ को शुरु में आयडिया पसंद आ गया लेकिन वह बहुत शकी किस्म की है। जब उसे पता चला कि यह कल्पना इरु की है, तो उसे शक हो गया कि इस में इरु का जरुर कोई स्वार्थ है। अब उसे यह आयडिया पसंद नहीं। मैंने लाख बार समझाया, इस में इरु को कुछ नहीं मिलनेवाला। लेकिन मानेगी तब।

आज मैं और इरु दापोडी के एक अनाथाश्रम में गए थे। आधा दिन वहाँ बिताया। दोनोंने वहाँ के बच्चों को स्वीटस् दे दिए। इरु को बच्चे बहुत पसंद है। मुझे बच्चे वगैरे सब झंझट लगती है। बच्चों के साथ उसे खेलते देखकर मेरा वहाँ अच्छा टाईमपास हो रहा था। कितना मिल जुल गया था वो बच्चों में। जैसे उसी के अपने बच्चे हो। यकायक मन को बड़ी ठेंस पहुँची, उसके नसीब में उसका अपना बच्चा नहीं होगा।

उसे एक बार मैंने समझाया कि, 'ठीक है, तुम्हे बच्चे अच्छे लगते हैं लेकिन जब लोगों को तुम्हारी लैंगिकता का पता चल जाएगा, तब लोग उसे विपरीत दृष्टि से देखेंगे। गलत अर्थ निकालेंगे। हममें से बहुतेरे लोग, समलैंगिकता और पेडोफीलिया के बीच का फर्क समझते नहीं। (पेडोफीलीया का मतलब है, एक स्त्री या पुरुष को छोटे लड़के/लड़कियों के बारे में होनेवाला भावनिक और शारीरिक आकर्षण।) और एक बड़ी गलतफहमी समाज में फैली हुई होती है, कि छोटे लड़के/लड़कियों को बहकानेवाली, उनके साथ अश्लील हरकतें करनेवाले लोग याने समलिंगी लोग।

यह बात सरासर गलत है। समलैंगिकता और पेडोफिलीया का आपस में कोई संबंध नहीं। दोनों पूर्णतः अलग है। Using young girls and boys, as sex objects has nothing to do with the perpetrator's Sexual Orientation or Gender Identity.

इरु ने अमरिका जाने का इरादा छोड़ दिया। उससे मुझ से दूर रहा नहीं जाता। मैंने उसे कहने के लिए कह तो दिया कि इतना अच्छा मौका हाथ से जाने मत देना। तुम अमरिका चले जाओ। लेकिन वह मुझे छोड़कर कही न जाए ऐसी मेरी स्वार्थी इच्छा थी।

अर्जुन की शादी है। उसने हम दोनों को शादी में बुलाया है। उसका इन्व्हिटेशन कार्ड मैंने सँभाल के रखा है। मि. इरफान ॲण्ड मि. रोहित।' कितनी खुशी हो रही आज मन ही मन! अर्जुन को अच्छा-सा गिफ्ट देना है। अर्जुन ने गिफ्ट लाने को मना किया है। लेकिन मैंने फोनपर उसे समझाया कि, यह पहला मौका है हमारे लिए, जब क़िसीने हमें सिर्फ अपनाया, स्वीकार किया इतनाही नहीं बल्कि हमारे रिश्ते का आदर किया है। हमारी जिंदगी में, हमें जोडी समझकर इनव्हाईट करनेवाले तुम पहले हो। हमें जोड़ी की हैसियत से तुझे गिफ्ट देनी है, तुम इन्कार मत करो। हमारे लिए यह बहुत बड़ी बात है। अर्जुन फिर भी माना नहीं। उसने कहा, तुमसे गिफ्ट लिया, तो बाकी लोगों को टाल न सकेगा। उसकी शादी से पहले उसे और अनिता को हम खानेपर ले जानेवाले है।

कल मै, इरु, अर्जुन और अनिता आम्रपाली होटल में खाने के लिए गए थे। अनिता अर्जुन जैसी ही है- उदारवादी। उसकी लेस्बियन सहेलियाँ है। वह हमें उनसे मिलनेवाली है। उनके लाख इन्कार करने पर भी मैंने और अर्जुन ने उन्हें गिफ्ट लेने के लिए मनवाही लिया। घर आया तो, मेरे खुशी के आँसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे। डायरी में क्या लिखूँ, समझ नहीं आ रहा है, पगला-सा हो गया हूँ। मेरी भावना शब्दों में समेटी नहीं जा सकती। लगता है, पीछले जन्म कोई पुण्यकर्म जरूर किया होगा।

भिन्नलिंगी लोगों के बारे में मेरे मन में जो ईर्ष्या थी, वह उसी समय से एकदम निकल गई। मन साफ हो गया। उसके बाद मुझे कई भिन्नलिंगी लोग ऐसे मिले जिन्होंने मेरी मदद की, मुझे

सहारा दिया। उनमें से कुछ नजदिकी दोस्त, सहेलियाँ बन गए। कुछ मेरे सहकारी हैं। उनमें से कुछ डॉक्टर्स हैं, कौन्सेलर्स, सोशल वर्कर्स हैं। मुझपर उनके इतने सारे एहसान है, जिनका बदला कभी-भी चुकाया नहीं जा सकता।

मैंने दुकान शुरु करना तय किया। उसके लिए अब जगह ढूँढ़ रहा हूँ। इरु ने कहा कि, थोडी दूरही सही लेकिन अपनी जगह होनी चाहिए। किराए से लेना उसे पसंद नहीं था। मुझे यह बड़ी जिम्मेदारी लगती है। फिर भी वो कहता है सो ठीक ही है। अभी थोड़ी तकलीफ होगी, लेकिन लाँगटर्म में अपनी खुद की दुकान होना फायदे में रहेगा।

कल अर्जुन की शादी थी। हम दोनों शादी में गए। उसने उसके माँ-पिताजी से मिलवाया। 'यह है इरफान और ये है उसका बॉयफ्रेंड रोहित।' उसके माँ-पिताजी उदारमतवादी है। कमाल है। मेरे माँ-पिताजी को इनसे मिलवाना चाहिए। समाज में हमें मान्यता मिल रही है यह जानकर बहुत अच्छा लगा। गर्व महसूस हुआँ। दिनभर मैं एक सपना देखता रहा- इसी तरह मेरी और इरु की शादी हो गई तो?

एक बात मेरी समझ में कभी नहीं आई है, कि भिन्नलिंगी लोग समलिंगी जोड़ों की शादी के विरोध में क्यों होते है? (Legal Partnership) हमारे समाज के कई लड़के/लड़कियाँ विवाह संस्था का आदर करते हैं। सही बात है कि विवाह संस्था में कई कुछ त्रुटियाँ है, लेकिन इससे अच्छा दूसरा विकल्प भी सामने नहीं है। इस रिश्ते को कानून मान्यता है। कानून का आधार है। हमारे जोड़ों ने शादियाँ करने की कोशिश की, तो विवाह संस्था ढ़ह जाएगी ऐसा भय लोगों के मन में होता है। उल्टे, हमारे विवाहों से विवाह संस्था और मज़बूत हो जाएगी। कई जगह देखा जाता है कि भिन्नलिंगी जोड़ों (स्त्री और पुरुष) के रिश्ते में समानता नहीं होती। औरतों की हैसियत कम मानी जाती है। हमारे कई लड़के भी इस इनइक्वॉलिटी से प्रभावित दिखाई देते है। जो पॅसिव्ह होता है उसका दर्जा कम माना जाता है। इसका कारण यह है कि दूसरा रोल मॉडेल उन्होंने कभी देखा नहीं है। हो

सकता है, दो पुरुषों की, या दो महिलाओं की समानता पर आधारित रिश्ता, हमारे और साथ में भिन्नलिंगी समाज के लिए इक्वॉलिटी का रोल मॉडेल बन जाए। सिर्फ स्टिरीओटिपिकल रोल प्ले और सेक्स इन दो चीजों पर ही जो जोर दिया जाता है वह कम हो जाएगा। उसकी जगह रिश्ता, मानवी भावनाओं की अहमियत सामने आएगी। अर्थात रिश्ता हो या भावना, उन्हें जमाने के लिए कानूनन, सांस्कृतिक सहारे की जरुरत होती है। उसके बगैर नहीं हो सकेगा। समलिंगी रिश्तों के लिए यह सहारा ही कहाँ मौजद है? इरु मुझे अगर बहुत पहले मिल जाता, तो प्रेम और सेक्स का मुँहताज बना दर दर क्यों भटकता?

.....

इरुके बहन की शादी तय हुई है।

माँ धीरे-धीरे मुझे स्वीकारने लगी है। अखबार में कहीं कुछ इस विषय पर देखा, तो मुझे बताती है। आज उसने कहा, 'हमारा समाज ही बेकार है- हम मजबूर है, क्या कर सकते है?' मेरा दिल भर आया। इतने सारे क्लेश होने के बादभी, मुझे समझ लेना का प्रयास कर रही है। मुझे बहुत दिल से चाहती है। एक बेटे को माँ से और किस बात की अपेक्षा होती है? लगा, उसे गले लगा लूँ। लेकिन झिझक गया। शायद ऐसे करने पर उसे संकोच हो जाता।

गराज के लिए अच्छी जगह मिलने में बहुत देर लगी। आखिर मिल गई। अब चिंता है लोन की। लोन मिलने में दिक्कतें आ रही हैं। बैंक अफसर पैसे माँग रहा है। जो कुछ 'डाऊटपेमेंन्ट' करना होगा वह भार इरु उठानेवाला है।

माँ का कहना है- लोन न लूँ और तो और, इरु से कुछ भी मत लूँ। मैंने लोन नहीं लिया। माँ ने बैंक के डिपॉझिटस् और उसका एक गहना बेच दिया। डाऊनपेमेंट आखिर इरुसे ही लेना पड़ा। उसपर माँ नाराज है।

आज रजिस्ट्रेशन हो गया। इरु और माँ आज पहली बार आमने सामने आए। उनकी पहचान हो गई। पिताजी आए नहीं। रजिस्ट्रेशन के काम के बाद खाना खाने के लिए होटल में जाना था लेकिन इरु को देखकर माँ बेचैन हो गई। इरु समझ गया। कुछ बहाना बना के निकल गया। माँ पर मुझे इतना गुस्सा आया। इन दोनों के बीच

मेरा दम घुटता है। वापस आते वक्त रास्ते में माँ भुनभुनाती रही, 'पता नही तुमने उसमें क्या देखा?' शाम को इरु को खाने पर ले गया। आनाकानी कर रहा था। उसका नाराज होना स्वाभाविक था। बहुत मनाने पर मान गया। अब मेरी समझ में आ रहा है कितना अनुरक्त है वो मुझपर। कितना उलझा हुआ है मेरे साथ। मेरे लिए कम-से-कम घरवाले तो है। इधर इरु बेचारा अकेला। उसकी दुनिया में सिर्फ मैं हूँ। इतना कस के लिपट गया मुझे जैसे कोई छोटा बच्चा हो। कोई आसपास होगा, देख लेगा, किसी भी बात की पर्वा न थी उसे। आँखे भर आई थी। कुछ बोलने की स्थिति में दोंनो भी नहीं थे। आज हम दोनों बहुत बेचैन थै।

आज मैंने इरु से कहा 'हम दोनों एकाध किराए का घर लेकर साथ रहते हैं. चलो। अपने घरवालों की अपेक्षा हम दोनों ही अब एक दूसरे का सहारा है। घरवाले नहीं समझेंगे। दुसरा कोई चारा नहीं है।' उसने कहा, उसके घरवालों को पता चला तो अनर्थ हो जाएगा। मैंने पूछा, लेकिन उन्हें पता कैसे चलेगा? और चल गया तो तो चलने दो। अर्थात माँ को क्या बताऊँगा यह मेरे लिए भी बड़ा प्रश्नचिह्न है। वो अधम मचाएगी। इरुका कहना था कि उसका बाप बहुतही हरामी है। उसका सामना करना मुश्किल है।

बहन की शादी के लिए इरु बेंगलोर गया है- दो हफ्तों के लिए। उसने मुझे शादी का न्योता दिया, फिर भी उसकी इच्छा नहीं थी कि मैं जाऊँ। मुझे बुरा लगा। मुझे उसके माँ-बाप से मिलना था। मैं गया नहीं। बहन के लिए उसके हाथों ही गिफ्ट भेज दिया। उसे भी जीन्स और टी-शर्ट प्रेजेंट किया। अब दो हफ्ते गुजारने है। कैसे बीतेंगे पता नहीं।

इरु आज वापस आ गया। वैसे और पाँच दिन के बाद आनेवाला था। लेकिन शादी होते ही लौट पड़ा। आज उसका फोन आया। उसे मिलने गया। क्या बोलू, कितना बोलू- इरु बहुत डिस्टर्ब हो गया था। चेहरे पर खींचाव। आँखो के नीचे काले धब्बे। उसे बताए बगैर, उसके घरवाले अभी से उसकी शादी की बातें चलाने लगे है। उसके घर में हिटलरशाही चलती है। उसका बाप जो कहेगा वही सबको करना पड़ता है। बाप कमाल का परंपरावादी है। माँ की तो कोई इज्जत ही नहीं। दिन में पाँच बार नमाज अदा करना और घरवालों पर अमानुषता से कहर बटपाते रहना- बस उसका बाप जिंदगी भर सिर्फ यही करता आया है। इरु ने शादी से इन्कार कर दिया। तो उसे कमर के बेल्ट से तुड़वाया। पैसे का बटुवा लेकर इरु उसी वक्त घरसे

निकल गया। कपडे की बॅग भी नहीं। बहुत मायूस था। मैंने उसे बाहो में भर लिया तो जी भरके रोया। फिर गुस्सा निकल आया। बहुत गालीगलौज गिन रहा था। बोला, 'कई साल पहले मेरे बाप को हार्ट ॲटेक हुआ था। लग रहा था कि मर जाएगा लेकिन बच गया साला। मैं अब घर कभी-भी नहीं लौटूंगा। मर गए मेरे लिए वो लोग। सिर्फ एक अम्मी है- जिसके लिए जान अटक जाती है। बहुत छटपटाहट होती है।' मैंने कहा, 'सभी के बाप एक जैसे ही होते हैं।'

.....

गराज ठीक तरह से शुरु हो गया है। पहला काम मिला, इरु की गाडी की सर्व्हिसिंग का। मैंने ना कहने पर भी जबरदस्ती से इरु ने पैसे दे दिए। इरु, काम खत्म होने के बाद, शाम को कभी-कभी गराज पर आता है। ऑफिस की बातें सुनाता रहता है। उसके ऑफिस में एक चिकना लड़का आया है। इस साले की नजर हमेशा उसीपर। उसके ही गुण गराज पर आकर गाता रहता है। अब मुझे ईर्ष्या या जलन नहीं होती। उल्टे कभी प्यार से मैं उसे कहता हूँ, तुझे वह लड़का इतना अच्छा लगता है, तो क्यों न उसे दूसरी पत्नी बना लेता? बहुत बक बक करता है। बोलते बोलते काम में भी हाथ बटाँता है। कभी ऊब जाता है, तो आकर गुमसुम बैठकर सिगारेट पीता रहता है।

दो दिन हो गए, इरु का फोन नहीं आया। बाद में पता चला कि उसके रुम पर उधम मच गया था। उसका बाप और बहन यहाँ आए थें। उन्होंने एक लड़की पक्की कर दी है। उसे सिर्फ बताने आए थे। जमके झगड़ा हो गया। बापने धमकाया कि अगर उस लड़की को इरु पसंद नही करेगा तो ऑफिस में आकर तमाशा करेगा। इरु का मन उचर गया है। उसकी बहन और बाप आज चले गए। बहन हूबहू बाप का नमूना है।

मैं इरु के रुम पर गया। उधर उसके रुममेट्स भी थे। तो ज्यादा बोल न पाया। इरु को लेकर बाहर गया। बगीचे में हाथ मिलाए बैठे रहे। न जाने कितनी देर। बगीचा बंद हुआ। फिर एक चबुतरे पर बैठे। रात चढ़ गई। भूख बिल्कुल नहीं थी। देर रात किसी पुलिस ने हमें भगा दिया। उसे घर छोड़कर मैं वापस आ गया। हम एक शब्द भी बोले नहीं।

हफ्ता हो गया, इरु बीमार है। दो दिन अस्पताल में भरती था। रातभर मैं वहाँ रुकता था। सुबह, शाम उसके रुममेट्स आकर खबर लेते थे। इरुने रुममेट्स को

उसके घर इतला करने पर मना कर दिया। अब इरु ठीक है। लेकिन वीकनेस बाकी है।

ऐसे वक्त खुद के घर होने की एहमियत मालूम पड़ती है। जहाँ तुम और तुम्हारा साथी बस्। न माँ, न बाप, कोई भी नहीं। हमारे कारण उन्हें तकलीफ नहीं और उनके कारण हमें कोई आफत नहीं।

इरु का बाप हररोज बार-बार फोन करता है- लगातार गालियाँ, धमकियाँ बकता रहता है। इरु डिप्रेशन में जाने लगा है।

उसका बाप फिर से पुणे आया। उसने ऑफिस में जाकर उधम मचाया। इरु का अब बोलना ही कम हो गया है।

आज इरु का फोन आया। कुछ सीरीयस बात करना चाहता है। इधर मेरी धड़कन बढ़ गई। शाम को पर्वती पर मिले। मेरे मन में बुरे खयाल आते रहे। इरु ने शादी करने की तो सोची नहीं होगी? दिनभर दिमाग ठिकाने नहीं रहा। खाना भी नहीं खाया। वाघजाई के टीले पर पहुँचे।

इरु अमरिका जाने की सोच रहा है। इसी विषय पर वह मुझ से बात करना चाहता था। लेकिन मैं क्या बोल सकता था? बहुतही इच्छा थी कि वह न ज़ाए। लेकिन वहाँ जाकर उसे स्वतंत्रता मिलनेवाली है, तो मैं उसे कैसे मना कर सकता हूँ? यह निर्णय लेने में उसे कितनी यातना हो रही होगी। जिस परिवेष में वह बड़ा हुआ, वहाँ वह कुछ बोल नहीं पाएगा, उतनी ताकत नहीं उसमें। ऐसी स्थिति में मनुष्य बहुत दबेल रहता है। मैं उसकी स्थिति समझ सकता हूँ। फिर उसके लिए कौनसा दूसरा रास्ता बचता हैं? एक ही बात चाहता हूँ बस कि, वह अपनी जिंदगीके साथ कुछ भला बुरा न कर बैठे। बाकी उसने कोई भी रास्ता अपनाया, तो मैं सहन कर लूँगा। वह शादी कर ले अथवा अमरिका जाए। वहाँ गृहस्थी बसाए। मेरे यह सब विचार मैंने उसे सुनाए। मुझे बहुत दु:ख हो रहा था, फिर भी मैं आपेसे बाहर नहीं हुआ।

इरु के समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करें? एक तरफ मुझसे प्यार है, मुझे छोड़ना नहीं चाहता। और दूसरी तरफ बाप का प्रतिकार करना उसके बस की बात नहीं। मैंने उसे बताया, वह कोई भी मार्ग चुन लें, मेरा प्रेम कम होनेवाला नहीं। मेरी फिकर मत कर। I Love you, and will always Love you! बोलते वक्त मेरी

आवाज भर आयी। घर आकर बहुत रोया। इरु कुछ भी फैसला कर दे लेकिन एक बात अब साफ है कि, मेरी जिंदगी के सब से सुखी, खुशीभरे दिन समाप्त होने जा रहे हैं। ऐसे दिन वापस नहीं लौटते। धीरे-धीरे मुट्ठी में से सबकुछ खिसकता जा रहा है और उसे सिर्फ देखते रहने के अलवा मैं कुछ नहीं कर सकता।

कंपनी ने उसके पेपर्स फाईल किए। आजकल हम हररोज मिलते है। एक एक क्षण साथ गुजारने की कोशिश करते है। मैं बहुत डिप्रेसड् हूँ। फिर भी उसपर जाहीर नहीं होने देता। उसके घरवालों को उसके जाने की खबर तक नहीं है। फोन पर उनकी भुनभुन जारी है। वहाँ पहुँचने के बाद इरु उन्हें बतानेवाला है। ग्रीनकार्ड के बारे में भी उसने कंपनी में पूछताछ की है। आज हम शॉपिंग के लिए गए थे। दो कोट, बर्तन, कपड़ें, मसाले आदि की खरीदारी हुई। इंटरनेट पर उसने मुझे ई-मेल आयडी खोल दिया है। पिछले तीन दिन चॅटिंग कैसे करे उससे सीख रहा हूँ। टायपिंग के नाम से मेरी तो हाय तोबा!

व्हिसा मिल गया। दिन जा नहीं भाग रहे हैं।

परसों बड़े तड के इरु की फ्लाईट है। आज दिनभर ऑफिस में व्यस्त रहा। आज रात के लिए उसने होटल में रुम बुक की। पहले उसने चेक इन किया। फोनपर मुझे रुम नंबर बताया। गराज बंद करके मैं होटल पहुँचा। क्या करे कुछ सुझ नहीं रहा था। हमने चेकलिस्ट निकालकर सब सामान एक बार फिर से चेक किया। थोडी देर के बाद हम शांत हो गए। उसे भी बडा ऑकवर्ड लग रहा था। एकदम से बोला 'मुझे नहलाओ। बहुत दिनों से मेरी इच्छा थी लेकिन चान्स नही मिला।'

हमने कपड़े उतार दिए। मैंने उसे और उसने मुझे नहलाया। फिर सेक्स किया। और एक बार नहा लिया। खाना मँगवाया। मैंने उसे अपने हाथों से खिलवाया और दोनों एक दूसरे की बाहों मे लेटे रहे। पिछले दिन याद आ रहे थे। वो भी शायद यही सोच रहा था। नींद आँखो में उतर रही थी, फिर भी मैं जबरदस्ती उसे दूर कर रहा था। जितना हो सके उतना समय उसके साथ बिताना था। रात देरी से मुझे नींद लग गई। वह सो न सका।

उसकी चहल पहल ने मुझे जगा दिया। फिरसे एक बार सामान चेक किया। आतेवक्त मैं मेरा कॅमेरा साथ लाया था। हमने फोटो खींचवाएँ। खाना खाया। चेक आऊट किया। एशियाड बस लेकर मुंबई पहुँचे। चुँकि इरु एक बार तीन महिनों के

लिए अमरिका हो आया था, इसलिए उसे यात्रा की चिंता न थी। मैंने महाराष्ट्र की सीमा तक नहीं पार की थी। मुझे बहुत टेक्शन हो गया था। 'पहुँचते ही फोन करना, अपना खयाल रखना' मैं बार-बार उसे कह रहा था। उसने जबाब दिया, 'तुम और मेरी अम्मी! कोई फर्क नहीं दोनों में। दोनों ऐसे ही भुनभुनाते रहते हो।' माँ को बहुत याद कर रहा था। मैंने उसे सुझाव दिया कि दादर से घर फोन कर दो। उसने इन्कार कर दिया। कहा पार चला जाऊँगा तभी घरवालों को बताऊँगा। सहार एअरपोर्ट पहुँच गए। मैं जिंदगी में फ्हली बार एअरपोर्ट देख रहा था। बहुत गंदा था। पुणे रेल्वे स्टेशन और सहार एअरपोर्ट में कुछ फर्क नहीं।

वहाँ रात दस बजेतक, बॅग्ज के साथ, हाथों में हाथ लिए बाहर बैठे रहे। बोलना व्यर्थ लग रहा था। फिर इरु का जाने का वक्त हो गया। उसने मुझे गले लगा लिया। किस किया। दोनों अनायासही रो पड़े। एक दूसरे को छोड़ने का मन नहीं कर रहा था। थोडी देर के बाद कुछ शांत हो गए। सिंगापूर एअरलाईन्स गेट के नजदीक पहुँचे। उसने मेरे हाथ उसके हाथों में पकड़े। कसकर। फिर से मेरा गला रुँध गया। दोनों फिर एक बार रो पड़े। उसने कहा, 'आय लव्ह यू'। और झट से मुड़कर अंदर चला गया। फ्लाईट रात दो बजे की थी। उसकी फ्लाईट छूटने तक मैं बाहर बैठा रहा। मन में कोई भी विचार नहीं। खाली मन से सुन्न-सा बैठा रहा।

आज इरु का फोन आया। वह अमरिका पहुँच गया। कंपनी ने उसे वन बेडरुम का अपार्टमेंट दिया है। एक कलीग के साथ शेअर कर रहा है।

.....

कल निश्चय के साथ तय किया की घर समेटना है। परछत्ती ठिकठाक करने लगा। कितने महिने गुजर गए, उसकी तरफ देखा भी नहीं था।

मेरी जिंदगी के, इरु के साथ बिताए हुए यह तीन साल सबसे सुंदर रहे। इन तीन सालों ने मुझे इन्सान बनाया। इस समय की यादें जिंदगी भर मेरे साथ रहेगी।

क्या, इरु वापस लौटेगा? पता नहीं। कोई दूसरा इरु मेरी जिंदगी मे आएगा? पता नहीं। ऐसे दिन फिर से आएँगे? पता नहीं.... लेकिन मुझे आशा है।

आज बहुत दिन के बाद ट्रस्ट पर गया। कितना सारा काम पड़ा है।

भारतीय वाङ्मय (हिंदी)

किताब	लेखक	प्रकाशक
इंद्रधनु : समलैंगिकता के विभिन्न रंग	बिंदुमाधव खिरे	हमसफर ट्रस्ट, युएनएड्स

भारतीय वाङ्मय (अंग्रेजी)

Book	Author	Press
Less Than Gay	-	ABVA (AIDS Bhedbhav Virodhi Aandolan)
Same Sex Love in India	Ruth Vanita and Saleem Kidwai	Macmillan India Ltd
Queer - Despised Sexuality, Law and Social Change	Arvind Narain	Books For Change, Bangalore
Whistling in the dark	Dr. Raj Rao, Dibyajyoti Sarma	Sage Publications
Bombay Dost (Quarterly Magazine)	-------	Humsafar Trust, Mumbai

पाश्चात्य इंग्रजी वाङ्मय

Book	Author	Press
Loving Someone Gay	Don Clark	Celestial Arts, Millbrae, CA
Biological Exuberance (Animal Homosexuality and Natural Diversity)	Bruce Bagemihl	St. Martin's Press
Reclaiming your Life. Man's Guide to Love, Self-Acceptance and Trust	Rik Isensee	Magna Publishing Co. Ltd.
Queer Science - Use and Abuse of Research Into Homosexuality	Simon Le Vay	MIT Press
Virtually Normal	Andrew Sullivan	

आज बड़ी कृतार्थता लग रही है, कि उस दिन मैंने खुदकुशी नहीं की लेकिन उस दिन मैं इस बात के कितने करीब पहुँचा था। मेरे पास उस वक्त जीने के लिए कोई कारण ही नहीं था। किसी व्यक्ति पर उसकी लैंगिकता के कारण जान देने की नौबत आए, यह बात समाज कैसे सहन कर सकता है?

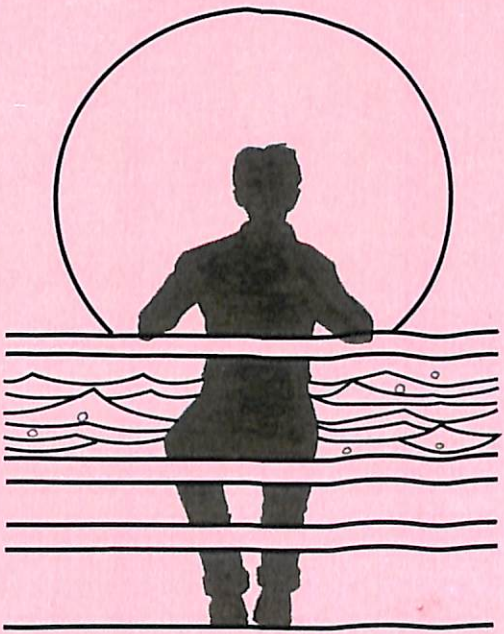

UNAIDS
JOINT UNITED NATIONS PROGRAMME ON HIV/AIDS

UNHCR UNICEF WFP UNDP UNFPA UNODC ILO UNESCO WHO WORLD BANK

THE HUMSAFAR TRUST